पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

शरीर सर्वांग-लक्षण

(अंग विज्ञान)



हस्तरेखा शास्त्र में मात्र हाथ की रेखाओं को आधार मानकर ही मनुष्य के स्वभाव , चरित्र एवं मानव के जीवन में घटने वाली घटनाओं के शुभ, अशुभ का वर्णन किया गया है। लेकिन प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखक ने बहुत ही सरल भाषा में बड़े ही रोचक ढंग से शरीर के अन्य अंगों की बनावट को आधार मानकर मनुष्य के स्वभाव और चरित्र का बहुत ही सही-सही वर्णन किया है।

अपने विषय की यह अनूठी एवं उपयोगी पुस्तक पाठकों को अवश्य ही पसन्द आएगी।

डायमंड पाकेट बुक्स में
ज्योतिष, तंत्र मंत्र यंत्र, वास्तु, फेंग-शुई की अनुपम पुस्तकें

डॉ. भोजराज द्विवेदी

अपनी जन्मपत्री स्वं पढ़ें

मेष लग्नफल	95.00
वृष लग्नफल	95.00
मिथुन लग्नफल	95.00
कर्क लग्नफल	95.00
सिंह लग्नफल	95.00
कन्या लग्नफल	95.00
तुला लग्नफल	95.00
वृश्चिक लग्नफल	95.00
धनु लग्नफल	95.00
मकर लग्नफल	95.00
कुंभ लग्नफल	95.00
मीन लग्नफल	95.00
शनि उपचार	60.00
मंगल उपचार	60.00
राहू-केतू उपचार	60.00
शावर मंत्र	60.00
रत्नों का रहस्यमय संसार (रंगीन)	200.00
फेंग सुई : चीनी वास्तुशास्त्र	150.00
पिरामिड एवं मन्दिर वास्तु	150.00
हिन्दू मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार	60.00
हिन्दू मान्यताओं का धार्मिक आधार	60.00
वास्तु जिज्ञासाएं एवं समाधान	100.00
अंकों का अद्‌भुत संसार	100.00
रेखाओं का रहस्यमय संसार (हस्त रेखाओं पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पृष्ठ 500)	150.00
भूकम्प के ज्योतिषीय विश्लेषण पर सारगर्भित अध्ययन	40.00
अनुभूत यंत्र मंत्र तंत्र और टोटके	120.00
सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	100.00
रेमेडियल वास्तु (बिना तोड़-फोड़ के वास्तु)	150.00
कमर्शियल वास्तु	120.00
पर्यावरण वास्तु	120.00
मंत्र शक्ति और साधना	50.00
तंत्र शक्ति और साधना	60.00
यंत्र शक्ति और साधना	50.00
हिप्नोटिज्म	50.00
कालसर्प योग शांति और घट विवाह	100.00
ज्योतिष और धनयोग	60.00
ज्योतिष और राजयोग	60.00
ज्योतिष और विवाह योग	60.00
ज्योतिष और संतान योग	60.00
ज्योतिष में भवन, वाहन और कीर्ति योग	50.00
ज्योतिष और आयुष्य रोग	40.00
ज्योतिष और रोग विचार	40.00
यज्ञ कुण्ड मण्डप सिद्धि	100.00
महालक्ष्मी पूजन व दीपोत्सव	30.00
पांव तले भविष्य	100.00
नाम बदलिये भाग्य बदलिये	100.00
अंत्येष्टि कर्म पद्धति	60.00
षटपंचाशिका (प्रश्न विज्ञान)	100.00
सस्वर रुद्राभिषेक प्रयोग	50.00
अपनी जन्म पत्रिका आप बनाएं	50.00
ज्योतिष प्रश्नोत्तरी	30.00
वक्री ग्रह	40.00
हिन्दू विवाह एवं यज्ञोपवीत संस्कार	100.00

कीरो

कीरो नक्षत्र विज्ञान	40.00
कीरो अंक विज्ञान	40.00
कीरो हस्त रेखाएं	50.00

आचार्य सत्यानन्द

व्यावहारिक वास्तु शास्त्र	100.00
सूर्य चिकित्सा	60.00

आचार्य विपुल राव

मनोकामना सिद्धि	60.00

उर्मिला शर्मा

ज्योतिष और पति-पत्नी का चुनाव	60.00

प्रो.एम. कुमारिया

सम्मोहन विज्ञान	60.00

नितीश के. शर्मा

मुखाकृति विज्ञान	40.00

पं. गोपाल शर्मा

सुगम वास्तु शास्त्र	75.00
लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो	60.00

शशिकांत ओक (विंग कमांडर)

नाड़ी भविष्य (चौंका देने वाला चमत्कार)	30.00

पारसमल

कमर्शियल वास्तु	60.00
वास्तु द्वारा खुशहाल जीवन के 108 सूत्र	60.00
वास्तु दोष और निवारण	99.00

कौलाचार्य जगदीश शर्मा

फेंगशुई प्रश्नोत्तरी	60.00
वैदिक वास्तु	95.00
हस्ताक्षर विज्ञान	75.00
अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़ें	60.00
पहचान आपकी.	95.00

आर. प्रसाद

वास्तु सुधार	120.00
वास्तु ऊर्जा का विकास	120.00

कुलदीप सलूजा (वास्तु फेंग शुई)

भवन निर्माण	60.00
आंतरिक साज-सज्जा	60.00
प्लाट	60.00
फ्लैट और ऑफिस	60.00
विवाह और कैरियर	60.00
उद्योग और व्यापार	60.00
उत्तम स्वास्थ्य	60.00
सुख-समृद्धि एवं प्रसिद्धि	60.00

पुस्तकें V.P.P. से मंगवाएं, तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/-

डायमंड पाकेट बुक्स
X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020, फोन : 011-51611861-65, फैक्स : 011-51611866
E-mail : sales@diamondpublication.com Website : www.diamondpocketbooks.com

शरीर सर्वांग-लक्षण

पं० राधाकृष्ण श्रीमाली

डायमंड बुक्स

ISBN : 81-7182-400-5

प्रकाशक	:	**डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.** X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II नई दिल्ली-110020
फोन	:	011-41611861
फैक्स	:	011-41611866
ई-मेल	:	sales@diamondpublication.com
वेबसाइट	:	www.dpb.in
संस्करण	:	2006
मूल्य	:	60 रुपए
मुद्रक	:	आदर्श प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली - 32

Sharir Sarvang Lakshan **Rs. 60/-**
By: Radha Krishan Shrimali

लेखकीय

मैं सहर्ष शरीर सर्वांग-लक्षण पुस्तक आपके हाथों में सौंप रहा हूं और इस विश्वास के साथ कि यह आपको पसंद आयेगी। इसमें भिन्न-भिन्न अंगों पर तिल, मस्से, अंग-प्रत्यंग पर अन्यान्य निशान, स्वर विज्ञान, प्रकृति तत्त्व एवं क्षेत्र, मानसिक शक्तियां, बनावट, चरित्र-चित्रण, रेखाएं, भौंरी आदि का वृहद् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

विषय वस्तु को समझने, जानने-पहचानने में असुविधा होने पर मुझे लिखें। सहर्ष, नैतिक दायित्व समझते हुए प्रतिउत्तर दूंगा, विश्वास रखें।

प्राचीन शास्त्रज्ञों ने मात्र हाथ की रेखाओं के आधार पर ही मनुष्य के चरित्र, स्वभाव या मानव-जीवन में घटने वाली घटनाओं के शुभाशुभ का सही-सही ज्ञान किया था, पर आज अन्य शारीरिक लक्षणों को देखा जाना भी समीचीन है। इसीलिए विद्वानों के हस्त-परीक्षण, रेखा-दर्शन के साथ-साथ अंग लक्षण का भी अंग बन गया है।

श्री सदन
19/20 ए, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान)

— पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

अनुक्रम

शरीर सर्वांग-लक्षण

लम्बा कद

वह जातक जिसका कद सामान्य से लम्बा होता है वह व्यक्ति थोड़ा अविवेकी तथा वाणी में मिठास का अभाव अर्थात् अवास्तविक तथा लावण्य न होने पर भी उसे वह स्वयं न समझने वाला, अहंवादी, हठीला तथा किसी की सलाह न मानकर अपनी ही इच्छानुसार व्यवहार करने, जीवन यापन करने वाला होता है, लौकिक मर्यादा का उसे खयाल नहीं रहता है। धार्मिक कर्मों का भंजक या धार्मिक क्रियाओं में विश्वास नहीं रखता, थोड़ा लापरवाह, अपने शरीर-सौष्ठव पर विशेष ध्यान देने वाला, शीलवान तथा ईर्ष्यालु तो नहीं पर स्वार्थी व खुदगर्ज होता है। देश-काल-परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल कर अपना उद्देश्य पूरा कर लेता है। वह चुनौती के लिए सदैव तत्पर रहता है तथा हेंकड़ी मारने वाला, अतिशय भोग प्रिय होता है।

ठिगना कद

जिस जातक का कद सामान्य से ठिगना होगा, उसे उदारमना नहीं कहा जा सकता है। या कि उसके जीवन में उदारता में कमी रहती है। स्वार्थ का भाव उसमें कूट-कूटकर भरा रहता है। स्वार्थपूर्ति के लिए ऐसा जातक निम्न-से-निम्न कार्य करने से भी नहीं चूकता और स्वार्थ पूरा हो जाने पर प्रतिपक्षी को दूध की मक्खी के समान निकाल फेंकता है। स्वार्थपूर्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है तथा भारी परिश्रम करने से भी नहीं चूकता है। अपने लाभ के लिए बात को छिपाकर रखने वाला, गुप्त कार्य में लगा रहता है तथा हृदयगत बातों को छिपाकर रखता है। भूलकर भी अपना भेद किसी को नहीं देता है। मन में कुटिलता व वाणी से सज्जनता प्रकट होती है। शील-सम्पन्न नहीं, पर शीलवान होने जैसा प्रकट करता है। शान्त नहीं, पर प्रकट ऐसा करेगा मानों उसके जैसा शील-सम्पन्न और शान्त और कोई नहीं है। हां, मन से वह सदैव चिन्तित रहता है पर वह घोर परिश्रमी होता है।

सामान्य कद

सामान्य से अर्थ-न अधिक लम्बा और न ही अधिक ठिगना जिसका कद हो, ऐसा व्यक्ति औसत से कम आयु का भोग करता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व

बहुत अधिक पक्ष-विपक्ष के बारे में आगा-पीछा सोचता है। हर कार्य को करने में आवश्यकता से अधिक सतर्क रहता है एवं धर्म-अधर्म, जय-पराजय, यश-अपयश के बारे में विचार करता है। फूँक-फूँक कर कदम रखता है। सामाजिक एवं लौकिक व्यवहार को जीवन में पूर्णतः उतारता है। क्रोध पर नियन्त्रण करने वाला, शान्ति का समर्थक, मानापमान का ध्यान रखने वाला, स्वाभिमानी, अपना मान उसे प्रिय होता है। परिश्रम से वह पीछे नहीं हटता। उसका प्रत्येक के साथ व्यवहार सज्जनता से पूर्ण तथा अपने स्वार्थ में भी न्यूनता नहीं आने देता। विवेक व सामाजिकता का भूलकर भी दामन नहीं छोड़ता।

पतली देह

ऐसा व्यक्ति, जो दुबला-पतला हो, मोटा न हो, वह सदा सन्तोषी जीव होता है। जो पाया, जो मिला, जैसा है उसी में सन्तोष कर लेता है और अधिक के लिए वह भूलकर भी उठा-पटक नहीं करता, और यदि ऐसा करता है तो वह कष्ट पाता है। मानसिक रूप से भी तभी चिन्तित रहता है। जीवन में इनके ऐश्वर्य और भौतिक सुख-सुविधाओं का भी अभाव रहता है। हां, इन्हें अपना स्वाभिमान अवश्य प्रिय रहता है। ये स्वाभिमान के लिए ही मरते और जीते हैं। स्वभाव में कुछ क्रोध का प्राबल्य रहता है अर्थात् आवेशी होता है। कभी-कभी मानापमान का भाव प्रधान हो जाने पर पीड़ित हो जाता है। समस्या आने पर अथवा विवश हो जाने की अवस्था में या तृष्णा बढ़ जाने पर कपटपूर्ण आचरण करने पर जातक मजबूर हो जाता है। सब मिलाकर अपने जीवन में वह सज्जनता व सद्गुणों का साथ नहीं छोड़ता।

स्थूल काय

वह जातक, जो स्थूलकाय अर्थात् मोटापा लिये हुए हो, वह अपने जीवन में अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। अपनी स्वार्थपूर्ति में वह न्यूनता नहीं आने देता। वह भौतिक जीवन के प्रति भी लापरवाह रहता है और इसी लापरवाही के कारण कई बार बनते कार्य भी बिगड़ जाते हैं। हठवादिता वह नहीं छोड़ता है या कि हठधर्मी से कार्य करने वाला, भोजन प्रिय, अधिक खाने वाला, उसी अनुपात में आरामतलबी या आराम अधिक चाहता है। वह हास्य प्रिय, खूब हंसता-हंसाता है। बात-बात पर चुटकी लेना या मजाक करना उसकी आदत होती है। वक्त आ जाये तो क्रोध से भी अपना काम निकाल लेता हैं। लोभ, भय, वृत्ति एवं अपना ही लाभ उसे प्रिय रहता है। मानापमान का भी विशेष तो नहीं, पर थोड़ा-बहुत ध्यान रखता है। यथार्थवादिता का भी कुछ ध्यान रखता है। लौकिक जीवन और भौतिक वस्तुओं का संग्रह करने में अधिक ध्यान देता है। हां, अहंभाव की इनमें प्रधानता रहती है।

काला रंग (देह)

जो व्यक्ति काले रंग का होगा या कि जिसके शरीर का रंग काला है, वह धनोपार्जन एवं धन-प्राप्ति के लिए खूब प्रयत्नशील रहता है। स्वभावतः वह क्रोधी विशेष रूप से होगा। आवेश व क्रोध के माध्यम से ही वह अपना काम निकालता है। षड्यन्त्रकारी एवं सामने वाले को दाव-पेंचों में फंसाकर ही अपना काम निकालता है। ईर्ष्यालु होने के कारण दूसरों की उन्नति को देखकर कुढ़ता रहता है तथा अपने स्वार्थ को प्रधानता देता है। वाणी व भाषा पर भूलकर भी नियन्त्रण नहीं रख सकता तथा बोलचाल में भी कड़वाहट पायी जाती है। अपने जीवन को नीरस मानता है तथा संसार असार लगता है। कई बार अपने जीवन में वह अपमानित भी होता है। भोगप्रिय, सेक्सी व उन्माद से ग्रसित होता है। परिश्रम पूर्वक, सश्रम, भारी कठिनाइयों से जूझकर उन्नति की राह पर चलता है। मित्र-मण्डली में वह स्वयं को न्यून या हेय समझता है। लोक-परलोक की उसे परवाह नहीं होती। धर्म-कर्म को वह नहीं मानता। हठवादिता का त्याग नहीं कर सकता तथा साहसी होता है।

गोरा रंग

जो व्यक्ति गौरवर्ण का होगा वह जीवन की आवश्यकता की चीजों को सुगमता व सरलता से प्राप्त कर लेता है। कठिनाइयां जीवन में आती हैं परन्तु सरलता से उन्हें पार कर लेता है। मित्र वर्ग कदम-कदम पर उन्हें सहयोग देते हैं। सुख-भोग की प्राप्ति में भी मित्रगण सहायक होते हैं। सुन्दर एवं कलात्मक वस्तुओं के प्रति उनकी रुचि बढ़ी-चढ़ी रहती है। हृदय का साफ-सुथरा एवं स्वच्छ, स्वाभिमानी तथा सामान्य से कहीं अधिक वह जीवन में भोग्य पदार्थ प्राप्त करने में समर्थ होता है। स्नेह व आदर उन्हें खूब मिलता है एवं वह भी अपनों को खूब आदर-मान व प्यार देता है। नवीनता का चहेता वह जीवन में कुछ नया करने को उत्सुक रहता है।

गेहुंआ रंग

न अधिक काला, न अधिक गोरा अर्थात् जिस मनुष्य का वर्ण गेहुंआ होता है वह सुन्दर, श्रेष्ठ, विशिष्ठ-जन-हितैषी, शुभ कर्म करने वाला होता है। जाति, कुटुम्ब, धर्म, समाज, नगर में लौकिक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है तथा जीवन में ऐसा जातक मानापमान का विशेष ध्यान रखता है। वह धार्मिक एवं ईश्वर चिन्तन-मनन में विशेष रुचि रखता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व आगा-पीछा, यश-अपयश, जीत-हार, हानि-लाभ, सुख-दुःख के बारे में खूब सोच-विचार कर कदम आगे बढ़ाता है। हां, शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक कार्यों में बाजी मार लेता है। अधिक परिश्रम वह नहीं कर सकता। मृदुभाषी तथा चतुराई पूर्ण व्यवहार से

अपना काम निकाल लेता है। मित्र समुदाय सदैव उन्हें घेरे रहता है। भोग के प्रति विरक्ति का भाव जल्दी आ जाता है। मन से सन्तोषी व साधनसम्पन्न होता है।

गोल भरा हुआ चेहरा

जिस मनुष्य का चेहरा गोल हो एवं भरा हुआ अर्थात् मांसलता युक्त हो, गाल फूले-फूले-से हों, ऐसा व्यक्ति जीवन का हर भौतिक सुख पाने में समर्थ होता है तथा श्रेष्ठ पौष्टिक व मिष्टान्न भोजन प्राप्त करता है। वह अपने जीवन में कम परिश्रम करके भी अच्छी सफलता को प्राप्त करता है। वह सदैव हंसमुख एवं प्रसन्न चित्त रहता है। किसी भी समस्या पर विशेष चिन्ता नहीं करता अर्थात् चिन्ता भार से मुक्त रहता है। हां, ऐसा जातक अपने कार्य के प्रति लापरवाह अवश्य होता है और इसी लापरवाही के कारण कई बार बनता कार्य भी बिगड़ जाता है। स्वाभिमान इन्हें प्रिय रहता है। मित्रों का भरपूर सहयोग इन्हें प्राप्त होता है। बात-बात पर हंसी-मजाक करता है पर मर्यादित रहकर। फूहड़ व भद्दा मजाक इन्हें प्रिय नहीं होता, समाज में इनकी प्रतिष्ठा बनी रहती है तथा लौकिक जीवन में सफल रहता है।

पतला चेहरा

जिस जातक का चेहरा पतला हो, जबड़े की हड्डियां निकली हुई हों वह भौतिक जीवन में कम ही सुखी पाये गये हैं। उन्हें अपने परिश्रम का उचित प्रतिफल नहीं मिलता, घर-परिवार व मित्रों से उन्हें सहयोग प्राप्त नहीं होता अपितु, वह आलोचना का पात्र होता है। वास्तविक मित्रों के अभाव में खोया-खोया-सा रहता है। वह प्रायः चिन्तित रहता है। क्रोध व आवेश उसे बना रहता है। आत्मग्लानि का वह सदैव अनुभव करता है। बात को छिपाकर रखने में विश्वास रखता है अर्थात् गोपनीयता का गुण उसमें मुख्य रूप से होता है। काम के प्रति जल्दबाज, धन-धान्य से अधिक सम्पन्न नहीं होता है।

माथा चौड़ा—पतला मुंह

जिस मनुष्य का माथा चौड़ा और मुंह पतला हो, तो वह व्यक्ति अपनी अक्लमन्दी से बहुत सारे काम निकाल लेता है। उसकी बुद्धि-पक्ष प्रबल होती है। किसी पक्ष विशेष में भाग्य उसका विशेष साथ देता है। सब मिलाकर वह महाभाग्यशाली होता है। हां, इनका पारिवारिक जीवन कण्टकाकीर्ण, दुःखमय, कलहपूर्ण, विपत्तिमूलक होता है। मित्र, परिवार व कुटुम्ब के लोग इनकी भावनाओं को नहीं समझते, अतः जीवन में खोया-खोया सा रहता है। हां, समाज में एवं लोगों में इसे मान-सम्मान प्राप्त होता है। इसी के रहते वह दुःखों की परवाह भी नहीं करता। दूरदर्शी एवं अपने कर्म के प्रति वह चतुर एवं होशियार होता है।

सिर छोटा व मोटे भरे हुए गाल

जिस मनुष्य का सिर छोटा हो तथा गाल फूले-फूले-से हों तो वह मनुष्य अपने जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं प्राप्त कर लेता है। दृढ़ता के साथ भौतिक सुख-सुविधाएं जुटाने में समर्थ होता है तथा नई-से-नई डिजाइन के वस्त्र बनवाना व पहनना तथा पौष्टिक भोजन व पकवान खाना-खिलाना उसे प्रिय लगता है। वास्तविक ज्ञान व बुद्धि का अभाव होते हुए भी ज्ञान का प्रर्दशन करता है। हां, लौकिक सुख-सुविधाएं व धन उसे अवश्य प्राप्त होता है। चिन्ता भार से मुक्त, बेफिक्री का जीवन व्यतीत करता है। बोलचाल एवं बातचीत में हीनता एवं हिचकिचाहट का भाव प्रदर्शित होता है। स्वयं को वह कभी-कभी हेय दृष्टि से देखने लगता है एवं स्वयं में भी हीनता अनुभव करता है। पारलौकिक जीवन, धर्म में आस्था, स्वर्ग-नरक की उसे परवाह नहीं होती है।

मोटा सिर, छितरे कम घने बाल

जिस मनुष्य का सिर मोटा हो, बाल छितराए हुए हों व मुलायम हों तो वह जातक भाग्यशाली माना जाना चाहिए। प्रभावशाली व प्रतापी तथा अपने संग-संपर्क में आए लोगों पर विशेष प्रभाव रखता है। अपना उद्देश्य भी बड़ी चतुराई से पूरा कर लेता है तथा चतुराई से ही अपना काम निकालने की सामर्थ्य रखता है। दूरन्देशी होने के कारण भविष्य के प्रति सदैव जागरूक रहता है। सदैव-सर्वत्र मान-सम्मान व अपनापन मिलता है। धन-धान्य सम्पन्न और कोई भी कार्य करके उससे लाभ उठाने की सामर्थ्य रखता है। इज्जतदार तथा बार-बार सम्मानित होता है।

खल्वाट सिर

जिस मनुष्य के आगे से लेकर ठेठ पीछे तक बाल उड़ गए हों तथा ऊपर से सिर चौड़ा हो तो वह जातक अपने जीवन में धन की प्रचुरता रखता है। वह धान्य सम्पन्न और धन स्थायित्व-स्वरूप पाता है। समाज में यत्र-तत्र-सर्वत्र मान-सम्मान प्राप्त करता है। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए जातक सदैव जागरूक व उत्सुक रहता है। बहुत दूर-दूर तक की बात सोचने व सोच-समझकर कार्य करने वाला, दूरदर्शी तथा सभी भौतिक सुख-सुविधाएं व आनन्द, सुखादि प्राप्त करता है। धन-संग्रह की ही उसे सदैव चिन्ता लगी रहती है और तत्संबंधी वह निरन्तर प्रयास भी करता है और सफल भी होता है। हां, यदि चोटी के पास या चोटी के पीछे की ओर बाल उड़े हुए हों और आगे थोड़े बाल हों तो श्रम पूर्वक कार्य कर, खूब मेहनत कर धनोपार्जन करता है। हां, खर्च के रूप में उन्हें कंजूस माना जा सकता है। खर्च में किफायत करता है। धर्म की अपेक्षा धन को जीवन में प्रधानता देता है। खूब सोच-विचार कर, काट-छांटकर, नाप-जोखकर अपना काम निकालता

है तथा पतला सिर हो तो धन की न्यूनता का अभाव सदैव अनुभव करता है। परन्तु वह स्वतन्त्रताप्रेमी होता है तथा सतर्क व सयाना होता है।

अल्पायु में सफेद बाल

छोटी उम्र में ही यदि व्यक्ति के बाल सफेद हो जायें तो समझ लेना चाहिए कि वह व्यक्ति अपनी वाणी से, अपने भावों से, विचारों से, बुद्धि से दृढ़ता पूर्वक यथाशक्ति सप्रयास प्रभाव डालता है और ऐसा कर सकने में सफल भी होता है। गोपनीयता का गुण उसमें विशेष रूप से पाया जाता है एवं गूढ़ युक्तियों से, तर्क द्वारा अपनी बात को वह स्पष्ट करता है। हां, बाल्यावस्था में ही वह जिम्मेदारी उठाने में सक्षम होता है तथा जल्दी ही गृहस्थी का भार उसके कंधों पर आ जाता है और सफलता पूर्वक वह उसका निर्वाह भी करता है। वह स्वयं का बड़प्पन प्रदर्शित करता है। बातें भी वह बड़प्पन की, वयोवृद्ध के समान, समझदारी भरी करता है। उनके भौतिक सम्बन्ध भी अपने से बड़ी आयु के लोगों से होते हैं। हृदय में अहं भाव, अहंकार का भाव, बड़प्पन का भाव घर कर जाता है। अपने कार्य में, अपना उद्देश्य पूरा करने में वह सदैव सचेष्ट व सावधान रहता है। दूसरों के अभाव, त्रुटियों, गलतियों व कमजोरियों को ढूंढ़ने का सतत प्रयास करता रहता है। आवश्यकता से कहीं अधिक सावधान व चौकन्ना रहता है। उसे युगानुकूल चलता-पुर्जा माना जा सकता है। ऐसा व्यक्ति सम्मान यत्र-तत्र-सर्वत्र प्राप्त करता है।

सिर के बार मुलायम व कड़े

जिस मनुष्य के या जातक के सिर के बाल मुलायम व पतले काले रंग के हों तो वह व्यक्ति निश्चय ही भाग्यशाली एवं कम परिश्रम से ही अधिक लाभ उठाने में समर्थ होता है। अपना जीवन संपूर्ण शान-शौकत से समृद्धिशाली व्यक्ति के समान व्यतीत करता है। मन-मस्तिष्क में शान्ति, धैर्य व मिजाज में ठण्डापन, स्वभाव से मृदु व कोमल, ज्ञानवान तथा मिष्टभाषी एवं सम्मानित, लोकप्रिय तथा सुखी-सम्पन्न, विपत्ति रहित, कष्टों से दूर जीवन-यापन करता है। हां, यदि बाल मोटे व कड़े हों तो वह जातक भी कठोर, भारी बुद्धि तथा अल्पज्ञ, स्थूल बुद्धि वाला, याददाश्त में न्यूनता रखने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति आवेशी एवं बात-बात पर क्रोध करने वाला, जिद्दी, हठवादी, अहंवादी, खूब दौड़-धूप और परिश्रम करने वाला होगा। उसको जीवन में सहयोग, हमदर्दी, अपनापन कहीं नहीं मिलता। सत्यतः घर और परिवार के लोग, मित्रगण भी उसकी भावनाओं को नहीं समझते। फलस्वरूप यह जातक प्रायः खिन्न और उदास रहता है। इसी कारण जातक मर्यादानुकूल अपने ही ढंग से अपना जीवन व्यतीत करता है। हां, यह जातक अधिक भोगप्रिय, भोगेच्छुक, कामोत्तेजक, वासनामय जीवन व्यतीत करने वाला, स्वार्थी, खुदगर्ज

होगा। जिस जातक के बाल कनपटी के पास से मस्तक की ओर बढ़ते हैं, ऐसा एहसास होता है तो समझ लें वह अपने भाग्य को दुर्भाग्य की ओर ले जा रहा है अर्थात् उसका भाग्य वाममार्गी हो जाता है। वह पतनोन्मुखी हो जाता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए धर्म-अधर्म, कर्म-अकर्म, उचित-अनुचित, सही-गलत का ध्यान भी नहीं रखता है। जिसके सिर के बाल लम्बे हों वह प्रेमी होगा तथा हर एक से मधुर सम्बन्ध रखता है। घुंघराले बालों वाला रसिक जन, प्रेमी जन, अनुचित रोगात्मक सम्बन्ध बनाने वाला, कलाकार, मस्तिष्क सतत क्रियाशील तथा घुमाव-फिराव युक्त बातें बनाने वाला और उससे लाभान्वित होगा तथा जीवन में कभी दुःख नहीं मानता। आनन्दी जीव होता है।

चोटी के बाल

जिस मनुष्य के चोटी के बाल लम्बे और कुछ घने, बंधे हुए रहते हों तो जातक धार्मिक आचरण करने वाला, ईश्वर-भक्त, निष्ठावान, आस्तिक, ईश्वर को जानने वाला, देवार्चन, धार्मिक कर्म काण्ड करने वाला, भक्ति, कथा-वार्ता करने वाला, सतोगुणी, उनका आचरण व व्यवहार सज्जनता युक्त होगा। जिसकी चोटी के बाल छोटे, पतले, कम घने, खुले हुए हों तो वह मनुष्य आन्तरिक धर्म का विशेष पालन करने वाला नहीं होता। ईश्वर व धर्म के प्रति भी पूर्ण निष्ठा नहीं रहती। अपने मन-मष्तिष्क, आचार-व्यवहार, भावनाओं पर नियन्त्रण रख सकने में समर्थ होता है। जो व्यक्ति चोटी रखता ही नहीं या होती ही नहीं, वह किसी प्रकार धर्मबंधन में नहीं आता तथा अपने गृहस्थ में ही मस्त रहता है और अपने मनमाने ढंग से जीवन-यापन करता है।

चौड़ा व लम्बा माथा, भरा चेहरा

जिस मनुष्य का लम्बा व चौड़ा मस्तक तथा भरा-भरा-सा चेहरा हो तो वह जीव समझदार, दूरदर्शी, ज्ञानी, बुद्धिमान, धन-धान्य-सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली, महाभाग्यशाली, दूरदर्शी व ज्ञानवान होता है तथा वह लौकिक व पारलौकिक विषयों का जानकार, यशस्वी, प्रभावशाली, सम्मान युक्त, हर प्रकार का भौतिक सुख प्राप्त करने वाला, सुन्दर, श्रेष्ठ पारिवारिक जीवन-यापन करने वाला, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, मित्र, घर, परिवार से सुख, आनन्द तथा सहयोग प्राप्त करने वाला सुशिक्षित होता है।

छोटा, कम चौड़ा, गड्ढे दार मस्तक

जिस जातक का मस्तक छोटा हो, कम चौड़ा हो तथा गड्ढेदारहो वह निर्धन, धनहीन, कठिनाई से जीवन-यापन करने वाला, अशिक्षित या अल्प शिक्षित, उच्च शिक्षा विहीन, ज्ञान रहित होगा। संकुचित मनोवृत्ति युक्त, हृदयहीन तो नहीं पर संकीर्ण हृदय और संकीर्ण विचारों वाला, ईश्वर, धर्म-कर्म के प्रति शंकालु, घोर

स्वार्थी, परमार्थ पर ध्यान नहीं देने वाला, खुदगर्ज, यश-मान रहित, हठवादी, जिद्दी, मनमानी करने वाला तथा कर्म के प्रति लापरवाह होता है। हां, यदि मस्तक के बीच में गड्ढा हो तो छोटी तकदीर वाला तथा उसके प्रगति के मार्ग में बार-बार बाधाएं व रुकावटें आती हैं। आजीवन वह संघर्षशील रहता है एवं नित्य नये झंझट पालता है।

पतला-हलका मुंह

ऐसा जातक जिसका मुंह हलका और पतला हो, उसके जीवन में अनेक प्रकार की कमियां और कमजोरियां तथा अभाव पाये जाते हैं। नाना प्रकार के प्रयत्न व प्रयास, परिश्रम, भाग-दौड़ करने के बाद भी अनेक युक्तियों को काम में लेने के बाद भी वह सफलता प्राप्त नहीं करता या मनचाही स्थिति पर नहीं पहुंच पाता है। अनेक प्रयास और दौड़-धूप व्यर्थ जाती है। समाज उसे सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता, प्रभाव का अभाव रहता है। हां, कुछ गुप्त व अनजानी युक्तियों को अपनाकर वह उन्नति व सुख प्राप्ति की चेष्टा में व्यर्थ ही लगा रहता है। जीवन सामान्य गति से चलता रहता है तथा ऐसा व्यक्ति भीरु प्रकृति का होता है।

सुन्दर व छोटा मस्तक

जिस जातक का चेहरा सुन्दर हो तथा मस्तक छोटा हो, वह अपने भौतिक जीवन में खूब आनन्द प्राप्त करता है। सुखी जीवन व्यतीत करता है। धन-धान्य से सम्पन्न रहता है। ऐशो-आराम के सभी साधन उपलब्ध रहते हैं। भोग-विलास के सभी साधन उसे उपलब्ध होते हैं। कदम-कदम पर उसे मित्रों का सहयोग प्राप्त होता है। पारलौकिक जीवन, धर्म, स्वर्ग-नरक के प्रति सामान्य-सी रुचि बनी रहती है परन्तु धर्म का यथार्थ ज्ञान, पूर्ण निष्ठा व भक्ति उसे प्राप्त नहीं होती। हां, कुछ गूढ़ युक्तियों को अपनाकर धन-यश-सुख पाने की चेष्टा करता है। वह हास्य प्रिय, विनोदी, हंसने-हंसाने वाला, स्वार्थी व मृदुभाषी होता है। ऐसा जातक अल्प शिक्षित होता है।

सुन्दर चेहरा, बड़ा मस्तक

जिस मनुष्य का चेहरा सुन्दर और बड़ा मस्तक हो वह जीव दिव्य ज्ञान प्राप्त करने वाला, सद्गुणी, अहिंसा, दया, परोपकार, ममता, मोह, अपनत्व, भाई-चारा आदि गुणों को रखने वाला, सुन्दर व मृदुभाषी तथा धार्मिक, ईश्वर-भक्त, एकनिष्ठा, लौकिक व पारलौकिक दोनों प्रकार के कार्य कर यश, मान, प्रतिष्ठा, सुख पाने वाला, समाज में आदर व सम्मान प्राप्त करता है। उसका अन्यान्य लोगों पर सुन्दर प्रभाव पड़ता है। चतुर, वाक्पटु स्वकार्य दक्ष एवं सुखी तथा भाग्यशाली होता है।

लम्बी या छोटी नाक

मोटी नासिका यदि आगे से छोटी हो तो चतुराई का दिग्दर्शन करवाती है तथापि उसमें कुछ न्यूनता बनी रहती है। वह घमण्डी, अहंकारवादी, जिद्दी होता है और लम्बी नाक आगे की ओर ज्यादा झुकी हुई हो तो वह प्राणी घोर स्वार्थी, मतलबी, खुदगर्ज एवं होशियार, बात-चीत में दक्ष और सम्मानित, इज्जतदार, होता है। जिसकी नासिका में दोनों नथुनों के बीच का मांस ऊपर वाले ओष्ठ पर टेढ़ा होता है वह जातक गृहस्थी के किसी मामले में कुछ कष्ट, पीड़ा, दुःख या अभाव का अनुभव करता है पर ऐसा जातक अदाकार अवश्य होता है।

सिर का ऊपरी हिस्सा

जिस मनुष्य का सिर ऊपर से यानी चोटी से आगे मस्तक की ओर कुछ टीले जैसी शक्ल में उठा हुआ हो तो वह जीव ईश्वरीय शक्तियों का व किसी विशेष तत्त्व का जानकार व आदर्श होता है और यदि सिर में गड्ढा- सा ऊपर की ओर हो तो वह जीव आदर्श कर्म, आदर्श तत्त्व की ओर से विमुख रहता है और लौकिक जीवन को ही बड़ा मानने वाला होता है।

बीच में काली भौंहें

जिस मुनष्य की भौंहों के मध्य का भाग कतई साफ, चमकता हुआ और चौड़ा हो और भौंहों में सामान्य, औसत केश ही हों तथा बीच-बीच में से भौंहों के हिस्से मांसयुक्त व बालयुक्त, ऊपर को उठे और उभरे हुए दिखाई दें तो ऐसा जातक स्वच्छ हृदय, निष्कपट, निर्मल व स्पष्ट, महत्त्वपूर्ण बातें कहने वाला, अलौकिक तत्त्व की खोज में रत, प्रेमी जन, सबको आदर देने वाला, सबसे स्नेह करने वाला, गंभीर, ज्ञानरत, ज्ञान की खोज में लिप्त तथा प्रतिभावान, निष्कपट, आदर्शवादी, न्यायप्रिय, सर्वजन हितैषी होता है।

छोटी हलकी भौंहें

जिस जातक की हलकी और छोटी भौंहें होती हैं वह कुछ भीरु, डरपोक, दब्बू प्रकृति का, काम सन्तोषी, शीलवान, लड़ाई-झगड़ा, टण्टाफसाद से दूर शान्ति चाहने वाला, भौतिक सुख-समृद्धि-भोग व आनन्दादि अवश्य प्राप्त करता है। सदैव मैत्री भाव रखता है। प्रत्येक से अपनापन रखता है, कार्य के प्रति परिश्रमी और थोड़ा बोलने वाला व सामान्य जीव होता है।

तिरछी भौंहें

कमान के समान जिस व्यक्ति की भौंहें तिरछी हों वह जातक ऊंचा कलाकार, अपने जीवन में विशेष कला प्रिय, तीव्र, तीक्ष्ण, गंभीर, गहरा गहन ज्ञान रखने

वाला, समाज, जाति, धर्म, घर, परिवार, कुटुम्ब में खूब सम्मान प्राप्त करनेवाला, अपने संपर्क में आए हर व्यक्ति पर अपने आदर्शों की गहरी छाप छोड़ जाता है। उच्च स्तरीय जीवन-यापन करने वाला, भोग-विलासमय जीवन व्यतीत करनेवाला, सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करनेवाला, इज्जतदार तथा प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति होता है।

गहरी–मोटी भौंहें

यदि भौंहों के बाल गहरे हों तथा भौंहें मोटी हों अर्थात् अधिक बालदार हों तो वह प्राणी अहंवादी अवश्य होगा। अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता, अहंकारी व बड़प्पन जताने वाला, ठाट-बाट से ऐश्वर्यमय, भोग-विलास युक्त अपना जीवन व्यतीत करता है। बिना बात ही हर समय, हर पल अन्यान्य अपने संपर्क में आए लोगों पर व्यर्थ ही प्रभाव डालने का प्रयास करता रहता है। कोई भी कार्य क्यों न हो, उसमें अपना हित सर्वोपरि रखने का प्रयत्न करता है। कोई भी कार्य-धन्धा, व्यवसाय हो, उसमें वह अपना लाभ प्रधानतः रखने की चेष्टा रखता है। बात-बार पर क्रोध करना उसकी आदत में शुमार होता है।

मिली हुई भौंहें

यदि नाक से ऊपर माथे पर बीच में से दोनों भौंहें परस्पर मिली हुई हों तो वह जातक अधिकतम चतुराई व होशियारी से, चालाकी से अपना काम निकाल लेता है और इसी कारण वह प्रत्येक कार्य में सदैव सफल भी होता है। गोपनीयता उसका गुण होती है। अपना भेद भूलकर भी किसी को नहीं देता और दूसरों का भेद पाने में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। अपना मतलब साधना ही उसका एकमात्र उद्देश्य रहता है। धर्म, शक्ति, पूजा, उपासना, ईश्वर को वह कम मानता है परन्तु यदि अपना उद्देश्य पूरा होता हो तो पूर्ण आस्तिकता का ढोंग रचने से भी वह नहीं चूकता।

टेढी या सीधी भौंहें

टेढ़ी भौंहें मस्तक के कान की तरफ नीचे की ओर झुकी हुई हों या वह सर्वथा सीधी ही हों एवं मध्य भाग से उठी हुई न हों तो वह व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है, धनी-मानी नहीं होता। सामान्यतः अल्पज्ञ होता है। यश-विद्या में न्यूनता, घोरतम परिश्रमी होता है।

रक्तिम नेत्र

हां, जिस मनुष्य के नेत्र रक्तिम अर्थात् लाल रंग के या ललाई लिये हुए हों वह जातक आवेशी, क्रोधी, धूर्त, जिद्दी, मनमानी करनेवाला, घोर स्वाभिमानी, अहंवादी,

खुदगर्ज, स्वार्थी, अपने आगे किसी को भी न चलने देनेवाला, अन्यान्य पर अपना वर्चस्व व दबाव बनाए रखनेवाला, प्रभुता जमानेवाला, अपनी हेठी न होने देनेवाला, सब पर वर्चस्व रखने वाला तथा प्रत्येक से अपना लाभ चाहने वाला, शील, संयम, शान्ति को न चाहनेवाला तथा सदैव अशान्त एवं हठी, हठधर्मी अवश्य होता है। ऐसे जातक से संपर्क कर प्राणी पछताता है।

सुन्दर श्वेत नेत्र

वह जातक जिसके नेत्र सुन्दर हों, आकर्षक एवं मोहित करनेवाले, श्वेत वर्ण के हों, वह जातक धीर, गंभीर, शान्त, मीठा बोलने वाला, अक्रोधी, कोमल भाव युक्त, सदाचारी, विनम्र एवं हिंसा, पाखण्ड, धूर्तता, लड़ाई-झगड़े से दूर रहने वाला, निष्कपट, सत्यवादी, कपटपूर्ण आचरण से दूर, न्याय प्रिय, किसी भी समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार करनेवाला, सबका प्रिय व सबको प्यार करता है। कभी भूलकर भी किसी को धोखा नहीं देता।

छोटे नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र छोटे हों वह प्राणी अशिक्षित या अल्प शिक्षित, विवेक हीन, अविवेकी, न्यायरहित होता है। वह बात की गंभीरता को नहीं समझता, दूरंदेशी नहीं होता तथा समाजिक मान-प्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहती है। ऐसा जातक घोर स्वार्थी, खुदगर्ज एवं मतलबी, अहसान फरामोश होता है।

भूरी–नीली पुतली या एक आंख छोटी

जिस मनुष्य का एक नेत्र छोटा या किसी से बात करते समय एक ओर की आंख मिची-मिची-सी रहे अथवा भूरी या नीली पुतली वाला व्यक्ति हो, तो वह जीव चतुराई भरी बात करनेवाला, बातों में किसी को नहीं जीतने देनेवाला, बड़बोला, बातों में भारी सफाई दिखाने वाला, वह अपना भेद भूलकर भी किसी को नहीं देता या भेद को रखनेवाला तथा सज्जनता के अन्दर पक्षपात रखनेवाला या अपने-पराये में भेद रखनेवाला, उसकी कथनी और करनी में भारी अन्तर रहता है। अपने स्वार्थ को सर्वोपरि वह रखता है तथा सदैव स्वार्थ पूर्ति में लगा रहता है। भीतर से वह चतुर तथा अपना मतलब निकालने में दक्ष, समय पड़ने पर वह न्याय, इन्सानियत, प्रेम, अपनत्व का भाव भूलकर अपने फायदे को प्रधानता देता है तथा दिखावे में सज्जनता का चोला पहने रहता है।

काना या एक नेत्र वाला

जिस प्राणी के एक ही नेत्र हो, ऐसा जातक निश्चय ही घोर स्वार्थी, अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए वह कुछ भी उच्च-से-उच्च व निम्न-से- निम्नतर कार्य कर

सकता है। उसके जीवन में स्वार्थ ही सर्वोपरि व प्रधान रहता है। गोपनीय व गुप्त तथा छुपे हुए कार्य करके अपना स्वार्थ पूरा करने में लगा रहता है। झूठे आश्वासन देने, सान्त्वना देनेवाला तथा व्यर्थ के आश्वासन देता रहता है। वाह-वाही लूटने के लिए झूठी भलमनसाहत दिखाता है। न्याय-अन्याय, पाप-पुण्य, सत्य-झूठ, आदि की ऐसा व्यक्ति परवाह नहीं करता। ऐसा जातक सदैव एक तरफ की ही बात सोचता है, दूसरे पक्ष की बात जानने, समझने की परवाह ही नहीं करता। वह येन-केन-प्रकारेण वह भौतिक जीवन की ही उन्नति चाहता है। मात्र लौकिक जीवन उच्च होना चाहिए। लोक-परलोक, न्याय-अन्याय, ईश्वर, कर्मकाण्ड की चिन्ता नहीं करता।

श्वेत कमल सम नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र सफेद और कमल के समान सुन्दर सजीव दृश्यमान हों वह प्राणी विद्यासागर, बुद्धिमान, ज्ञानी, धनसम्पन्न, अपने जीवन में निरन्तर प्रगतिशील, बाधाओं व विपत्तियों का डटकर सामना करने वाला, विचारों से गंभीर व बात की तह तक जाकर बात का हल ढूंढ़नेवाला, लोक-समाज में सम्माननीय, यशस्वी, पांखड पूर्ण आचरण से सदैव दूर रहने वाला, दूरदर्शी, न्याय प्रिय, परोपकारी, विशुद्ध आचरण करनेवाला, दयालु, धर्मात्मा, धन-धान्य सम्पन्न, ईश्वर-भक्त तथा चतुर होता है।

नेत्र के भीतर दोनों ओर पुतली पर तिल होता है। जिस मनुष्य के नेत्रों के अन्दर दोनों ओर पुतली पर तिल होता है वह प्राणी अत्यन्त होशियार तथा स्वार्थ पूर्ति के लिए कार्य करनेवाला, स्वार्थी, अपना मतलब पूरा करने में दक्ष, स्वार्थ साधक, युक्तियुक्त, चालाकी से अपना काम निकालने वाला तथा छिपावपूर्ण जीवन जीने वाला, गोपनीयता युक्त आचरण, देश-काल-समय, परिस्थितियों का लाभ उठाने वाला, लौकिक जीवन को सदैव ऐसा जातक प्रधानता देता है। स्वार्थ के आगे वह परमार्थ को भूल जाता है। दुनियादारी व क्षुद्र स्वार्थ के आगे सज्जनता को भूल जाता है। हर बात में एवं विवाद में वह सदैव अपने पक्ष की ही बात करता है। अपने भेद की बात को भी अपने ही ढंग से सिद्ध करता है। अपनी उन्नति के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील, सर्तक, सावधान रहता है। व्यवहार से बहुत बड़ा चतुर लगता है।

अन्धापन

जो मनुष्य दोनों आंखों से अन्धा हो, अर्थात् दोनों ही आंखों से दिखायी न देता हो वह व्यक्ति संगीतज्ञ या संगीत-प्रेमी अवश्य होता है। उसके भीतरी नेत्र खुल जाते हैं। उनका स्पर्शेन्द्रिय ज्ञान बढ़ जाता है। मानसिक शक्ति से वह बड़े-बड़े कार्य कर सकने में समर्थ होता है या कि उनका मानसिक विकास विशेष होता है। वह

जातक सदैव किसी-न-किसी कार्य में संलग्न रहता है। उसे अपने काम-से-काम रहता है। अपनी धारणाओं व विचारों के समक्ष वह किसी की परवाह नहीं करता अपितु मनमानी ही करता है। आयु के साथ-साथ उसका झुकाव अलौकिक, पारलौकिक विषयों, देव आराधना, अध्यात्म, भक्ति की ओर बढ़ जाता है। हां, वह क्षुद्र स्वार्थ से पीड़ित अवश्य रहता है तथा उसका प्रत्येक कार्य स्वार्थ के धरातल पर ही टिका रहता है। मनमानी करने से वह कभी नहीं चूकता। जिद्दी वह हो ही जाता है तथा स्वभाव से तेज परन्तु हां अपने प्रति सर्वथा लापरवाह होता है।

नेत्र में फूला

जिस मनुष्य की आंखों में स्पष्ट फूला दिखाई देता हो वह प्राणी सदैव कुचमादी, कुचक्र रचने में दक्ष, क्षुद्र स्वार्थ से पीड़ित, यानि स्वार्थी, खुदगर्ज अपना मतलब साधने वाला, अपना राग अलापने वाला तथा साम-दाम-दण्ड- भेद कुछ भी करके मात्र अपना ही काम निकालना जानता है। षड्यन्त्र रचने में वह दक्ष होता है। पेचीदा युक्तियों से सदैव लाभ उठाता है तथा दो को लड़ाकर स्वयं लाभ उठा लेता है। दूसरों की लड़ाई में उसे आनंदानुभूति होती है। जो भी वह कार्य करेगा वह छुपाकर करता है। कार्य की पूर्ति तक निकट-से-निकट व्यक्ति को भी उसकी भनक नहीं लगने देता है। झूठ-सत्य की उसे परवाह नहीं रहती तथा मात्र अपने मतलब की ही बात करता है। 'बाप बड़ा न भैय्या, सबसे बड़ा रुपैया' के सिद्धान्त का वह प्रतिपादन करता है। अपने व्यवहार व बात से वह अपने-आपको दूध का धोया सिद्ध करता है। अपने को इंसाफ प्रिय दिखाता है। सामाजिक जीवन में उसे बहुत थोड़ा सम्मान प्राप्त होता है। प्रेमीजन या उनको चाहने वाले कोई नहीं होते या हृदय से इन्हें कोई नहीं चाहता। अन्यान्य को पीड़ा पहुंचाने में उसे सदैव आनंद आता है।

इकतरफा खिंचने वाली पुतली

जिस मनुष्य की आंखों की काली पुतली एक ओर खिंचाव खाती हो अर्थात् पुतली का एक ओर खिंचाव रहे तो वह व्यक्ति अपने सामान्य व्यवहार से अपने संपर्क में आए लोगों से नाजायज फायदा उठाने से नहीं चूकता। वह येन-केन-प्रकारेण अपना स्वार्थ पूरा करने में लगा रहता है। चतुराई और बड़ी सफाई से बातें करने वाला होता है। वह लौकिक सफलता के सामने लोक-लज्जा, न्याय, नैतिकता, सत्यता आदि की भूलकर भी परवाह नहीं करता है।

बदशक्ल चेहरा

जिस जातक का चेहरा भद्दा, बदशक्ल, कुरूप, शोभाहीन, आकर्षण रहित हो, ऐसा व्यक्ति असत्य भाषण करके, ठगी का उपयोग करके दक्षता से भी अपना

काम निकाल लेता है। दया, ममता, मोह, प्यार, स्नेह का उसके जीवन में नितान्त अभाव रहता है। उसे कोई नहीं चाहता, प्यार नहीं करता। आदर-मान उसे नहीं मिलता तथा समाज में भी अपनत्व, आदर, मान, प्रतिष्ठा, यश नहीं प्राप्त होता है। हां, ऐसा व्यक्ति स्वयं भी यश और प्रशंसा, मान-प्रतिष्ठा की परवाह नहीं करता है। उसे किसी से कुछ लेना-देना नहीं होता पर वह येन-केन-प्रकारेण अपनी इच्छाओं की पूर्ति अवश्य कर लेता है। उसकी काम-वासना तीव्र रहती है परन्तु वह सदैव उसका दमन करता रहता है तथा उस पर नियंत्रण बनाए रखता है। अपने जीवन में उसे भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त नहीं होतीं या आनन्द-सुख-भोग की सदैव न्यूनता बनी रहती है। लोगों के नफरत का वह शिकार होता है तथा वह मन-ही-मन में गम पालता है। स्वार्थ के आगे वह परमार्थ को भूल जाता है। ईश्वर, न्याय, भक्ति, परमार्थ, परोपकार, दया आदि में उसका विश्वास ही नहीं रहता।

चेचक के दागयुक्त चेहरा

जिस जातक के चेहरे पर चेचक के दाग हों वह प्राणी अपने जीवन में हर कार्य गुप्त रूप से तथा छिपी युक्तियों से ही निकालता है। अपने स्वार्थ के समक्ष दूसरों की परवाह नहीं करता। अपना एक रुपया बचाने के लिए दूसरे के हजारों के नुकसान की भी परवाह नहीं करता। अपने स्वार्थ को वह सदैव प्रधानता देता है। धर्म व ईश्वरीय न्याय को वह नहीं मानता। भक्ति-भाव, पूजा-पाठ, न्याय-अन्याय, यश-अपयश की वह भूलकर भी परवाह नहीं करता। उसे ज्ञान और मोक्ष की परवाह नहीं होती। कठोर व रूक्ष शब्दों का प्रयोग करके भी अपना काम निकालने से नहीं चूकता। दिखावा व प्रदर्शन उसे प्रिय रहता है तथा दिखने में भला आदमी प्रतीत होता है। वह मन में, हृदय में क्रोध-काम को स्थायित्व दिए रहता है। जीवन में भूलकर भी उसे सुख-शान्ति, आराम, धैर्य, सन्तोष नहीं मिलता। वास्तविक प्रेम व अपनत्व का सदैव अभाव रहता है।

कोटर (गड्ढे) में धंसी आंखें

वह प्राणी जिसकी आंखें गड्ढेदार या कोटर में धंसी या जिसकी आंखें मस्तक के नीचे गड्ढे में घुसी हुई, मिंची-मिंची-सी हों वह व्यक्ति सामाजिक सम्मान नहीं पाता। उसके प्रभाव में सदैव न्यूनता बनी रहती है। उसके व्यक्तित्व से कोई प्रभावित नहीं होता। वह अपना वर्चस्व किसी पर नहीं जमा सकता, उसे कोई चाहता नहीं। उसके उन्नति के मार्ग में भी सदैव कदम-कदम पर रुकावटें व अड़चनें आती रहती हैं। उन्नति का मार्ग सदैव अवरुद्ध रहता है। ऐसा व्यक्ति शिक्षित भी नहीं हो पाता तथा सहजात बुद्धि अर्थात् स्वयं प्रज्ञा या कॉमन सेंस नहीं होता। छोटी-छोटी तरकीबों से, क्षुद्र कार्यों से विशेष एवं अधिकाधिक लाभ प्राप्त करने की योजनाएं वह बनाता रहता है। कामवासना तीव्र एवं सदैव कामासक्त

रहता है। नैतिकता-अनैतिकता का उसके जीवन में कोई महत्त्व नहीं होता। जीवन में भरसक प्रयत्न करके भी आर्थिक पक्ष में न्यूनता बनी रहती है। समृद्धिशाली वह वन नहीं सकता। अभावों भरा जीवन जीता है। आजीवन दुःख, कष्ट, झंझट, लगे ही रहते हैं।

छोटी पलकें, झीनी पलकें, बड़े और चौड़े कान

जिस जातक के कान चौड़े और बड़े हों, वह प्राणी बड़ा ही बुद्धिमान, ज्ञानी, विद्वान, समझदार, दूसरों को आदर-मान देनेवाला, अपने वार्तालाप से प्रतिपक्षी को अनुकूल करने में समर्थ, सोच-विचार कर संभाषण करने वाला होता है। पर कुछ क्षेत्रों में न्यून बुद्धि रखने वाला परन्तु सदैव सतर्क और सावधान, फूंक-फूंककर कदम रखने वाला, हेकड़ीबाज, अपनी जिद्द पर अड़ जाने वाला, हठवादी, धुनी तथा अपने धन-सम्पत्ति से अधिक लाभ उठाकर संपत्ति बढ़ाने वाला एवं मान पाने वाला होता है।

छोटे कान

जिस मनुष्य के कान बहुत छोटे अर्थात् लम्बाई में छोटे हों वह स्वभावतः शंकालु, कायर, भीरु, दब्बू प्रकृति का तथा हठी, जिद्दी, मनमानी करने वाला, अपनी जिद्द के आगे वह किसी की भी बात नहीं सुनता। अपनी ही मर्जी व इच्छानुसार वह जीवन-यापन करता है। सुनना सबकी—करना मन की—नीति का आचरण करता है। न तो उसे समाज में विशेष आदर या सम्मान मिलता है और न ही वह विशेष शिक्षा की प्राप्ति कर सकता है। आदर्श व नैतिक मूल्यों का उसके जीवन में कोई स्थान नहीं होता। हां, स्वतन्त्रता एवं स्वतन्त्र रीति से जीने का इच्छुक अवश्य होता है। गृहस्थी में कदम-कदम पर उसे अड़चनों व झंझटों का सामना करना पड़ता है। सब मिलाकर उसका गृहस्थ-जीवन सुखी नहीं मिलता, सामाजिक व पारिवारिक प्रभाव में भी न्यूनता बनी रहती है।

औसत कान

औसत दर्जे के कान होने पर जातक अपने लौकिक, पारिवारिक व सामाजिक क्षेत्र में सर्वथा व्यवहारकुशल होता है। सामाजिक मर्यादाओं का वह भली प्रकार पालन करता है। भली-बुरी बातों, हित-अहित, यश-अपयश, जय-पराजय, हानि-लाभ, न्याय-अन्याय आदि पर भली प्रकार सोच- समझकर आगे बढ़ता है। उसे अपनी इज्जत, मान-मर्यादा, पारिवारिक इज्जत का सदैव खयाल रहता है। आगे-पीछे की बात सोच-समझकर तद्नुरूप आचरण करता है। देश-काल-परिस्थिति का वह खूब ध्यान रखता है व लाभ उठाता है।

छोटे कान की लौर कनपटी से चिपटी

जिस मनुष्य के कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई हो तथा कान छोटे हों, ऐसा व्यक्ति मात्र बुद्धिबल के सहयोग से परिश्रम-साध्य कार्य करके अपनी आजीविका स्वयं चलाता है, अर्थात् वह किसी हुनर या आर्ट, कारीगरी में दक्ष अवश्य होता है—जैसे दर्जी, नाई, लुहार, बढ़ई, मोची आदि। हां, उसकी वाणी में कुछ कर्कशता, कड़ुवाहट होती है। लावण्य की कमी होती है, विद्या भी अधिक नहीं होती। उसका भौतिक जीवन सीधा-साधा, सामान्य, सादगी युक्त, आडम्बर रहित, प्रदर्शन से दूर होता है। ऐसा जातक अपने कार्य में होशियारी का प्रदर्शन करता है। परन्तु जल्दवाज भी वह होता है और इसी से वह बने-बनाये कार्य विगाड़ भी देता है। अन्त: मन से धर्म व धार्मिक भाव तथा ईश्वरीय सत्ता व भक्तिभाव की ओर रुचि नहीं होती और न ही वह इसकी परवाह करता है।

बड़े कान की लौर कनपटी से चिपटी

हां, यदि कान बड़े-बड़े हों तथा उसकी लौर कनपटी से चिपटी हुई हो तो वह जीव अपने बुद्धिवल, स्वयं प्रज्ञा, सहजात बुद्धि, या कॉमन सेंस से अक्ल का सदुपयोग कर भौतिक जीवन शानदार, ठाट-बाट से व्यतीत करता है। समाज के गण्यमान्य एवं धनी-मानी, उच्चस्तरीय लोग, प्रतिष्ठित, उच्च अधिकारियों से मल-जोल बनाए रखता है और समय पड़ने पर अपना काम वह निकाल लेता है। वह अपनी स्थिति से कहीं अधिक प्रभावी जीवन व्यतीत करता है। वह एक अच्छा योजनाकार एवं प्लानिंग करने वाला अच्छा ड्राफ्ट्समैन होता है। उनकी बनाई योजनाएं सदैव कारगर होती हैं। हर कार्य वह सोच-समझकर एवं बुद्धिमानी से, सावधानी से करता है ताकि कार्य में कमी या न्यूनता न आ सके। उसे अपयश, जय-पराजय, मान-अपमान, हार-जीत का बहुत खयाल रहता है। धन प्राप्त करने का कोई अवसर वह चूकता नहीं है तथा सदैव धन पाने की टोह में लगा रहता है। येन-केन-प्रकारेण साम-दाम-दण्ड-भेद द्वारा वह अपना काम निकालना चाहता है। लौकिक व्यवहार को बनाए रखने में वह कुशल होता है। धार्मिक क्रिया-कलापों में वह बढ़-चढ़कर भाग लेता है। सामाजिक दृष्टि से उसे खूब इज्जत व सम्मान प्राप्त होता है।

कान की लम्वी लौर व नीचे से गोल

ऐसा व्यक्ति जिसके कान की लम्वी लौर नीचे से गोलाई लिये हुए हो तो वह जातक खूब धनवान होता है। आर्थिक दृष्टि से वह सम्पन्न तथा उच्च स्तरीय व्यापार करता है। आर्थिक विकास के लिए वह निरन्तर प्रयास करता है, अथक प्रयास करता है, रात-दिन एक कर व्यापार बढ़ाता है एवं समाज में खूब सम्मान प्राप्त करता है। घर-परिवार, कुटुम्व तथा गृहस्थ जीवन में भी खूब मान-सम्मान

और सुख प्राप्त करता है। भरपूर गृहस्थी का सुख भोगते हुए भी वह अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगा रहता है। धन और धर्म का मामला आने पर वह धर्म की अपेक्षा धन को ही प्रधानता देता है।

कान की गोल उभरी लौर

जिस मनुष्य के कान की लौर गोल हो तथा उभरी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति ईश्वर-भक्त, धर्मभीरु, होता है। वह कार्य करने से पूर्व उसका न्याय पक्ष अवश्य देखता है। वह समझता है कि मैं जो कुछ भी करता हूं, उसे ईश्वर अवश्य देखता है। अपने हृदय में ईश्वर को सर्वोपरि स्थान प्रदान करता है। यथाशक्ति, धार्मिक कार्य, आयोजन, दैविक, याज्ञिक कार्यों में भाग लेता रहता है। उसके जीवन में प्रत्येक कार्य में धैर्य व सन्तोष रहता है। धन की लालसा भी बढ़ी-चढ़ी नहीं होती। वह जीवन-यापन के लिए हाय-तोबा नहीं मचाता। सन्तोषी—सदा सुखी वाले नियम का पालन करता है। हां, वह हर कार्य खूब सोच-समझकर तथा सावधानी से करता है और इसी कारण वह कभी असफल नहीं होता है। स्वार्थ व परमार्थ के प्रति न्याय का दामन भी नहीं छोड़ता। अपने कार्य में वह दक्ष, चतुर तथा प्रकृति से गम्भीर रहता है। छिछोरापन भी उसमें नहीं होता तथा सुन्दरता को सदैव वह मन से चाहता है।

कानों पर बाल

जिस मनुष्य के कानों पर बाल होते हैं वह अपने कार्य में खूब होशियार होता है तथा प्रतिपक्षी के पेट में घुसकर भी अपना कार्य निकाल लेने की सामर्थ्य रखता है। वह चतुर होता है तथा अपना लाभ देखकर ही किसी कार्य में हाथ डालता है। स्वकार्य दक्ष तथा येन-केन-प्रकारेण जीवन में सारी सुख-सुविधाएं भी जुटा लेता है। लौकिक एवं व्यवहारिक कार्यों में खूब गहरी रुचि रखता है। इन्हें पूर्णतः व्यवहार कुशल कहा जा सकता है। अपने स्वार्थ सिद्धि के सामने न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य की परवाह नहीं करता है। देश-काल-परिस्थितिनुसार स्वयं को ढालकर अपना काम निकाल लेता है। समय का फायदा उठाना वह जानता है। गिरगिट के समान समय पड़ने पर वह रंग बदल देता है। इन्हें अक्लमन्द कहा जा सकता है।

बन्दर के कान की बनावट वाले कान

वह मनुष्य जिसके कान बन्दर के कान की बनावट वाले हों, तो वह प्राणी जरूरत से ज्यादा चालाकी और बड़ी होशियारी से अपना काम करके लाभ उठाने वाला तथा दूसरों के चक्कर में न फंसकर उलटा उन्हें अपने चक्कर में लेने वाला, फंसाने वाला और काम-क्रोध, लोभ-मोह को अपने जीवन में अधिक स्थान देने वाला होता है। झूठी बन्दर की घुड़कियां देकर लाभ उठा लेता है तथा गृहस्थ

जीवन में निरन्तर कुछ-न-कुछ चक्कर बनाए रखता है एवं मुसीबतें झेलता है। सामाजिक मान उन्हें कम मिलता है तथा प्रभाव क्षीण रहता है। हां, ऐसा जातक समय का फायदा खूब उठाता है। देश-काल-परिस्थित का लाभ उठाने से नहीं चूकता।

लम्बी मूंछें

जिस मनुष्य की मूंछें कान की तरफ लम्बी होती हैं ऐसा प्राणी सर्वथा बहादुरी जतलाने वाला, शौर्य का प्रदर्शन करने वाला, अपने शत्रु को दबाकर रखने वाला तथा मुसीबतों से न घबराकर डट कर उसका मुकाबला करने वाला और हिम्मत से काम लेने वाला तथा मन-ही-मन भारी हैकड़ी रखने वाला, अकड़बाज, कुछ अधिक ही लोभेच्छा का इच्छुक तथा खूब वासनाग्रस्त होता है। उसके स्वभाव में सदैव तेजी, आवेश, उद्वेग, क्रोध एवं उत्तेजना पाई जाती है। शांति और धैर्य का सदैव अभाव बना रहता है उसके जीवन में। हां, समाज में थोड़ा सम्मान अवश्य प्राप्त होता है। वाणी-कौशल, प्रभावशाली ढंग से वार्ता करने की कला उसे आती है। दिखावा व धार्मिकता करता है, परन्तु आन्तरिक हृदय से धर्माचरण की उसे परवाह नहीं रहती है। स्वार्थ का भाव उसमें प्रधान रूप से पाया जाता है। स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह कुछ भी निम्न से निम्नतर व उच्च-से-उच्च कार्य कर सकता है। धन् एकत्र करने की उसे सदैव चिन्ता सताती रहती है।

छोटी मूंछें

जिस मनुष्य की मूछें छोटी-छोटी हों वह व्यक्ति सीमा में रहकर ही अपने लाभ की शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता है। सज्जनता, सहयोग, भलमनसाहत, ईमानदारी एवं नियमानुसार कार्य करके अपना कार्य निकालता है। स्वभाव-विनम्रता, कार्य-धैर्य एवं अथक परिश्रम-शीलता, लगन एवं अध्यवसायी रहता है। धनोपार्जन की हाय-हाय व फालतू की तृष्णा नहीं रहती है। हां, दुश्मन के प्रति थोड़ा बैर-भाव या शत्रुता का भाव अवश्य रहता है। थोड़ी तृष्णा एवं अधिक दुराव-छिपाव या हैकड़ी मारने की प्रवृत्ति नहीं रहती। अपने कार्य को शान्ति, धैर्य, चातुर्य से पूरा कर अन्ततोगत्वा लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

नोकदार उठी मूंछें

जिस मनुष्य की नोकदार तथा बलयुक्त उठी हुई मूंछें हों वह व्यक्ति अपने सम्पर्क में आए हर प्राणी पर अपना रौब, दबाव, प्रभाव जमाने को सदैव लालायित रहता है। हर हालत में वह अपना बड़प्पन जताता रहता है। क्योंकि बड़प्पन जताने की उसे आदत होती है। हर प्रकार से वह अपनी शान, गौरव व गुमान को बनाए रखने का प्रयास करता है और ऐसे ही साधन वह जुटाता भी है। स्वयं को

बहादुर समझने की वह भूल करता है। हां, भाग्यशाली वह अवश्य होता है। अल्प परिश्रम से वह अधिक लाभ अर्जित करता है तथा शत्रु उनके सामने टिकते भी नहीं हैं। उत्तमोत्तम सांसारिक व भौतिक भोग भोगने की इच्छा उसकी बनी रहती है।

दाहिनी मूंछ के पास तिल

जिस मनुष्य के दाहिनी मूंछ के पास तिल का निशान हो, तो वह प्राणी अपनी स्वयं की बुद्धिमानी से जीवन में निरन्तर उन्नति करता चला जाता है। जीवन में कभी किसी प्रकार का कष्ट या अभाव नहीं रहता है। उन्नति करने से निरन्तर उपयुक्त साधन भी उन्हें उपलब्ध होते चले जाते हैं। खूब धन और मान-सम्मान उसे प्राप्त होता है। शत्रु सदैव उनके आगे नतमस्तक होकर हार मानते हैं। उन्हें विशेष भाग्यशाली माना जा सकता है।

मूंछों में गंजापन

गंजापन सिर के बालों से ही नहीं, मूंछों के बालों से भी गंजापन आता है अर्थात् मूंछों के बाल उड़ जाते हैं या झड़ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति वणिक नीति से युक्त, अर्थोपार्जन में चतुर होता है। नरमाई, हाथ जोड़कर नम्रता से अपना काम निकालने में दक्ष होता है। गोपनीय चतुराई से अपना काम निकाल लेता है। इतने पर भी सामाजिक प्रभुत्व या महत्त्व इनका कम रहता है। इनके गृहस्थ जीवन में कुछ-न-कुछ झंझट लगी ही रहती है। घर में शान्ति रह ही नहीं सकती है तथा विपत्ति-पर-विपत्ति इन्हें घेरे रहती है। इनके जीवन में नीरसता व उजाड़पन पांव फैलाये विराजमान रहता है, फलस्वरूप आन्तरिक शान्ति नहीं मिलती। कार्य व्यवसाय में भी कुछ परतन्त्रता रहती है तथा व्यापार व्यवसाय के बढ़ाने की फिक्र लगी रहती है। हां, कुछ गोपनीय कार्य करके अच्छा लाभ प्राप्त कर लेता है। भोग-विलास में ऐसा जातक आकंठ डूबा रहता है।

मूंछ रहित

जिस मनुष्य के मूंछ न हो अर्थात् मूंछ विहीन हो तो वह प्राणी बाध्य रूप से सदैव खूब भलमनसाहत एवं सज्जनता प्रदर्शित करता है। अपने में जो सामर्थ्य, शक्ति और सद्गुण होते हैं, उन्हें वह छिपे तौर पर प्रदर्शित करता है। प्रदर्शन व दिखावा उन्हें पसन्द नहीं रहता। व्यवहार और न्याय के स्थान पर अपने मन्तव्य और स्वार्थ का अधिक खयाल वह रखता है। स्वार्थ को ही अपने जीवन में प्रधान रूप से स्थान देता है। सज्जनता युक्त पद्धति का अपने को अनुयायी सिद्ध करने वाला तथा शत्रु-पक्ष से द्वन्द्व युद्ध के लिए भूलकर भी सामने नहीं आता। अपनी युक्तियों से, बुद्धि चातुर्य से ही शत्रु का नाश कर देता है।

गड्ढे रहित लम्बी ठोड़ी

जिस मनुष्य की ठोड़ी लम्बी तो हो परन्तु उसमें गड्ढ़ा न हो, ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में स्थिर चित्तवृति युक्त अर्थात् स्थिर विचार वाला, मानवीय गुण अर्थात् शील, शान्ति, धैर्य जैसे मानवीय गुणों से युक्त जीव मात्र के प्रति दयाभाव, कोमल विचार तथा स्वेच्छित कार्य करने वालां या स्वेच्छित मार्ग का अनुसरण करने वाला तथा कला जगत् के प्रति उसके हृदय में विशेष स्थान अवश्य रखता है। इतने पर भी उसका जीवन नीरसता से परिपूर्ण होता है। खूब परिश्रमी एवं अहंवादी बनकर जीता है।

नीचे की ओर गड्ढे युक्त ठोड़ी

ऐसी ठोड़ी जिसमें गड्ढा तो हो, पर वह नीचे की ओर हो, ऐसा व्यक्ति खूब शील-सम्पन्ना युक्त, सन्तोषी, मनुष्य तो क्या वह पशु जगत के प्रति भी दया व ममता का भाव बनाए रखता है। दयावान व प्राणी को कष्ट न देने वाला भाव भूलकर भी नहीं छोड़ता। सरल, सीधा-सादा एवं सबसे प्रेम भरा व्यवहार करने वाला ऐसा जातक ईश्वर, धर्म, भक्ति, यज्ञादि कार्य, हवनादि, कथा-वार्ता में विश्वास रखने वाला होता है। कोई भी व्यक्ति या वस्तु हो, वह उसमें सौंदर्य ढूंढ़ ही लेता है। एक प्रकार से वह सुन्दरता का पुजारी होता है तथा आनन्दमय अपना समय व्यतीत करता है। अपनों से बड़ों का आदेश अनजाने में भी मानता है, उनका आदर करता है।

ठोढ़ी में सामने गड्ढा

जिस मनुष्य की ठोड़ी में सामने की ओर गड्ढा हो, वह जीव रसिक शिरोमणि, भागमय वृत्ति एवं भोग-विलास में अधिक व्यस्त रहता है। ऐश्वर्य, शृंगार-प्रसाधन, यात्रा, खेल-तमाशे, यारी-दोस्ती, को जीवन में अधिक स्थान प्रदान करता है। स्वार्थ का, स्वहित का भाव रोयें-रोयें में कूट-कूटकर भरा रहता है। स्वार्थ के अभाव में तो एक डग भी चलना उसे अभीष्ट नहीं होता है। लौकिक जीवन में वह काफी से अधिक उन्नति कर लेता है। दिखावा उन्हें प्रिय है एवं झूठी वाह-वाही लूटने के लिए सज्जनता व भलमनसाहत का ढोंग रचने से भी नहीं चूकता है। झूठ-मूठ में मीठा बोल कर लोगों का दिल जीतने का प्रयास करता है। लौकिक जीवन की सफलता के लिए वह किसी कला विशेष से प्रेम करता है।

छोटी ठोड़ी

जिस मनुष्य की ठोड़ी छोटी हो, वह प्राणी अल्प शक्तिमान, दैहिक शक्ति-सौष्ठवरहित होता है तथा लौकिक जीवन में भी उसे अधिक मान-सम्मान प्राप्त नहीं होता है। प्रेम-प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त नहीं होती एवं कभी-कभी

उसकी सम्मान-हानि भी हो जाती है। दया भाव से रहित वह कठोर एवं निष्ठुर होता है तथा अपने स्वार्थ व मान को ही बड़ा मानता है। त्याग, हमदर्दी, सज्जनता, भाई-चारे, अपनापन का उनके जीवन में बड़ा अभाव रहता है। आदर्शवादिता का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं होता है।

नासिका का अग्रभाग ऊपर की ओर

जिस मनुष्य के नाक के आगे का भाग ऊपर की ओर उठा हुआ हो, वह व्यक्ति बुद्धिमान तो होता है, परन्तु बुद्धि में लावण्य न होकर कठोरता एवं अहंभाव होता है। सब कुछ छोड़कर वह अपनी बात और अपनी बुद्धिमत्ता को प्राधनता देता है। मैं जो कुछ करता या सोचता हूँ वह ठीक है,बाकी सब कुछ गलत है—ऐसा वह सोचता है। अन्यान्य बुद्धिमानों को वह कुछ भी नहीं समझता, न ही उनकी परवाह ही करता है। अपने मान, अपनी प्रतिष्ठा, अपनी इज्जत, अपने प्रभाव को ही सदैव श्रेष्ठ समझता है। समाज ही नहीं,घर के प्राणी तक भी उसे हृदय से नहीं चाहते और न ही मान देते हैं। वह अपने गुमान में ही मगरूर रहता है। दूसरे उन्हें झूठा, मक्कार व मूर्ख समझें तो क्या आश्चर्य है?

लम्बी नाक

जिस मनुष्य की नाक लम्बी, कुछ मोटी हो तो वह व्यक्ति घोर स्वाभिमानी, जिद्दी एवं सामाजिक दृष्टि से प्राभवशाली होता है। यदि यही लम्बी नाक मोटी न होकर पतली हो एवं बीच में से भी कुछ उठी हुई हो तो जातक झूठा अहंकार रखने वाला पर भीतर-ही-भीतर कमजोरी युक्त होता है। यदि यह नाक पूरी लम्बाई में, नाक के ऊपर कहीं कुछ गड्ढ़ा हो तो वह प्राणी थोड़ा लज्जालु या लज्जायुक्त बात कहने वाला तथा थोड़ा प्रभावशाली एवं झूठ-सच, पाखण्ड, आडम्बर कुछ भी करके अपना कार्य निकाल लेने में दक्ष होता है। अपने मान-सम्मान-इज्जत की भी उसे अधिक परवाह नहीं रहती है।

नाक के मध्य मस्सा या तिल

जिस आदमी के नाक की लम्बाई के मध्य भाग में ठीक नाक के सामने ऊपर की ओर तिल अथवा मस्सा होता है, वह मनुष्य धन-संग्रह करने के लिए भरपूर प्रयास करता रहता है। हर संभव प्रयास करके वह अर्थ जोड़ता रहता है। अपनी सारी शक्ति का प्रदर्शन वह अर्थ-प्राप्ति में ही करता रहता है। जीवन में खूब मान-सम्मान प्राप्त करता है।

नाक की नोक पर मस्सा या तिल

जिस व्यक्ति की नाक की सबसे अग्र नोक पर तिल या मस्सा होता है वह प्राणी

इज्जत के साथ जीवन-यापन करता है तथा खूब परिश्रमी भी होता है। परिश्रम के साथ ही इज्जत पाता है तथा जरूरत से अधिक स्वाभिमान रखता है। वह हैकड़ीवाज व आवेशी तथा तुनकमिजाज होता है।

नाक का दाहिना छिद्र लम्ब-नोक दार

जिस व्यक्ति की नाक का छिद्र लम्बा तथा नोकदार हो एवं वह भी दाहिनी ओर का हो, तो वह जातक अपने शारीरिक व्यक्तित्व से ही खूब मेहनत कर उन्नति को प्राप्त करता है तथा समाज में अपनी बात मनवाने का खूब ध्यान रखता है। उसका मनुष्यत्व पुरुषत्व की शक्ति पाने वाला होने पर भी उसके गृहस्थ-जीवन में निरन्तर भूचाल आते रहते हैं। गृहस्थ का भरपूर सुख उसे प्राप्त नहीं होता है। स्त्री-सुख व लावण्य सुख का उपभोग नहीं करपाता और भोगादि पक्ष के सम्बन्ध में मन में नीरसता व न्यूनता का अनुभव करता है। ऐसा जातक आदर्श मार्ग पर चलने वाला, दूरदर्शी, हिम्मती तथा स्वतन्त्र विचार वाला होता है। उसकी घ्राणेन्द्रिय बहुत तीव्र होती है।

वामछिद्र लम्बा व नोकदार

जिस नाक का बायां छिद्र नोकदार व लम्बा हो पर दाहिने ओर का न हो वह व्यक्ति सुन्दर, सुखद, श्रेष्ठ, गृहस्थ सुख का भोग करता है। वह स्त्री, भोगादि लौकिक विषयों को जवीन में खूब महत्त्व प्रदान करता है। अपने जीवन में छिपी युक्तियों से भी निरन्तर लाभ उठाता है। भूलकर भी वह युद्ध, लड़ाई, मारपीट, गालीगलौच, वाद-विवाद हेतु तैयार नहीं होता, लड़ना उसे आता ही नहीं है। अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए किसी की भी बात की वह परवाह नहीं करता और शान्तचित्त, आनन्दमय जीवन-यापन करता है।

नाक के दोनों छिद्र लम्बे व नोकदार

जिस मनुष्य की नाक के दोनों छिद्र लम्बे एवं नोकदार हों एवं वह आगे की ओर नोकदार हों तो वह जीव अपने दैहिक व्यक्तित्व के आकर्षण से तथा स्त्री पक्ष से बड़प्पन, इज्जत, मान-सम्मान व आदर प्राप्त करता है। उसे कानूनविद कहा जा सकता है। वह हर कार्य कायदे-कानून की सीमा में रहकर ही करता है। उन्नति का मार्ग उसके समक्ष स्वतः उजागर होता रहता है या उन्नति के अवसर स्वतः प्राप्त होते रहते हैं। उसका प्रभाव समाज में बना रहता है। भौतिक सुख-सुविधाएं भी भरपूर प्राप्त करता है। एक विशेष प्रकार का जीवन-यापन करता है। समझदार व कार्यकुशल होता है।

छोटे-छोटे छिद्र

जिस मनुष्य की नासिका के दोनों छिद्र छोटे हों तो वह व्यक्ति अल्पशिक्षित, अल्पज्ञ तथा अल्प मान-सम्मान युक्त और किसी विशेष कला से वंचित रहने वाला प्राणी होता है। लोग उसे बहुत कम ही चाहते हैं तथा सच्चे मित्रों एवं यथार्थ प्रेमीजनों की कमी पाता है। राज्य सेवा में उच्च पदासीन होने का निष्फल प्रयास करता है। उसे अपना स्वार्थ और अपना मतलब सदैव प्रिय रहता है। संकुचित विचारवाला होता है। जीवन में अत्यन्त सामान्य रहता है। भोग-सुख कम उपलब्ध होता है। सामान्य रहन-सहन, सामान्य खान-पान तथा बहुमूल्य सामग्री का सदैव अभाव रहता है। मन-मारकर वह अपना जीवन चलाता है तथा शीघ्र ही हौसला पस्त हो जाता है।

इकसार व सफेद दंत-पंक्ति

जिस मनुष्य के दांत एक जैसे सफेद, चमकीले,पंक्तिबद्ध हों तो व्यक्ति अपने जीवन में खूब सुख प्राप्त करता है। भौतिक सुख-सुविधाएँ सभी प्राप्त करता है तथा सभी सुख-ऐश्वर्य, आनन्द-भोग पाता है। सुन्दर, स्वादिष्ट, मिष्टान्न भोजन प्राप्त करता है। भोजन-वस्त्र, जीवन-यापन की चिन्ता से मुक्त वह प्राणी सीधा-सादा, सच्चा जीवन व्यतीत करता है। वह भोला-भाला तथा मान-सम्मान युक्त, सज्जन व मिष्टभाषी, सदाचारी होता है।

सामने के टेढ़े-मेढ़े दांत

जिस मनुष्य के सामने के दांत टेढ़े-मेढ़े, ऊबड़-खाबड़ हों वह व्यक्ति असत्य से एवं छिपाव-दुराव से काम निकालने वाला होता है तथा सामान्य भोजन पाने वाला तथा अल्प ज्ञान युक्त, ज्ञान की न्यूनता युक्त, रूखा एवं कठोर वचन बोलने वाला तथा ज्ञान की कमी युक्त, ज्ञान, विद्या व वाणी के लावण्य-न्यूनता वाला एवं मनमानी करने वाला होता है।

सामने के दांतों में छिद्र

जिस मनुष्य के सामने के दांतों के बीच-बीच में जरा-जरा-सी, थोड़ी-थोड़ी-सी जगह खाली हो, वह जीव भाग्यशाली, बुद्धिमान, सभाचतुर, बुद्धिमानी व चतुराई भरी बातें कहने वाला, सज्जनतापूर्ण व्यवहार करने वाला, विशुद्ध आचरण युक्त एवं किसी विशेष विषय में निःसंकोच अनेक बातें कहते चले जाने वाला और मुंह पर आई बात को न रोक सकने वाला तथा स्वयं में बड़पन्न का भाव बनाए रखता है।

सामने के ऊपर वाले दो दांत बड़े

जिस मनुष्य के ऊपर वाले सामने के दांत बड़े हों, वह व्यक्ति शक्ति के साथ

बोलने वाला और कुछ मुफ्त की-सी नफा या मुफ्त की साधना पाने वाला तथा समयानुसार भोजन पाने वाला, सम्मान पाने वाला तथा घोर स्वार्थी होता है। शत्रु उनके सामने सदैव नत-मस्तक होते हैं, हार मानते हैं तथा उन्हें अपना स्वाभिमान बड़ा प्रिय होता है।

इधर-उधर के दो दांत, सामने की ऊपर वाली पंक्ति में उठ हुए

जिस मनुष्य के ऊपर वाली पंक्ति में इधर-उधर से दो दांत सामने की ओर खड़े-से होते हैं, वह प्राणी खूब परिश्रमी, मेहनती, कारोबारी अर्थात् व्यापारी, इज्जत व मान-सम्मान खूब ही पाने वाला होता है। उनके मान की निरन्तर वृद्धि होती रहती है। व्यापार में उसको आशातीत सफलता प्राप्त होती है। इच्छानुसार उन्हें भोजन प्राप्त होता है। समाज, जाति, धर्म, घर, परिवार, कुटुम्ब में उन्हें भोजन प्राप्त होता है। भूलकर भी वह शत्रु या बैरी की परवाह नहीं करता। शत्रु का बल क्षीण करने वाला वह होता है। अपना हर कार्य बड़ी चतुराई व सावधानी से पूरा कर लेता है। ऐसा जातक मात्र अपनी स्वार्थ-सिद्धि में ही लगा रहता है। दूसरों की वह परवाह भी नहीं करता है। धर्म, स्वर्ग, नरक, परमार्थ, ईश्वर आदि की वह परवाह नहीं करता है। घर, परिवार का संपूर्ण भार वह अपने मजबूत कधों पर उठाये रहता है। साहसी, वीर, हिम्मती, हठवादी, मनमानी करने वाला, कुछ लापरवाह-सा वह होता है।

दांतों पर दांतों की खड़ी पंक्तियां

जिस व्यक्ति के दांतों की दोनों पंक्तियां ऊपर नीचे वाली मुंह बन्द करते समय दांतों-पर-दांतों की खड़ी हुई दिखाई देती हैं, वह व्यक्ति अल्पज्ञ, अल्प बुद्धि वाला होकर भी स्वयं को बुद्धिमान, भारी ज्ञानी व समझदार समझने के कारण, वाचाल होकर अर्थात् अधिक बोलकर अपनी बात को सत्य सिद्ध करने में लगा रहता है तथा भौतिक जीवन सामान्य परन्तु विनोदी स्वभाव का होने के कारण सदैव मस्त रहता है।

दांत पर दांत

जिस मनुष्य के दांत के ऊपर एक अधिक दांत चढ़ा हो तो वह प्राणी अपनी बात तर्क संगत, पूर्ण बल के साथ एवं ठोस आधार लिए हुए कहता है। उसकी बात में वजन होता है तथा अपनी कही बात का खयाल रखता है, वहीं उस पर गंभीरता से सोचता व विचारता भी है। अपनी बात से दूसरों को वशीभूत करने की क्षमता अपने में रखता है। शत्रु सदैव उनके समक्ष आकर हार मान जाते हैं। शत्रुहन्ता योग भरपूर होता है। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा बढ़ी-चढ़ी रहती है। अपने ऊपर बुजर्गों की दया-दृष्टि सदैव बनी रहती है। स्वतन्त्रता का उपासक व

निर्भीक वाणी तथा साहसी व कहे गए शब्द का मूल्य भली प्रकार वह समझता है।

ऊपर वाला सामने का एक दांत उठा हुआ, एक दांत दबा हुआ

जिस मनुष्य के ऊपर वाली पंक्ति में एक ओर का दांत उठा हुआ हो ओर दबा हुआ हो तो वह प्राणी नम्र, विनम्र तथा नरमाई के साथ-साथ गरमाई भी रखता है। अर्थात् क्रोध और शील दोनों का निर्वाह वह अपने जीवन में करता है। यदि दाहिना दांत बड़ा और बायां दांत छोटा होगा तो क्रोध सामान्य होगा और इस प्रकार छोटे-बड़े तथा उठे-दबे दांतों वाला जीव अपने जीवन में उतार-चढ़ाव, दुःख-सुख, हार-जीत, उन्नति-अवनति के मार्ग से होकर निकलने वाला गूढ़ रहस्य का जानकार, विवेकी तथा समयानुसार अपना मतलब सिद्ध करने वाला, बीच की श्रेणी का जीव होता है।

नीचे का भारी होंठ

जिस मनुष्य के नीचे का होंठ भारी व कुछ बड़ा-सा प्रतीत होता हो वह जीव अपने जीवन में शील-शान्ति का पालन भूलकर भी नहीं करता, अपितु उसका सदैव उल्लंघन करता जाता है। दूसरों के फटे में टांग अड़ाने से वह कभी नहीं चूकता अर्थात् दूसरों के काम में सदैव टांग अड़ाता रहता है। दूसरों की बेइज्जती करने, नीचा दिखाने, उन्हें चिढ़ाने, कष्ट पहुंचाने में उन्हें आनंद आता है। अपना प्रभाव व अपना प्रभुत्व सदैव जमाए रखना चाहता है। मानसिक रूप से बड़ा अहंकारी, अहंवादी व अहम् जताने वाला तथा बातचीत में अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर ही कहता है। किसी प्रकार अपनी इज्जत-आबरू बनाए रखना चाहता है। स्वार्थ का भाव वह चाहकर नहीं छोड़ सकता है। वह अपने जीवन में मादक पदार्थों का सेवन अवश्य करता है।

ऊपर का भारी होंठ

जिस मनुष्य के ऊपर का होंठ भारी होता है, वह जीव कुछ प्रभावशाली व अपने ढंग से बात कहने वाला तथा अपने शब्दों को बड़े ढंग से बड़प्पन के साथ व गम्भीरता युक्त तरीके से व्यवहार में लाता है एवं दूसरों को अपने शब्दों द्वारा प्रभावित करने के लिए चमत्कारिक शब्दों का प्रयोग करने की योजना बनाया करता है। सुन्दर, स्वादिष्ट, मिष्टान्न भोजन खाने का वह इच्छुक होता है। सदैव दूसरों का हित सोचता है एवं अपने संपर्क में आए लोगों को भली सलाह देता है। सज्जनता-युक्त, मान-मर्यादा युक्त जीवन-यापन वह करता है।

दोनों होंठ समान व सुन्दर

जिस मनुष्य के दोनों होंठ समान व सुन्दर हों, तो वह जीव बड़ी नपी-तुली बात

कहने वाला, शब्दों में सत्यता का विशेष ध्यान रखने वाला तथा गहन-गंभीर बातों पर वह विशेष ध्यान दिया करता है। गाली-गलौच, अपशब्द, भद्दा मजाक या अभद्र व्यवहार को सदैव बुरा मानता है। दूसरों का हित-साधन करने व आनंद देने में उसे आनंदानुभूति होती है। वार्तालाप में कोमल शब्दों का प्रयोग करने में उन्हें आनन्द आता है न तथा स्वच्छ, सतोगुणी, मिष्टान्न भोजन पाने वाला, विचारवान, ज्ञानी, सद्‌गुणी एवं विवेकी होता है।

दोनों पतले होंठ

जिस मनुष्य के दोनों होंठ पतले हों, वह जीव अत्यन्त सामान्य स्थित वाला, सामान्य भोजन पाने वाला तथा सामान्य बातचीत व साधारण व्यवहार करने वाला अल्पज्ञ, अल्पज्ञानी, साधारण पढ़ा-लिखा तथा दूसरे लोगों के ज्ञान, बातचीत, महत्त्व के सामने स्वयं को हीन समझता है। अपने शब्दों का खास महत्त्व या मूल्य नहीं समझता है। सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य व आनंद में न्यूनता बनी रहती है। इतने पर भी उसका व्यवहार शान्त व शीलयुक्त अवश्य होता है।

दाहिने गाल पर मस्सा

जिस मनुष्य के दाएं गाल पर मस्सा हो वह मनुष्य खूब धनी, आर्थिक दृष्टि से खूब-सम्पन्न, अर्थोपार्जन में दक्ष, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, शक्ति-सम्पन्न होता है। भाग्य उसका कदम-कदम पर साथ देता है। तथा ऐसे व्यक्ति को अनायास लावारिस, जुआ, घुड़दौड़, लाटरी आदि से बिना कमाया धन भी प्राप्त होता है तथा उस धन का सुख भोगता है। व्यापार करने पर उसे आशातीत लाभ प्राप्त होता है। हां, इनका गृहस्थ जीवन दुःखदायी, कंटकाकीर्ण अविश्वास पर आधारित व परेशानी भरा होता है। धर्म-न्याय की अपेक्षा ऐसा जातक धन को अधिक महत्त्व प्रदान करता है। स्वार्थी वह गजब का होता है। स्वार्थ-साधना के लिए वह कुछ भी उच्च-से-उच्च व निम्न-से-निम्न कार्य कर सकता है। सब मिलाकर उन्हें समय का लाभ उठाने वाला कह सकते हैं।

बाएं गाल पर मस्सा

जिस मनुष्य के बाएं गाल पर मस्सा होता है, वह प्राणी अपने मन में, अपने जीवन में रसिक मिजाज, अनैतिक संबंध बनाने वाला, भोग प्रिय, नैतिक-अनैतिक की परवाह नहीं करने वाला होता है। अपने जीवन-क्रम के क्षेत्र में प्रायः असफल होता है। अपव्ययी एवं धन का कदम-कदम पर दुरुपयोग करता है। किसी के अधीन रहकर या नौकर रहकर अपनी आजीविका चलाया करता है। लौकिक व भौतिक कार्यों को ही अधिक महत्त्व प्रदान करता है। धर्म-कर्म, परलोक या ईश्वर-भक्ति आदि की उसे परवाह नहीं होती है। स्वार्थ-सिद्धि के सामने वह

परवाह नहीं करता— परलोक या परमार्थ की। भोग-विलास को ही प्रधानता देता है।

दोनों गालों पर मस्सा

जिस मनुष्य के दोनों गालों पर मस्सा हो, वह प्राणी अपने भौतिक जीवन में निरन्तर उन्नति-अवनति के चक्कर में डूबता-उतराता रहता है। जहां वह उत्थान-पतन के निरन्तर थपेड़े खाता रहता है वहां यदा-कदा उन्हें अनायास, लावारिस, सट्टे, जुए, घुड़दौड़, लाटरी, ससुराल आदि से भी धन प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति कई बार एक-एक पैसे के लिए मोहताज भी हो जाता है। स्वतन्त्रता का व्यवहार भी उसके जीवन में कम ही होता है। कभी-कभी बंधन का भोग भी भोगना पड़ता है। गृहस्थ जीवन में भी सुख-दुःख का निरन्तर अनुभव करना पड़ता है। सामान्य जीवन व्यतीत होता है तथा स्वार्थपरता इनमें कुछ विशेष ही रहती है। ऐसे व्यक्ति को विचारों में भी निरन्तर उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ता है।

बदन पर रोमॉवली

जिस मनुष्य के सारे शरीर पर बाल हों, वह जीव काम-वासना, भोग-विलास को अधिक महत्त्व दिया करता है। देह-संवंधी हर एक प्रकार के खान-पान, रहन-सहन की उन्नति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील व सतत् प्रयास करता रहता है तथा लौकिक व धार्मिक विचारों को भूलकर भी महत्त्व नहीं देता है। धर्म को वह मानता ही नहीं है। खूब मेहनत व निरन्तर उद्योग-धंधों में लगा रहता है। देह-संबंधी भोगादिक ऐश्वर्य को कभी-कभी विशेष रूप से प्राप्त करने वाला और बड़ी-बड़ी गहरी कूटनीतियों से भी फायदे और उन्नति की विशेष योजनाएं बनाने वाला, गहरी स्वार्थ-सिद्धि में लगा रहता है।

ठोडी व कंठ के मध्य तालु का मांस लटकता हुआ

जिस मनुष्य के ठोढ़ी और कण्ठ के मध्य तलुए का मांस लटकता हुआ हो, तो वह जीव धनोपार्जन में सतत् प्रयत्नशील और सफल होता है तथा भूमि-भवन का पूर्ण योग घटित होता है। भूमि के क्रय-विक्रय द्वारा खूब धन प्राप्त करता है। हां, शिक्षा का प्रायः अभाव रहता है। इतने पर भी उनकी बातें चतुराई भरी होती हैं तथा वाक्-चातुर्य से अपना काम निकालने में वह दक्ष होता है। बाहरी सज्जनता को भली प्रकार बरताव में लाने वाला तथा अपनी स्वार्थ-सिद्ध में जागरूक व सावधान होता है तथा काम-वासना को सदैव वह दबाए रखता है, उजागर नहीं होने देता है। सुख-सुविधाओं का पूरा भोग भोगता है तथा अपने लोगों में खूब मान-सम्मान प्राप्त करने में वह समर्थ होता है। मन से सदैव सुखी तथा इतना होने पर भी पारिवारिक जीवन इनका सुखी नहीं कहा जा सकता है। कुछ-न-कुछ झंझट

लगा ही रहता है। गृहस्थ जीवन का पूरा-पूरा सुख वह प्राप्त नहीं कर सकता है। इतना होकर भी वह अपने बड़प्पन के भाव में न्यूनता नहीं आने देता।

अधिक बाहर निकला कण्ठ

जिस मनुष्य का कंठ बाहर की ओर अधिक निकला हुआ होता है, वह दैहिक रूप से कमजोर होता है तथा परिश्रम व मजदूरी करके अपनी आजीविका यापन करता है। कन्या की अपेक्षा पुत्र सन्तान अधिक होती है। वह आजीवन गृहस्थी के झंझटों में फंसा रहता है, उसे राहत अनुभव नहीं होती है। अपनी बातों से व आवाज से लाभ उठाने वाला एवं सौन्दर्य की ओर विशेष आकर्षित होता है। धर्म का पालन वह नहीं के बराबर करता है। मनमौजी पर हिम्मती अवश्य होता है।

गर्दन के पीछे मांसलता

जिस मनुष्य की गर्दन के पीछे अधिक मांस होने के कारण सिलवटें पड़ती हों ऐसा जीव बहुत बड़ी जिम्मेदारियों से पूर्ण काम को संभालने वाला अर्थात् महत्त्वपूर्ण कार्यों को करने वाला, लम्बी, बड़ी दौड़-धूप करने वाला तथा अपने सिद्धान्तों पर अडिग, स्थिर, दृढ़ रहने वाला और उसी से लाभ उठाने वाला होता है। दया, धर्म को भी वह अपने जीवन में बहुत कम महत्त्व देता है, पर देता अवश्य है। अपनी शक्ति वृद्धि उन्नति और रक्षा करने में ही निरन्तर लगा रहता है। सामाजिक दृष्टि से उसे भरपूर मान-सम्मान प्राप्त होता है। इज्जत के साथ जीवन-यापन करता है।

पतली और लम्बी गर्दन

जिस मनुष्य की गर्दन लम्बी और पतली हो, वह मनुष्य बहुत दूर तक सोचता है तथा किसी कार्य को करने के लिए खूब सोच-समझकर कदम उठाता है। इन्हें दूरदर्शी कहा जा सकता है। घर-परिवार व अपने निकट के वातावरण पर बहुत कम ध्यान दिया करता है। धन की दृष्टि से वह अधिक समृद्धिशाली नहीं होता है तथा सामाजिक मान-सम्मान भी बहुत कम प्राप्त होता है। आशा और सन्तोष के ही बल पर वह अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देता है। परन्तु अवसर आने व देश-काल-परिस्थिति का लाभ उठाकर बहुत लाभान्वित होता है। अधिक जोखिम व जिम्मेदारी भरा बोझ वहन करने में ऐसा आदमी कतराता है। अधिक जिम्मेदारी अपने ऊपर वह नहीं ले सकता है। अपने अन्दर अपनी समझ से बड़ी सतर्कता से कार्य करने वाला स्वार्थमय वृत्ति का होता है।

छोटी व मोटी गर्दन

जिस मनुष्य की गर्दन छोटी, परन्तु मोटी हो वह मनुष्य अपने जीवन में बड़ा सतर्क रहता है तथा अन्यान्य के चक्कर में वह भूलकर भी फंसता नहीं है। अपना

स्वार्थ पूरा करने में वह दक्ष होता है। स्वार्थ-पूर्ति के लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहता है। आत्मबल उसका बढ़ा-चढ़ा रहता है, हिम्मत के बल पर वह बड़े-से-बड़े काम का बीड़ा उठा लेता है। छुपी हुई तरकीबों से एवं गोपनीय ढंग से अपना स्वार्थ पूरा करने में समर्थ होता है। शक्ति-संपन्न होता है।

चौड़ा उठा हुआ सीना

जिस मनुष्य का सीना चौड़ा, उठा हुआ हो, तो वह जातक अपने अन्दर धन कमाने की भारी ललक व शक्ति रखता है तथा अपने बाहुवल की शक्ति का प्रयोग सुचारु रूप से, अर्थोपार्जन में करने वाला स्वतन्त्र एवं मानयुक्त, इज्जत के साथ अपना जीवन-यापन करने वाला होता है। शत्रु सदैव उसके सम्मुख मुंह की खाते हैं। शत्रु सदैव परास्त होते हैं तथा जातक अपने जीवन में प्रभाव से अधिक लाभ उठाने की सामर्थ्य रखता है। समस्या आने, विपत्ति पड़ने या कष्ट आने पर धैर्य पूर्वक उसका वह सामना करने में समर्थ होता है। जीवन में सदैव सुखी, विजयी और उन्नति करने वाला होता है।

छोटा–पतला सीना

जिस मनुष्य का छोटा और पतला सीना हो, वह मनुष्य धनहीन या अल्प धन युक्त तथा थोड़ी हिम्मत वाला तथा थोड़ी-सी जिम्मेवारी के बोझ से न संभलने वाला तथा किसी प्रकार परतन्त्रता युक्त या दबकर नौकरी करके जीवन यापन करने वाला, थोड़ी आय तथा थोड़े प्रभाव का उपयोग करने वाला, सामान्य जीवन जीने वाला प्राणी होता है।

सीने पर रोम

जिस मनुष्य के सीने के ऊपर बाल होते हैं वह अपनी दैनिक दिनचर्या व्यतीत करने लायक आय कर सकने में समर्थ होता है। यथा-अन्न, वस्त्र व सहायक सामग्री, धनादि भोग्य पदार्थ सरलतापूर्वक पाते रहने के कारण से हृदय में हिम्मत पाने वाला तथा जीवन में गुजर करने के लिए एवं हिम्मत को बनाए रखने के लिए कोई-न-कोई तरकीब निकालते रहने वाला तथा शास्त्र रीति से समय व्यतीत करने की परवाह न करने वाला एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए बहादुर होता है।

वाल रहित सीना

जिस मनुष्य के सीने पर जरा-से भी बाल नहीं होते हैं, वह जीव अपनी हिम्मत को कायम रखने के लिए दूसरों के सहारे की परवाह न करने वाला तथा अपने निश्चित किये हुए मार्ग पर ही चलने वाला होता है।

कीड़े-मकोड़ों पर शकुन विचार

१. अनावृष्टि आदि के कुयोग

यदि चींटियां वृक्षादि में निकलें तो अनावृष्टि की आशंका होगी।

यदि चींटियां सिर के ऊपर वाले छत के भाग में निकलें तो शीघ्र ही धन, सम्पत्ति और भोग-सामग्री की सिद्धि होती है।

यदि चींटियां घृत के पात्र में घुसकर एक अहो-रात्रि वहीं रहें तो यह लक्षण धन-नाश का है। सम्भव है कि इस सूचना का अर्थ घर में सेंध लगाकर चोरी होना है।

यदि बहुत-सी चींटियां घर के ऊपर निकलती दिखाई दें, तो चोरी का भय अथवा प्राण भय हो सकता है।

यदि चींटियां चावलों के भरे पात्र में से निकलें तो उस शकुन के फलस्वरूप कुछ दिनों में ही धन की वृद्धि का सुयोग उपस्थित होना सम्भव है।

यदि काले वर्ण की चींटियां स्वर्णादि रखे हुए कोषागार से निकलें तो स्वर्णादि धन की अत्यन्त वृद्धि होती है।

परन्तु जिस घर में पानी की सीलन अधिक हो या घर में भूसा पड़ा हो तो वहां चींटियां निकलने पर कोई फल नहीं समझना चाहिए।

यदि काली चींटियां अकारण ही निकलें और अण्डे रहित हों तो उसका फल वर्षा होना समझना चाहिए।

अन्य मत में यदि चींटियां उत्तर दिशा में निकलें तो सुख देने वाली होंगी।

यदि दक्षिण में निकलें तो लाभप्रद होंगी।

यदि पूर्व में निकलें तो १२ घण्टे तक भयरत रहने की सूचना ही होगी।

यदि पश्चिम दिशा में निकलें तो धन-सम्पत्ति का लाभ व्यक्त करेंगी। यदि अग्निकोण में निकलें तो १२ घण्टे तक अग्नि-भय का सामना करना ही पड़ता है।

यदि नैऋत्य कोण में निकलें तो वस्त्र-लाभ सम्भव है।

यदि वायव्य कोण में निकलें तो ईंधन की प्राप्ति होगी।

यदि ईशान कोण में निकलें तो लड़ाई की सूचक होंगी।

२. कानखजूरा-सम्बन्धी शकुन

यदि किसी कार्यवश घर से जाते समय बायीं ओर कोई कानखजूरा मिल जाए तो शुभ समझा जाता है।

यदि चलते समय कानखजूरा दायीं ओर मिले तो उसे हानिकारक समझें। उस शकुन के फलस्वरूप लड़ाई-झगड़ा या गृह-क्लेश आदि की सम्भावनाएं हो सकती हैं।

यदि मार्ग में चलते हुए कानखजूरा आगा काट जाए तो बिल्ली से भी अधिक हानिकारक समझना चाहिए।

यदि कानखजूरा किसी प्रकार जातक के सिर पर चढ़ जाए तो उसके फलस्वरूप अत्यन्त कष्ट हो सकता है।

३. सर्प-सम्बन्धी शकुन

सभी प्रकार के सर्प भय देने वाले होते हैं। यदि किसी कार्य से जाते समय मार्ग में सर्प दिखाई दे तो उसे अशुभ समझ लौट जाना उचित होता है।

यदि घर से जाते समय धामिनि या धमनी जाति का सर्प बायीं ओर दिखाई दे तो उसे शुभ मानते हैं। शेष सभी जाति के सर्प अशुभ समझे जाते हैं।

यदि धन्वन जाति का सर्प अपने फन को ऊंचा करके बैठा हुआ दिखाई दे तो अत्यन्त शुभ होता है। यदि किसी ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ दिखाई दे तो उच्च पद दिलाने वाला होगा।

यदि मार्ग में काला नाग का जोड़ा रहता हो तो कुछ विद्वानों के मत में वहां गड़ा धन होना चाहिए।

अंगों के फड़कने के शुभाशुभ शकुन फल

अंगों का फड़कना भी शुभाशुभ का सूचक समझा जाता है। प्रत्येक अंग के फड़कने का फल पृथक् माना गया है। मान्यताएं निम्न प्रकार हैं:

१. सिर का फड़कना

सिर के बायीं ओर के भाग का फड़कना इस बात का सूचक है कि वह मनुष्य निकट भविष्य में यात्रा करेगा और यदि वह यात्रा व्यावसायिक हुई तो लाभ थोड़ा ही होगा।

यदि सिर का दायां भाग फड़के तो यह अधिक शुभ समझा जाता है। इसके फलस्वरूप धन की प्राप्ति, किसी राज-सम्मान की उपलब्धि, नौकरी में आकस्मिक रूप से उन्नति, किसी ऊंची प्रतियोगिता-पुरस्कार की प्राप्ति, लाटरी में जीत तथा भूमि-लाभ की सम्भावना समझी जाती है।

यदि सिर का पिछला भाग फड़के, तो वह परदेश-यात्रा का योग बताता हुआ अधिक धन-लाभ की सूचना देता है। परन्तु इसके फलस्वरूप अपने देश में लाभ की सम्भवना कम ही रहती है।

यदि सिर का अगला भाग फड़के तो यह अपने देश या परदेश दोनों में ही धन-सम्मान की प्राप्ति का सूचक है।

यदि समूचा सिर ही फड़के तो यह एक बहुत शुभ शकुन है। दूसरे से धन-प्राप्ति, मुकद्दमे में जीत, राज-सम्मान, धन और भूमि का लाभ यह सभी सम्भावनाएं रहती हैं।

नेत्रों का फड़कना

यदि दायां नेत्र ऊपर की ओर के पलक में फड़के तो धन, यश, आदि की प्राप्ति कराती है। यदि नौकरी में हों तो पदोन्नति हो सकती है। किन्तु नीचे का पलक फड़के तो वह चिन्ता का विषय हो सकता है।

यदि बायें नेत्र का ऊपरी पलक फड़के तो शत्रु से संघर्ष अधिक बढ़ सकता है। यदि नीचे का पलक फड़के तो उसके फलस्वरूप कहा-सुनी हो सकती है और नीचा देखना पड़ता है।

बायीं आंख के नाक की ओर का कोना फड़के तो वह एक शुभ चिह्न होगा। पुत्र-प्राप्ति का सूचक होगा। अथवा किसी शिष्य या छोटी आयु के प्रियजन से भेंट होनी चाहिए।

यदि दायीं आंख फड़के तो यह लक्षण शुभ माना जाता है, किन्तु यदि किसी स्त्री की दायीं आंख फड़कती है तो उसको अशुभ समझा जाता है।

यदि बायीं आंख फड़कती है तो वह अशुभ समझी जाती है, किन्तु यदि किसी स्त्री की दायीं आंख फड़कती है तो उसे अशुभ फल की सूचना मानते हैं।

यदि दोनों नेत्र एक साथ फड़केंतो चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, समान फल का अधिकारी होगा। उसके फलस्वरूप किसी बिछड़े हुए सुहृद मित्र से मिलाप होना चाहिए।

यदि दायां नेत्र पीछे की ओर फड़के तो वह भय, चिन्ता और शोक का कारण हो सकता है। किन्तु बायां नेत्र नीचे की ओर फड़के तो वह शुभ होगा।

यदि बायां नेत्र ऊपर की ओर को फड़के तो उसके फलस्वरूप चिन्ता भय, शोक, लड़ाई आदि की सम्भावना हो सकती है। यदि बायां नेत्र ऊपर की ओर फड़के तो उसे अशुभ नहीं कह सकते। स्त्री को इस फल की विपरीतता दिखाई देता है।

मूंछों का फड़कना

यदि मूंछें फड़कें तो इसका फल भी समयानुसार शुभ या अशुभ हो सकता है। समूची मूंछ फड़कने का मतलब शुभ फल समझना चाहिए। इससे धन-धान्य, दूध-दही-घृत, सवारी तथा ऐश्वर्य आदि की सम्पन्नता का योग बनता है।

यदि मूंछ का दायां भाग फड़के तो शुभ एवं विजय सूचक समझिए। यदि मूंछ का बायां भाग फड़कता है तो वह कहा-सुनी और झगड़े की सूचना देता है।

तालू का फड़कना

यदि कण्ठ की घंटी फड़कती है तो उससे भोगों की प्राप्त होने का आभास मिलता है।

यदि तालु में फड़कन हो तो वह आर्थिक दृष्टि से एक शुभ शकुन समझा जाएगा।

यदि तालु का दायां भाग फड़के तो समझा जाएगा कि रोग उत्पन्न होकर कई दिनों तक परेशान रख सकता है।

यदि तालु का बायां भाग फड़कता हो तो उसके फलस्वरूप हो सकता है कि किसी अपराध में बन्दी रहना पड़े।

यदि दाढ़ी फड़के तो एक अपशकुन होता है। इसके कारण मुकदमे या लड़ाई में हार की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

यदि दाढ़ी का दायां भाग फड़कता हो तो उसका अभिप्राय सुख की प्राप्ति समझनी चाहिए।

किन्तु दाढ़ी का बायां भाग फड़कना अधिक अच्छा समझा जाता है। उसके फलस्वरूप धन और यश दोनों ही मिलने चाहिए।

कण्ठ का फड़कना

यदि कण्ठ का फड़कना तेज हो तो इसके फलस्वरूप इच्छित भोजन मिलता है।

यदि किसी स्त्री के कण्ठ में फड़कन हो तो समझना चाहिए कि उसे कण्ठाहार की प्राप्ति होगी।

यदि कण्ठ का बायां भाग फड़के तो यह लक्षण अच्छी उपलब्धि कराने वाला हो सकता है।

यदि कण्ठ का निचला भाग फड़कता है तो वह अल्प मूल्यों के आभूषणों की प्राप्ति का सूचक होगा।

यदि कण्ठ का ऊपरी हिस्सा फड़के तो उससे स्वर्ण माला आदि मिलने की संभावना समझी जाती है।

यदि कण्ठ की घंटी के नीचे फड़कन होने का अनुभव हो तो शस्त्र-पीड़ा संभव है। यदि फड़कन तीव्र हो तो पीड़ा के घातक होने की आशंका बढ़ जाती है।

कन्धों का फड़कना

यदि कन्धों में फड़कन हो तो उसका फल दायें और बायें के अनुसार शुभ और अशुभ होता है। तीव्र फड़कन से तीव्र फल की आशा समझनी चाहिए।

यदि दायें कन्धे में फड़कन हो तो यह बहुत शुभ है। इसके द्वारा शीघ्र ही धन, वैभव, सम्मान, बिछुड़े हुए भाई से मिलाप होने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

यदि बायें कन्धे में फड़कन हो तो उसके फलस्वरूप रक्त या वात-सम्बन्धी कोई रोग हो सकता है।

पीठ का फड़कना

पीठ के फड़कने का फल भी दाये-बायें भाग के भेद से भिन्न-भिन्न होता है। सामान्य फल के अनुसार शत्रुनाश, राज-सम्मान की प्राप्ति और सर्वकार्यसिद्धि होनी चाहिए।

यदि पीठ दायीं ओर से फड़कती है तो शुभ होती है। उसके फलस्वरूप ऐश्वर्य की प्राप्ति होनी चाहिए।

परन्तु पीठ के बायें भाग का फड़कना अशुभ समझा जाता है। मुकद्दमे में हार या लड़ाई की सम्भावना रहती है। यदि यह भाग मन्द फड़कन युक्त हो तो घर में कन्या का जन्म सम्भव है। किन्तु तीव्र फड़कन अकुशल प्रसव को व्यक्त करता है।

यदि पीठ का ऊपरी भाग फड़के तो धन की प्राप्ति हो सकती है।

यदि पीठ के निचले भाग में फड़कन हो तो बहुत से मनुष्य के अनुयायी बनने का आभास देती है।

उदर का फड़कना

यदि उदर फड़के तो यह अन्न की समृद्धि की सूचना देता है। परन्तु दायें-बायें के भेद से उसके फल में भी भिन्नता आ जाती है।

यदि उदर का दायां भाग फड़के तो घर में ऐश्वर्य की वृद्धि, सुख और प्रसन्नता का आभास देता है।

यदि उदर का बायां भाग फड़कता है तो मन्द गति से वृद्धि व्यक्त करता है।

किसी-किसी के मत में यह धनाभाव का शकुन है, इसलिए शुभ नहीं है।

यदि पेट का ऊपरी भाग फड़के तो हानिकारक हो सकता है, किन्तु नीचे के भाग का फड़कना अच्छे-अच्छे भोजनों की प्राप्ति का सूचक समझा जाता है।

घुटनों का फड़कना

यदि दायें घुटने में फड़कन का अनुभव हो तो यह स्वर्ण प्राप्ति का शकुन है।

यदि दायें घुटने का निचला भाग फड़के तो यह शकुन शत्रु से सामना होने और उसके खाली चले जाने की सूचना देता है।

यदि बायें घुटने का निचला भाग फड़के तो, जो कार्य किया जाए उसके पूर्ण होने की आशा हो सकती है।

यदि बायें घुटने का ऊपरी भाग फड़के तो उसका सामान्य फल समझना चाहिए।

अशुभ शकुन

कुछ लोगों की मान्यता है कि यदि बादल छाये रहें, बिजली भी कड़के, परन्तु पानी न बरसे तो कुछ अशुभ शकुन है। यद्यपि यह किसी शास्त्र का विषय नहीं, पुराने लोगों के अनुभव पर आधारित किंवदन्ती का विषय है।

दिन में तारे टूटकर गिरना अत्यन्त अशुभ अपशकुन माना जाता है बड़े-बूढ़ों की मान्यता है कि यह घटना जिस देश में घटित होती है, उस देश के लिए सामूहिक रूप से अशुभ है।

दिन में स्वप्न दिखे तो उसका शुभाशुभ फल स्वप्न के अनुसार होता है। कुछ लोग कहते हैं कि दिवा-स्वप्न का फल रात्रि स्वप्न के विपरीत होता है। स्वप्न के एक अशुभ फल के विषय में शास्त्र का मत देखिए—

मूत्रं वा कुरुते स्वप्न पुरीष बाति लोहितम्।
प्रतिवुद्धेत तदाशिवल्लभते सोऽर्थ नाशनम्॥

अर्थात—स्वप्न में मूत्र या पुरीष करें तो उसके फलस्वरूप धन का नाश होता है।

यदि यात्रारम्भ में कोई तेली सामने से आ जाए या दायीं और से आ जाए तो वह अशुभ माना जाता है।

यदि यात्रा के प्रारम्भ में कोई खाली डलिया लिये हुए सामने या दायें आ जाए तो वह अशुभ माना जाता है।

यदि सामने से कोई गाय आ जाय तो वह भी अशुभ समझा जाता है।

यदि कोई स्त्री या पुरुष सामने से खाली बर्तन लेकर आये तो अशुभ समझा जाता है।

यात्रारम्भ, यात्रान्त अथवा कार्यारम्भ और कार्य-समाप्ति पर यदि कोई छींक दे तो वह अशुभ शकुन समझा जाता है। परन्तु अनेक व्यक्तियों के मत में सामने की छींक का अशुभ फल होता है, पीठ पीछे की छींक का नहीं।

यदि चलना आरम्भ करते समय या कार्यारम्भ के समय कुत्ता कान पटपटाने लगे तो वह शुभ नहीं माना जाता।

यदि मार्ग चलते में कोई बिल्ली आगा काट दे अर्थात् बायें से दायें या दायें से बायें को निकल जाए तो वह भी अशुभ समझा जाता है। किसी-किसी के मत में बिल्ली बायें से दायीं ओर को सामना काटे तो अधिक अशुभ और दायें से बायीं ओर को काटे तो कम अशुभ है।

यदि किसी के घर पर चील अथवा गिद्ध आकर बैठ जाए तो वह अपशकुन माना जाता है।

यदि किसी मकान पर आकर कौआ बोलने लगे तो उसे मेहमानों के आने अथवा अशुभ समाचार मिलने का सूचक समझते हैं।

यदि मार्ग में कोई मनुष्य भैंसे पर सवार होकर आता दिखाई दे या मिले तो शुभ शकुन नहीं समझा जाता है।

यदि मार्ग में कोई जटाधारी साधु-संन्यासी दिखाई दे तो उसे अशुभ मानते हैं।

यदि नौ स्त्रियां साथ-साथ सामने आती हुई दिखाई दें तो यात्रा की सफलता सन्देहास्पद होती है।

यदि तीन ब्राह्मण एक साथ सामने आयें तो भी यात्रा सफल नहीं होती। इसी प्रकार एक साथ दो वैश्यों या एक शूद्र का सामने आना भी सफलताप्रद नहीं माना जाता।

यदि कोई व्यक्ति चिकने वस्त्र पहिने हुए आगे आ जाए तो वह भी ठीक शकुन नहीं समझा जाता।

यदि कोई स्त्री या पुरुष भींगे हुए वस्त्र पहिने हुए आ जाए तो वह भी ठीक शकुन नहीं समझा जाता।

यदि कोई ब्राह्मण अपने कर्म से हीन तथा तिलक-रहित सामने से आ जाए तो वह भी शुभ नहीं माना जाता।

यदि यात्रारम्भ में कोई हीजड़ा सामने आ जाए तो वह भी कार्य की सम्पन्नता में संदेहास्पद है।

शुभ शकुन

जिस प्रकार अशुभ शकुनों से हानि, असफलता, अधिपतन आदि की सम्भावना समझी जाती है, उसी प्रकार शुभ, शकुनों से लाभ, सफलता, सौभाग्यवर्धन आदि का होना माना जाता है। यहां कुछ शुभ शकुनों के विषय में बनी हुई धारणा पर भी प्रकाश डाला जा रहा है।

यदि कोई गौर वर्ण की स्त्री, श्वेत वस्त्राभूषण, श्वेत माल्य एवं श्वेत ही विलेपन आदि किए हुए, यात्रारम्भ के सामने आ जाए तो वह अत्यन्त शुभ शकुन समझा जाता है। उसे अभीष्ट फल की प्राप्ति संभव है।

यदि कोई स्त्री या पुरुष पानी अथवा दूध से भरा हुआ पात्र लेकर सामने आ जाए तो वह यात्रा या कार्यारम्भ के लिए गमन करने पर सफलता का सूचक है। इस विषय में एक मान्यता यह भी है कि बर्तन कम भरा हुआ होगा तो उसका फल भी उतना ही कम लाभप्रद होगा।

इसी प्रकार कोई मेहतर या मेहतरानी यात्रारम्भ के समय सामने से मल अथवा कूड़े आदि से भरा हुआ डलिया लेकर आता हुआ दिखाई दे ,तो वह शुभ होता है। यदि दायीं ओर हो तो भी शुभ है, किन्तु बायीं ओर होने पर उसका कोई फल नहीं होगा।

यदि यात्रारम्भ में सामने से कोई कपिला गाय आती हुई मिले, तो बहुत ही शुभ है। दायीं ओर हो तो भी शुभ समझना चाहिए। अन्य वर्ण की गायों के सामने या दायें होने से अल्प सफलता का आभाम मिलता है। किन्तु यदि कोई गाय बायीं ओर मिले तो उससे कोई फल नहीं होता। किसी-किसी के मत में बायीं और मिलने वाली गाय अशुभ शकुन बन जाती है।

यदि कोई कार्य के लिए जाते हुए मनुष्य के आगे कोई कुत्ता दायें से बायीं ओर चला जाए अर्थात् दायें से बायां आगा काट दे तो वह शुभ शकुन माना जाता है। ऐसा होने से कार्य में शत-प्रतिशत सफलता मिलेगी, ऐसा समझा जाना चाहिए।

यदि यात्रारम्भ के समय सामने से कोई पुरुष या सौभाग्यवती स्त्री गुड़ की भेली लिये हुए आती हुई दिखाई दे, तो यह शकुन भी बहुत शुभ समझा जाता है। जानकारों के मत में यह भाग्योदय की सूचना देने वाला शकुन है।

यदि घर से चलते समय कोई स्त्री या पुरुष हाथ में नारियल, छुहारे, सुपारी, ऋतुफल आदि वस्तुएं लेकर आता हुआ मिले तो यह भी अत्यन्त शुभ है।

यदि सामने से कोई व्यक्ति मिठाई, मधु, घृत, पेठा, पुष्पमाला, आदि पदार्थों को लिये हुए आ जाए तो इसके फलस्वरूप सभी चिन्ताएं होकर कार्य-सिद्धि संभावित है।

यदि कोई व्यक्ति हरे पान, पान का बीड़ा, गोबर, फल, पुष्प ध्वजा, पताका, आदि लाता हुआ मिले, तो यह शुभ शकुन यात्रारम्भ और लौटकर घर में घुसने के समय होने पर शुभ समझे जाते हैं। यही फल, छात्र, छात्रा, छाता, चंवर, पंखा, भरा हुआ कलश आदि के शकुनों को भी समझा जाता है।

दूध, दही, घृत, शहद, चावल, पका हुआ अन्न, सरसों, चन्दन से भरी हुई कटोरी, शंख मिट्टी, दर्पण आदि के शकुनों का भी यही शुभ फल समझिए।

घर से जाते या घर से लौटते समय यदि मार्ग में देव-प्रतिमा लायी जाती हो तो यह बहुत ही शुभ शकुन है। इससे सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

यदि मार्ग में भेरी आदि वाद्य बजते हुए मिलें तो शुभ है। हाथी, अश्व, बकरी, गाय आदि भी सफलता के सूचक लक्षण हैं। विना धुएं की अग्नि, सुन्दर वस्त्र, कमल, अंकुश, रत्न, पशुओं का समूह, नवीन शाक इत्यादि के शकुन भी शुभ समझे जाते हैं। इसके होने से कार्य-सिद्धि का स्पष्ट आभास मिलता है।

श्वेत घोड़ों से या बैलों से जुड़ा हुआ सारथी युक्त रथ या श्वेत वर्ण के वाहन मार्ग में मिलें तो यह भी सिद्ध फल प्राप्ति के सूचक समझे जाते हैं।

इस प्रकार के अनाज या सिद्ध अन्न शुभ होते हैं। यदि वे मार्ग में दिखाई दें, तो सभी कार्यों में सफलता मिलने का लक्षण समझना चाहिए।

प्रसन्न मुख वाले, स्वस्थ, वृद्ध पुरुष, ईश्वर-भक्तों तथा सदाचार का पालन करने वाले मनुष्यों का दर्शन सदैव शुभ होता है। यदि ऐसे लोग मार्ग में मिलें तो कार्य-सिद्धि में पूर्ण सफलता प्राप्ति का सूचक समझना चाहिए।

यदि मार्ग में कोई हाथी अपने दायें दांत पर सूंड़ रखे हुए दिखाई दे तो यह बहुत ही अच्छा शकुन समझा जाता है। परन्तु यदि वह बायें दांत पर सूंड़ रखे तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि कोई सुहागिन स्त्री अपने सिर अथवा हाथ में गोबर लिये हुए आती दिखाई दे, तो यात्रा प्रारम्भ करने में यह शकुन अत्यन्त शुभ समझा जाता है।

यदि सामने से कोई व्यक्ति मधु या मांस लेकर आता हुआ दिखाई देता है तो यह भी शुभ शकुन है।

यदि कोई धोबी धुले हुए वस्त्रों को लिए हुए आता दिखाई दे तो अच्छा शकुन है। परन्तु बिना धुले वस्त्रों को लिये हुए आए तो उसका कुछ भी फल नहीं होता।

यदि कोई व्यक्ति नयी भरी हुई रजाई लिए आता दिखाई दे तो यह भी शुभ है।

यदि कोई मनुष्य रंगे हुए वस्त्र लिये हुए या पहने हुए सामने से आए तो शुभ है। परन्तु यदि वह काले वस्त्र धारण किए है तो शुभ नहीं है।

यदि किसी कार्य के लिए जाते समय वर वेश में कोई पुरुष विवाह के लिए जाता हुआ मिले अर्थात् सेहरा आदि धारण किए हुए कोई दूल्हा दिखाई दे तो यह शकुन बहुत अच्छा माना जाता है। इसके फलस्वरूप इच्छाओं की पूर्ति सम्भव है।

यदि मार्ग चलना आरम्भ करते समय सामने या दायीं ओर से कोई सांड़ गर्जन करता हो तो वह बहुत शुभ है। यदि वह गर्जना पीछे या बायीं ओर से हो तो भी अशुभ नहीं है, वरन् अल्प फलदायक होगी।

यदि सामने से कोई बालक हंसता हुआ आता दिखाई दे तो श्रेष्ठ माना जाता है। इसके फलस्वरूप इच्छित फल की प्राप्ति के साथ सुयश-प्राप्ति भी होती है।

हरे पत्तों की बन्दनवार यात्रा आरम्भ में सामने आ जाए तो बहुत शुभ होता है। हरी दूब भी तत्काल ही अनुकूल फल देने वाली होती है। हरे केले का पत्ता, पान, सिंहासन, कपूर, जलती हुई अगरबत्ती, जल या दूध का कलश, देव-मूर्ति युक्त सिंहासन आदि सभी शुभ शकुन माने जाते हैं।

यह तो हुए कुछ शुभ एवं अशुभ शकुनों के उदाहरण। इसी प्रकार अन्यान्य शुभाशुभ शकुनों के विषय में यथास्थान जानकारी दी जाएगी। यहां प्रसंग यह है कि मनुष्य अपने अनुभव के आधार पर शकुनों का फल समझता आया है। उसी के आधार पर आए दिन शकुनों के नये-नये अनुभव होते रहे और उनका भण्डार किंवदन्तियों और आलेखों के रूप में भरता गया।

अन्य अंगों के लक्षण

शरीर के अन्य अंगों के लक्षण नियमानुसार समझना चाहिए।

आंखें

आंखों के सम्बन्ध में प्राच्य पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार यह है—

जिस जातक की आंखें बाहर को उभरी हुई हों, वह किसी काम को समाप्त किए बिना अधूरा नहीं छोड़ता। वह छोटी-से-छोटी बातों को भी विस्तार से स्मरण रखता है।

बड़ी गोल तथा स्वच्छ आंखों वाले व्यक्ति विपरीत यौन वालों को अपनी ओर अधिक आकर्षित करते हैं। ऐसे व्यक्ति निर्भीक, अग्रगामी तथा साहसी होते हैं।

जिनकी दोनों आंखें दूर-दूर हों, वे स्पष्टवादी तथा खरे होते हैं। उनका दृष्टिकोण सीधा और साफ होता है।

यदि आंखें एक-दूसरे के समीप हों, तो जातक चालाक और चंचल होता है।

तिरछी आंखों वाला व्यक्ति कांइयां तथा तिकड़मी होता है, परन्तु वह दूसरों के अधिकारों का भी ध्यान रखता है।

अनार के पुष्प जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति भू-स्वामी होता है।

व्याघ्र के समान नेत्रों वाला व्यक्ति क्रोधी होता है।

मुर्गे जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति झगड़ालू होता है।

बिल्ली जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति चालाक, धूर्त, हिसंक और अधमी परन्तु धनी होता है।

मोर और नेवले जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति मध्यम श्रेणी के होते हैं।

काली आंखों वाला व्यक्ति वासनात्मक प्रवृत्ति का, कांइयां तथा तिकड़मी होता है।

भूरी आंखों वाला व्यक्ति सज्जन, स्वार्थहीन तथा अस्थिर स्नेह वाला होता है।

नीली आंखों वाला व्यक्ति लोक-प्रिय तथा दृढ़ निश्चयी होता है। स्लेटी रंग की आंखों वाला व्यक्ति मनमौजी तथा रंगीन तबियत वाला (आशिक मिजाज) होता है। ऐसे लोग विलासी भी होते हैं।

आंखों की सफेदी गाय के दूध जैसी हो और पुतलियां काली हों तो उसे अत्यन्त शुभ लक्षण समझना चाहिए।

गधा, भैंसा अथवा सर्प जैसी आंखों वाला व्यक्ति की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

ऊंट जैसी आंखों वाले व्यक्ति पापी तथा निर्दयी होते हैं।

बड़े और टेढ़े नेत्रों वाले पुरुष स्त्रियों के वश में रहते हैं।

बैल अथवा कोंच जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

हंस अथवा घोड़े जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति प्रजा-पालक, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न तथा लोकप्रिय होता है।

औड़ी आंखें वाले व्यक्ति क्रूर होते हैं।

हरिण जैसी आंखों वाले पुरुष पाप-बुद्धि होते हैं।

नेत्र-प्रान्तों में कुछ लालिमा हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

एक ओर को ढालू तथा टेढ़े नेत्रों वाले व्यक्ति चोर होते हैं।

हाथी जैसी आंखों वाले व्यक्ति सेनापति होते हैं।

कमल दल जैसी आंखों वाले व्यक्ति धनवान होते हैं।

जिनकी आंखों कीं पुतलियां अत्यधिक काली हों, वे महादुष्ट होते हैं। एक आंख वाले व्यक्ति (काने) धूर्त और चालाक होते हैं।

मेढक अथवा कौए जैसी आंखों वाले व्यक्ति अधम, परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

मटमैली आंखों वाले व्यक्ति भी अधम परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

उन्नत-नेत्रों वाले व्यक्ति सौभाग्यशाली होने पर भी अल्पायु होते हैं।

भ्रू-भौंह

भौंहों के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार संक्षेप में निम्नानुसार समझना चाहिए।

यदि भौंहें द्वितीया के चन्द्रमा के समान टेढ़ी तथा गोलाई लिये हुए हों, तो उन्हें शुभ समझना चाहि। ऐसी भौंहों वाला जातक धनवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

यदि भौंहें बड़ी तथा परस्पर मिली हुई हों, तो प्राच्य विद्वानों के मतानुसार इसे शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का, सौन्दर्य-प्रेमी, भोगी तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत से दोनों भौंहों के बीच में स्थान जितना कम होता है, जातक उतना ही कम स्पष्टवादी तथा सन्देहशील होता है। यहां तक कि कभी-कभी वह बेईमानी भी कर बैठता है।

नाक के ऊपरी भाग से आरम्भ होकर दोनों दिशाओं में गोलाई लिये हुए एक दूसरी से अलग बड़ी, उन्नत, लम्बी, पतली, श्याम रंग वाली तथा मुलायम वाली भौंहें प्राच्य विद्वानों के मतानुसार शुभ होती हैं। पाश्चात्य-विद्वानों के मत में ऐसी भौंहों वाला जातक अधिक निर्भीक तथा स्पष्टवादी होता है।

यदि दोनों भौंहें बीच में से खंडित हों अर्थात् उनके रोयें बीच में से उड़े हुए दिखाई दें अथवा अन्य किसी कारण से वे एकसार रोयें वाली न हों तो ऐसा जातक निर्धन तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि केवल एक ही भौंह खण्डित हो तो अशुभ फल आधे परिणाम में होता है।

यदि भौंहें ऊंची-नीची हों तो मनुष्य दरिद्र होता है।

यदि भौंहें बीच में झुकी हुई हों तो उसका पर-स्त्रियों से प्रेम होता है।

यदि भौंहों पर रोम बहुत अधिक, बहुत कम, बहुत कड़े अथवा पीले रंग के हों तो ऐसी भौंहों को अशुभ समझना चाहिए।

हलकी तथा कमानीदार भौंहों वाला व्यक्ति कलात्मक रुचि तथा कोमल हृदय वाला होता है।

यदि भौहें आंखों से अधिक ऊंची उठी हुई हों तो जातक निर्बल मन का तथा अनिश्चयी होता है।

यदि भौंहे बहुत नीचीं हों और उनमें वक्रता का अभाव हो तो जातक दृढ़ संकल्प वाला होता है।

मोटी और सीधी भौहों वाला व्यक्ति व्यावहारिक स्वभाव का होता है और वह किसी भी काम को आरम्भ करके उसे पूरा किए बिना चैन नहीं लेता।

विषम, घनी और झाड़ीदार भौंहें व्यक्ति के ढीले-ढालेपन को प्रकट करती हैं। ऐसा व्यक्ति उल्लेखनीय रूप से चतुर, दूसरों को प्रभावित करने वाला, विलक्षण विचारों वाला, परन्तु अस्थिर व्यक्तित्व का होता है।

बरौनी

सूक्ष्म, सुदृढ़, सघन तथा एकदम काली बरौनियों वाले जातक दीर्घायु, सौभाग्यशाली तथा धनी होते हैं। भिन्न प्रकार की बरौनियों वाले व्यभिचारी तथा पापी होते हैं।

पलकें

जिस व्यक्ति की पलक नहीं झपकती, वह धनहीन होता है। पांच सैकंड में एक बार पलक गिराने वाले व्यक्ति निर्धन, दस सैकंड में एक बार पलक गिराने वाले दूसरों के आश्रित, पन्द्रह सैकंड में एक बार पलक गिराने वाले धनी, यथा बीस या पच्चीस सैकंड में एक बार पलकें गिराने वाले व्यक्ति धनी, भोगी तथा दीर्घायु होते हैं।

दृष्टि

जिनकी दृष्टि में चिकनाई हो वे धनवान तथा भोगी होते हैं।

जिनकी दृष्टि में दैन्य हो, वे दरिद्र होते हैं।

जिनकी दृष्टि गूढ़ हो वे महत्त्वशाली होते हैं।

मोटी दृष्टि से देखने वाले क्रूर तथा अविचारी होते हैं।
सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाले निर्धन होते हैं।
स्थूल दृष्टि से देखने वाले भाग्यशाली होते हैं।
नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि रखने वाले व्यक्ति विद्वान होते हैं।
जिनकी दृष्टि में श्यामता हो, वे भाग्यवान होते हैं।
ऊंची दृष्टि से देखने वाले पुण्यात्मा होते हैं।
नीची दृष्टि से देखने वाले पापी होते हैं।
तिरछी दृष्टि से देखने वाले क्रोधी होते हैं।
सीधी दृष्टि से देखने वाले सामान्य तथा सरल होते हैं।
सर्प जैसी दृष्टि से देखने वाले क्रूर होते हैं।
मुर्गे तथा बिल्ली की दृष्टि से देखने वाले पापी होते हैं।

कान

छोटे कानों वाले व्यक्ति भीरु, कृपण, परन्तु परिमार्जित रुचि के और स्नेही प्रकृति के होते हैं।

पाश्चात्य मतानुसार कान जितने बड़े होते हैं, जातक के स्वभाव में उतनी ही रुक्षता होती है।

कान सिर के समीप स्थित हो तो जातक भावुक स्वभाव का होता है। परन्तु संकट के समय अच्छे साहस का परिचय देता है।

कान सिर के बाहर की ओर निकले हुए हों तो व्यक्ति कृपण तथा असंस्कृत रुचि का होता है।

प्राच्य मतानुसार बड़े कानों वाले व्यक्ति धनी होते हैं।
लम्बे तथा मांसल कानों वाले व्यक्ति सुखी होते हैं।
जिनके कानों के ऊपर रोयें हों, वे दीर्घायु होते हैं।
चपटे कानों वाला व्यक्ति अपमृत्यु का शिकार होता है।
जिसके कानों में नसें दिखाई देती हों वह व्यक्ति हिसंक स्वभाव का होता है।
मुलायम, गोल तथा सुन्दर कानों वाला व्यक्ति सुखी होता है।
चूहे जैसे कानों वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है।
भाले की नोक जैसे कानों वाला व्यक्ति सेनापति होता है।
कुरूप कानों वाले व्यक्ति अल्पायु तथा दरिद्र होते हैं।

कान बड़े हों, परन्तु कान के छिद्र छोटे हों तो ऐसे व्यक्ति राजा अथवा अत्यन्त ऐश्वर्यशाली होते हैं।

जो कान कनपटी के साथ सुन्दरतापूर्वक जुड़े हुए हों तो वे श्रेष्ठ माने जाते हैं।

नाक

तोते जैसी नाक वाले व्यक्ति राजा होते हैं अथवा उच्चपद प्राप्त करते हैं।

वड़ी नाक वाले व्यक्ति भोगी होते हैं।

सीधी नाक वाले व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं।

टेढ़ी-मेढ़ी अथवा आगे से मोटी नाक वाले व्यक्ति पापी होते हैं।

सूखी हुई-सी नाक वाले व्यक्ति दीर्घजीवी होते हैं।

टेढ़ी नाक वाले व्यक्ति चोर होते हैं।

चपटी नाक वाले पुरुष की मृत्यु स्त्री के कारण होती है।

आगे से कुछ झुकी हुई नाक वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

जिनकी नाक दायीं ओर को झुकी हुई हों, वे क्रूर होते हैं।

जिनकी नाक आगे से दो भागों में विभक्त हो, वे निर्धन होते हैं।

वहुत वड़ी या वहुत छोटी नाक वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं।

नाक के छिद्र छोटे हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

नीचे की ओर झुकी हुई नाक वाला व्यक्ति मनमौजी होता है। छोटी तथा चपटी नाक वाला व्यक्ति विनोदी स्वभाव का तथा दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

नाक के छिद्र वड़े हों तो जातक विषयासक्त होता है।

छींकना

धनी लोग केवल एक बार छींकते हैं।

एक साथ चार बार छींकने वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

एक साथ दो या तीन बार छींकने वाला व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। इससे भी अधिक एक बार एक साथ छींकने वाला व्यक्ति अशुभ तथा दोषयुक्त माना गया है।

होंठ और अधर

ऊपर के होंठ को ओष्ठ कहा जाता है, तथा नीचे के होंठ को 'अधर' कहा जाता है। इन दोनों को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

जिनके अधर विम्ब-फल के समान लाल, पतले, सीधे हों, वे धनढ्य तथा ऐश्वर्यशाली होते हैं।

जिनके अधर एपल-पुष्प की भांति लाल हों वे विद्वान होते हैं।

जिनके अधर कोमल, चिकने तथा मुलायम हों, वे धनी तथा सुखी होते हैं।

जिनके अधर मूंगे के समान कांतियुक्त हों, वे उच्च अधिकारी होते हैं।

ऊपर का होंठ कटा हुआ, रूखा या भद्दे रंग का हो तो जातक दरिद्र होता है।

ऊपर का होंठ मोटा हो, तो जातक भाग्यशली होता है, परन्तु यदि अधिक

बड़ा हो तो भी भीरु स्वभाव का होता है।

ऊपर का होंठ छोटा हो तो जातक भोगी होता है, यदि अधिक छोटा हो तो दुःखी होता है।

मोटे होंठ विषय लोलुपता के चिह्न समझने चाहिए, परन्तु उसका स्नेह निष्कपट होता है।

जिसका निचला होंठ (अधर) बाहर की ओर निकला हुआ हो, वह भोजन भंट्ट होता है, परन्तु दूसरों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने वाला होता है।

यदि ऊपर का होंठ नीचे की ओर लटका हुआ हो तो, ऐसा व्यक्ति झमेलों में नहीं पड़ना चाहता, परन्तु किसी विपत्ति के समय वह उत्तरदायित्व का निर्वाह करने वाला तथा औरों के लिए सहायक भी सिद्ध हो सकता है।

जिस व्यक्ति के होंठ दोनों किनारों पर नीचे की ओर मुड़े हों तो, वह मनहूस तथा निराशावादी होता है। यों, उसमें दृढ़ता, सच्चाई तथा ईमानदारी पूर्ण मात्रा में पायी जाती है।

यदि दोनों होंठ परस्पर सटे हुए न रहते हों और जिनके कारण मुंह हमेशा हर समय खुला प्रतीत होता हो, तो ऐसे होंठों वाले जातक में गम्भीरता का अभाव होता है। वह जीवन के सुखों का शौकीन, परन्तु निम्न श्रेणी की बुद्धि वाला होता है।

जिसके दोनों होंठ दृढ़ता से बन्द रहते हों, वह व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसे व्यक्ति पर पूरा भरोसा किया जा सकता है।

ऊपर का होंठ आगे की ओर निकला हुआ हो तो, जातक बुद्धिमान तथा मधुरभाषी होता है।

नीचे का होंठ बहुत पतला तथा अधिक लम्बा हो तो, जातक दरिद्र होता है।

ऊपर का होंठ फटा हुआ हो तो, उसे दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

यदि होंठ इस प्रकार खुले रहते हों कि उनके भीतर दांतों का ऊपरी मसूढ़ा दिखाई दे, तो जातक स्वार्थी होता है।

दांत

श्वेत चमकीले, एकसार पंक्तिबद्ध, समान आकार के स्वच्छ, सुन्दर दांतों वाला व्यक्ति सुखी तथा धनवान होता है। लम्बे, बड़े तथा बाहर निकले हुए दांतों वाला व्यक्ति विद्वान होता है। यदि ऐसे दांत बड़े हों, तो दीर्घायु और सब पर दया करने वाला होता है। यदि छोटे हों, तो अल्पायु होता है।

दांतों के मसूढ़े दिखाई न देते हों तो जातक सत्यवादी होता है।

चूहे के समान छोटे, अत्यन्त तीक्ष्ण तथा परस्पर मिले हुए दांतों वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है।

यदि दांत-पर-दांत रहते हों, तो जातक बन्धु-नाशक होता है।

राक्षस अथवा बन्दर के समान विकृत, रूखे तथा थोड़े-थोड़े अन्तर पर रहने वाले दांत अशुभ होते हैं। टेढ़े तथा विषम दांत (कोई छोटा तथा कोई बड़ा) दोनों अशुभ फलकारक होते हैं।

चिकने दांतों वाला व्यक्ति धनवान् तथा गुणवान होता है।

मुँह में सब मिलाकर २८ दांतों वाला व्यक्ति सुखी, २९ दांतों वाला व्यक्ति दुःखी, ३० दांतों वाला व्यक्ति कभी सुख और दुःख में रहने वाला, मतान्तर से धनी, ३१ दांतों वाला भोगी तथा ३२ दांतें वाला ऐश्वर्यवान, गुणवान, विद्वान, यशस्वी, सुखी तथा राजा अथवा राजा के समान होता है।

जिह्वा

जीभ का अग्रभाग चिकना व छोटा, नीचा तथा लाल हो तो जातक विद्वान तथा श्रेष्ठ वक्ता होता है।

कमल-पत्र की भांति फैली हुई उचित परिमाण वाली लाल रंग की जीभ हो तो, जातक उच्चपद प्राप्त करता है।

जिसकी जीभ का रंग पीला हो, वह व्यक्ति दुःखी तथा मूर्ख होता है।

जीभ का रंग काला हो तो, जातक दास वृत्ति करता है।

जीभ का रंग सफेदी लिये हो तो जातक आचारहीन होता है।

यदि सम्पूर्ण जीभ का रंग एक समान हो, या दो रंग की-सी दिखाई देती हो तो जातक पापी होता है।

मोटी जीभ वाला रूखे स्वभाव का होता है।

तालु

तालु का रंग काला हो, तो जातक दुःखी, निर्धन तथा कुल को नष्ट करने वाला होता है।

तालु में कुछ पीलापन हो, तो उसे शुभ समझना चाहिए।

लाल रंग का तथा बड़े आकार का तालु शुभ होता है।

तालु का रंग सफेद हो तो जातक धनी होता है।

उत्तम रंग वाले, उत्तम आकृति वाले तथा चिकने तालु को शुभ तथा खुरदरे, फटे, रूखे तथा विकृत तालु को अशुभ फलदायक समझना चाहिए।

कपोल

कमल दल के समान कान्तियुक्त, भरे हुए तथा उन्नत कपोलों (गाल) वाला व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, उच्चपदाधिकारी, धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

भीतर को धंसे हुए, मांसहीन तथा कम रोएं वाले गालों वाला जातक दीन,

दुखी, दास वृत्ति करने वाला तथा भाग्यहीन होता है।

चिबुक और हनु

होंठ के नीचे वाले भाग को 'चिबुक' तथा ठोड़ी तथा दोनों गालों के नीचे एवं ठोड़ी के दोनों ओर के भाग को हनु कहते हैं।

होंठो के नीचे गोल तथा भरी हुई ठोड़ी कही गई है। ऐसी ठोड़ी वाला व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है। ऐसे व्यक्ति जीवन के आनन्द का पूरा-पूरा उपभोग करते हैं।

पतली, बहुत बड़ी तथा दो भागों में बंटी हुई ठोड़ी वाला व्यक्ति दरिद्री होता है।

कोमल तथा मोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति सुखी होता है। चपटी ठोड़ी वाला जातक कठोर हृदय का तथा लोभी होता है।

नुकीली ठोड़ी वाला जातक बुद्धिमान, अहंकारी तथा विवेकशील होता है।

छोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति डरपोक होता है।

गुदगुदी ठोड़ी वाला जातक भोगी होता है।

गुदगुदी ठोड़ी में गड्ढा भी हो, तो जातक सुख एवं विविध प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला होता है।

अधिक बड़ी, अधिक कृश तथा अधिक छोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति निर्धन तथा भ्रमणशील होता है।

ठोड़ी और होंठ के मध्य भाग (हनु प्रदेश) में गहरा गड्ढा हो, तो ऐसे जातक की बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है।

हनु प्रदेश दीर्घ हो, तो जातक में दृढ़ता होती है।

हनु प्रदेश टेढ़ा हो, तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

यदि हनु प्रदेश के दोनों भाग बड़े हों, तो जातक विजयी तथा यशस्वी होता है।

ग्रीवा (गर्दन)

चपटी, शुष्क तथा शिरायुक्त ग्रीवा (गर्दन) वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

भैंस के समान मोटी गर्दन वाला व्यक्ति शूरवीर होता है।

बैल जैसी गर्दन वाले व्यक्ति की मृत्यु शत्राघात से होती है।

जिसकी ग्रीवा में तीन रेखाएं पड़ती हों, वह राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

बहुत छोटी (कोत) गर्दन वाले व्यक्ति साहसी, बलवान, अविश्वासी, धूर्त तथा आक्रामक प्रवृत्ति क होते हैं।

लम्बी गर्दन वाले व्यक्ति भीरु स्वभाव के होते हैं। यदि गर्दन पतली भी हो तो जातक डरपोक स्वभाव का होने के साथ ही लज्जाशील भी होता है। वह अपने से

श्रेष्ठ व्यक्तियों के आदेश को तुरन्त मान लेता है।

यदि गर्दन आगे की ओर झुकी हो, तो जातक व्यवहारकुशल होता है।

यदि गर्दन पीछे की ओर हो, तो जातक भौतिक जीवन से कम सम्बन्ध रखने वाला, काल्पनिक-वृत्ति का होता है।

यदि गर्दन एकदम सीधी हो, तो जातक मध्यम श्रेणी का होता है।

टेढ़ी, सूखी तथा पतली गर्दन वाले व्यक्ति भोगी होते हैं।

बहुत अधिक लम्बी गर्दन वाले व्यक्ति भोगी होते हैं।

गोल घड़े के आकार की गर्दन हो, तो जातक धनी तथा दीर्घजीवी होता है।

टेढ़ी गर्दन वाला व्यक्ति चुगलखोर होता है।

चपटी गर्दन वाला व्यक्ति दरिद्री होता है।

गर्दन के पिछले भाग में रोयें हों, नसें उभरी हुई हों अथवा वह भाग टेढ़ा-मेढ़ा हो या अधिक बढ़ा हो तो जातक रोगी तथा निर्धन होता है।

कांख

उन्नत, पुष्ट, सुगन्धित, मांसल तथा बिना पसीना वाली कांख हो, तो जातक ऐश्वर्यशाली होता है।

नीच, गद्देदार तथा विषम कांख होने से जातक निर्धन, कपटी तथा बेईमान होता है।

सम कांख हो, तो जातक भोगी होता है।

कंधा

ऊँचे, बड़े तथा मांसल कंधों वाला व्यक्ति वीर तथा साहसी होता है।

हाथी, सुअर अथवा बैल जैसे कंधों वाला जातक महाधनी, महाभोगी तथा उच्च पद पाने वाला होता है।

मांसहीन, गड्ढेदार अथवा छोटे कंधों वाला व्यक्ति दुखी रहता है।

कंधे पर रोयें हों तो, उन्हें दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

बकरे की भाँति अथवा केले के खम्बे की भाँति कंधों वाले व्यक्ति अत्यन्त बलवान, धनी तथा यशस्वी होते हैं।

बाहु-भुजा

हाथी के सूंड के समान गोल तथा घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला जातक शूर-वीर, प्रतापी तथा परम ऐश्वर्यवान होता है।

समान छोटी भुजाओं वाला व्यक्ति देशाटन करने वाला होता है।

बाहुओं में नसें दिखाई दें, उनमें अधिक रोम हों अथवा छोटी हों तो जातक दरिद्री होता है।

सामान्य रोमयुक्त भुजाओं वाला व्यक्ति दीर्घायु तथा धनी होता है।
ऊंची-नीची बाहुओं वाला जातक चोर होता है।
छोटी बाहुओं वाला व्यक्ति सेवावृत्ति (नौकरी) करता है।

हंसली

हंसली निकली हुई हो अर्थात् हड्डी ऊपर को अधिक उभरी हुई हो तो जातक दरिद्री होता है।

हंसली मांसल तथा उन्नत हो, तो जातक धनी तथा भोगी होता है।

वक्षस्थल

छाती समतल हो तो जातक धनवान होता है।
छाती पुष्ट तथा मोटी हो, तो जातक शूरवीर होता है।
छाती ऊंची-नीची हो तो जातक की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।
छाती जितनी अधिक चौड़ी, उन्नत, कठोर तथा स्थिर हो, उसे उतना ही शुभ समझना चाहिए।
चौड़ी तथा सेम युक्त छाती वाला व्यक्ति वीर, बहादुर और दयालु होता है।
छाती पर जितने अधिक बाल हों, वे उतने ही शुभ होते हैं।
छाती पर रोएं ऊपर (गर्दन) की ओर जाते हैं, तो जातक में वीरता अत्यधिक होती है।
पतली छाती वाला व्यक्ति धन-हीन होता है।
यदि छाती पर रोम न हों तो ऐसा जातक निर्दयी, डरपोक, चंचल तथा धोखेबाज, विश्वास न करने योग्य होता है। वह किसी भी उत्तरदायित्व का गंभीरता पूर्वक निर्वाह नहीं कर सकता।

उर-स्थल (हृदय)

उर-स्थल एक समान हो, तो जातक धनी होता है।
उर-स्थल कृश हो, तो जातक दरिद्र होता है।
उर-स्थल और कण्ठ का सन्धि भाग ऊंचा-नीचा हो तो जातक क्रूर स्वभाव का होता है।
उर-स्थल गहरा हो, तो जातक दरिद्र और उन्नत हो तो धनी होता है।
उर-स्थल बिना रोम का हो तो शुभ है। यदि मृदु रोम हो तो वह भी शुभ माना गया है।

स्तनाग्र भाग

स्तनाग्र भाग ऊंचा हो तो जातक धनी होता है।

स्तनाग्र भाग सम हो तो जातक दुःख भोगता है।
स्तनाग्र भाग असमान हो तो जातक दुःखी होता है।
कठिन, पुष्ट गहरे स्तनों वाला जातक सुखी होता है।

पेट (उदर)

मार, मण्डूक तथा हरिण जैसे पेट वाला व्यक्ति राजा होता है।

व्याघ्र तथा सिंह जैसे पेट वाला व्यक्ति धनी, सियार जैसे पेट वाला अधम तथा घोड़े जैसे पेट वाला जातक दरिद्र होता है।

उदर छाती के बराबर हो, तो जातक धन-ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

घड़े की तरह पेट वाला व्यक्ति बहुभोजी होता है।

सांप की तरह पेट का होना अशुभ समझना चाहिए।

बहुत पतले पेट वाला मनुष्य पापी होता है।

पेट में बल (सलवटें) पड़ना शुभ लक्षण है। यदि सीधी बल पड़ती हो तो जातक सुखी तथा सदाचारी होता है। यदि ऊंची-नीची अथवा टेढ़ी बल पड़ती हो तो व्यभिचारी होता है। एक सीधी बल पड़ती हो तो जातक विद्वान होता है, दो सीधी बल पड़े तो भोगी, तीन पड़े तो अनेक शास्त्रों का ज्ञाता होता है तथा चार पड़े तो पूतवान होता है, परन्तु एक भी बल न पड़े तो उसे भी शुभ लक्षण ही समझना चाहिए।

नाभि

वर्तुलाकार, गहरी तथा विस्तीर्ण नाभि वाला जातक वीर, गुणी, विद्वान सुखी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

ऊंची उठी हुई, छोटी अथवा अदृश्य नाभिवाला जातक दरिद्र होता है।

यदि नाभि पर रोम हो तो अधिक सन्तानें होती हैं।

यदि नाभि के बीच में घुमाव अथवा रेखा हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

नाभि का घुमाव बाईं ओर को हो तो जातक दुष्ट एवं कपटी स्वभाव का होता है, परन्तु दाईं ओर को हो तो अत्यन्त बुद्धिमान तथा विद्वान होता है।

यदि नाभि नीचे की ओर अधिक फैली हो, तो जातक विशेष धनी होता है, परन्तु यदि ऊपर की तरफ अधिक फैली हो तो उसे धन तथा सम्मान दोनों ही प्रचुर परिणाम में मिलते हैं। नाभि गहरी तथा मध्य में कुछ उठी हुई-सी भी हो तो जातक अत्यन्त प्रभावशाली होता है।

कुक्षि

कुक्षि छोटी हो, तो पुरुष ऐश्वर्यशाली होता है।

कुक्षि सम हो, तो जातक भोगी होता है।

कुक्षि नीची हो, तो धन का नाश होता है।

कुक्षि हाथी के समान हो, तो जातक कपटी होता है।

पुरुष की कुक्ष पर दक्षिणावर्त भौंरी हो, तो श्रेष्ठ, वामावर्त भौंरी हो तो क्लेशदायक समझनी चाहिए।

पार्श्व

मांसल तथा मुलायम पार्श्व हो तो शुभ समझना चाहिए।

विस्तृत, कोमल तथा मांसल पार्श्व वाला जातक धनी तथा दुखी होता है।

टेढ़े-मेढ़े, गड्ढेदार पार्श्व वाला मनुष्य दरिद्र होता है।

पार्श्व के बाल (रोम) बराबर के तथा कोमल हों तथा वे दायीं ओर को घूमे हुए हों, तो सौभाग्य का लक्षण और इसके विरुद्ध हों, तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

पीठ

सिंह के समान पीठ वाला व्यक्ति धनवान, परन्तु बंधन पाने वाला, व्याघ्र जैसी पीठ वाला, सेनानायक, कछुए जैसी पीठ वाला ऐश्वर्यशाली तथा घोड़े जैसी पीठ वाला पृथ्वीपति होता है।

चिकनी, मांसल, रोम-हीन तथा जिनके बीच में गड्ढा न हो, ऐसी पीठ वाले जातक धनी होते हैं।

पीठ के ऊपर केशों का होना दरिद्रताकारक समझना चाहिए।

कटि (कमर)

सिंह जैसी कमर वाला व्यक्ति, राजा के समान, बन्दर अथवा हाथी के बच्चे जैसी कमर वाला धनहीन तथा कुत्ता, सियार अथवा रीछ जैसी कमर वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

छोटी कमर वाला जातक दुर्भाग्यशाली होता है।

मोटी तथा बड़े कमर वाला व्यक्ति (मतान्तर) से धनी होता है।

यदि कमर पर बहुत अधिक रोयें हों, तो जातक दरिद्र होता है।

जिसकी कमर ऊंट अथवा गधे की तरह कटी हुई हो, वह दरिद्र होता है।

नितम्ब

अत्यन्त मोटे नितम्बों वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

मांसल तथा सामान्यतः पुष्ट नितम्बों वाला जातक सुखी रहता है।

जिसके नितम्ब मेंढक के समान हों, वह धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

शिश्न (पुरुष-जननेन्द्रिय)

छोटी, पतली, काली, कोमल तथा जिस पर पतली नसें दिखाई देती हों, ऐसी जननेन्द्रिय उत्तम मानी गयी है। इस प्रकार के शिश्न वाला व्यक्ति धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

स्थूल, अधिक बड़ी, जिस पर मोटी नसें दिखाई देती हों, तो उस जननेन्द्रिय को अशुभ एवं निर्धनता कारक समझना चाहिए।

शिश्न का झुकाव बायीं ओर हो तो जातक दरिद्र होता है। नीचे की ओर हो तो भी निर्धन होता है।

शिश्न सीधा तथा कठोर हो तो जातक पुत्रवान होता है।

मोटी गांठों वाले शिश्न का स्वामी सुखी रहता है।

शिश्न ढीला हो, तो जातक की प्रमेह आदि रोगों से मृत्यु होती है।

शिश्न की सुपारी (शिश्न का अग्रभाग) में नीचे थोथे के रंग जैसी रेखा हो और वह कपास के पुष्प जितनी ऊंची हो तो ऐसा व्यक्ति पृथ्वीपति होता है।

शिश्नाग्र भाग खुरदरा अथवा कड़ा हो तो जातक दरिद्र होता है।

अण्डकोष

यदि एक ही अण्डकोष हो तो जातक को जल से अथवा जलीय तत्त्वों के कारण मृत्यु होती है।

एक अण्डकोष छोटा तथा दूसरा बड़ा हों, तो जातक धनी होता है।

अण्डकोष गोल छोटे, सीधे तथा लम्बे हों, तो जातक धनी होता है।

अण्डकोष ऊपर की ओर चढ़े हुए हों, तो जातक अल्पायु होता है। अण्डकोष ढीले हों तो जातक धनहीन होता है।

मूत्र की धार

मूत्र की धार सशब्द हों, तो जातक सुखी होता है।

मूत्र धार निःशब्द हों, तो जातक दरिद्र होता है।

मूत्र की धार केवल दायीं ओर को ही गिरे तो जातक राजा होता है, परन्तु बिखरी हुई गिरे तो धनहीन होता है।

हंसी

आंखें बन्द करके हंसने को दुष्टता का लक्षण समझना चाहिए। कम्पन रहित हास्य शुभ माना जाता है।

रुदन

रोते समय आंसू तो गिरे, परन्तु चेहरे पर दैन्यभाव न हो तो उसे शुभ

समझना चाहिए। रोते समय दैन्य एवं कंठ में रूखापन आ जाए तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

मुख

आंख, नाक, कान, ओंठ, ठोड़ी, ललाट आदि अंगों सहित गर्दन के ऊपरी भाग को मुख अथवा चेहरा कहा जाता है। इसके सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चन्द्र बिम्ब के समान गोल मुख वाला, व्यक्ति धर्मात्मा होता है।

मृग के पेट के समान मुख वाला भाग्यहीन होता है।

छोटे मुख वाला लोभी, चौड़े मुख वाला घमंडी तथा मन्द भागी एवं लम्बे, टेढ़े तथा कुरूप मुंह वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

इसके अतिरिक्त जिस मनुष्य का मुख जिस पशु-पक्षी की आकृति से मिलता-जुलता हो, वह वैसे ही स्वभाव का होता है। इस सम्बन्ध में पहले ही लिखा जा चुका है।

जिस पुरुष का मुंह देखने में स्त्री के मुंह जैसा प्रतीत हो वह संतानहीन होता है।

मस्तक के केश

सिर के बाल चिकने, काले, नुकीले, चमकीले, लम्बे, कोमल तथा शाखा रहित हों, तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

यदि सिर पर बाल बहुत कम हो, तो जातक दीर्घायु होता है।

यदि सिर गंजा हो तो जातक धनवान, संन्यासी या फिर दरिद्र होता है।

यदि केश घने हो, तो जातक बुद्धिमान होता है।

यदि केशों का रंग लाल हो, तो जातक स्त्रियों में आसक्त बना रहता है।

हाथ और भिन्न-भिन्न चिह्न

अनेक पर्यवेक्षकों, ज्योतिर्विदों, विद्वानों द्वारा अनेक हथेलियों का परीक्षण करने के उपरान्त विविध चिह्नों के अनुभवों पर प्रकाश डाला है। भारतीय ऋषि मुनि आदि काल से इन पर प्रकाश डालते आए हैं। धर्म-ग्रन्थों, पुराणों में भी रेखा, चिह्न आकृति का उल्लेख आया है।

यहां मैं इन्हीं चिह्नों पर विचार कर रहा हूँ—

शंख—शंख भी दो प्रकार के होते हैं—

१. दक्षिणावर्त

२. वामावर्त

दक्षिणावर्त शंख— उंगलियों के अग्रभाग पर शंखाकृति यदि दायीं ओर को मुख किए हुए हो तो उसे दक्षिणावर्त शंख कहा जाता है। यह चिह्न अंगूठे के अग्रभाग पर भी हो सकता है।

वामावर्त शंख—अंगूठे अथवा उंगलियों के अग्रभाग पर शंख के समान आकृति यदि बायीं ओर को मुख किये हुए हो तो वह वामावर्त शंख कहा जाता है।

यह अत्यन्त शुभ चिह्न है, ऐसा अनुभव में आया है। इस चिह्न से युक्त व्यक्ति विदेशों में जाकर अधिक धन कमाता है। विदेश-यात्रा का अवसर उसे बार-बार प्राप्त होता है। धर्म व धार्मिक कार्यों के प्रति उसकी विशेष रुचि होती है। वह मन्दिर, मस्जिद, चर्च, धर्मशाला, कुआं, बावड़ी, तड़ाग, बनाने की इच्छा रखता है। साधु-सम्मेलन, धर्म-सभा, साधु-संगति में विशेष रुचि जातक रखता है। महिलाओं के हाथ में यह चिह्न होने पर राजा तुल्य सुख भोगती हैं।

चक्र—अंगूठे अथवा उंगलियों के अग्रभाग पर जो गोल चक्र की भाँति कुण्डलाकृति चिन्ह होता है। वही चक्र कहा जाता है। यह चिन्ह भी धार्मिकता का प्रतीक है। यह चिह्न जातक को महान वैभव, ऐश्वर्य, वाहन, भूमि, भवन, शैय्या-सुख आनन्द देता है। राजा के समान वह व्यक्ति आनन्द भोगता है। सम्पन्नता में कमी नहीं रहती। कई विद्वान इसे चक्रवर्ती नरेश का लक्षण मानते हैं।

गदा—हनुमान या भीम का प्रधान अस्त्र गदा-शक्ति सामर्थ्य और बल का प्रतीक है। जिसके हाथ में उक्त गदा चिह्न हो, वह अद्‌भुत शक्तिवान व बलवान होता है। अस्त्र-शस्त्र चलाने में दक्ष, प्रभावशाली व्यक्ति, प्रशासकीय कार्यों में दक्ष, अनुशासनप्रिय व अधिकार प्रदर्शन की भावना युक्त जातक शक्ति व हनुमान का

उपासक होता है। महिला के भी हाथ में ऐसा वीरत्व भाव उत्पन्न करता है।

पद्म—उंगलियों पर पाया जाना शुभत्व का द्योतक है। यह चिह्न चाहे भारतीय ज्योतिबविद हों या पाश्चात्य, इसकी महत्ता को एक स्वर से सबने स्वीकारा है। वह चिह्न कमलवत् ऊपर छोटा-सा वर्तुल और तत्संबंधी पंखुड़-यह कमल या पद्म का पूरा चिह्न है। इसे पहचानने के लिए दो बातों की ओर ध्यान दें—

ऊपर पूरा गोल वृत्त न होकर वर्तुलाकार होता है।

नीचे पत्ती सदृश चिन्ह हो, जो उससे संबंधित हो, मैंने प्रायः ऐसा देखा है कि नीचे की पत्ती का ऊपर के वर्तुल से कोई संबंध नहीं रहता, ऐसा होने पर वह पद्म परिभाषित नहीं होता।

पद्म दो प्रकार के होते हैं—

१. ऊर्ध्व

२. अधः

वाम अथवा दक्षिण इसके लिए ऊपर का सिरा जिस ओर हो, उसी से संबंधित पद्म समझना चाहिए।

यह चिह्न मनुष्य के उदार हृदय का परिचायक है। यह भी जातक अपेक्षा करता है कि अन्यान्य लोग भी उसके साथ शिष्ट व मधुर व्यवहार करें। जातक स्वयं भी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि रखता है। धन-धान्य-ऐश्वर्य से सम्पन्न उत्तम फलदायक है। स्त्री के हाथ में यह चिह्न प्रायः उंगलि या उंगलियों पर पाया जाता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी कार्य में हाथ डाले तो सफलता कदम चूमेगी। असफलता तो इनसे दूर भागती है। महा भाग्यवान, सम्माननीय, कुलीन तथा दुनिया में मान-सम्मान का यश पाते हैं। मानसिक रूप से सुदृढ़ परन्तु शरीर-श्रम में इनकी रुचि प्रायः नहीं रहती। अच्छे गणितज्ञ, कुशल प्रशासक व योजनाकार होते हैं। कोमल कान्त ये स्वस्थ, तेजस्वी, प्रभावशाली, गौरवशाली, मध्यमकाय, निरभिमान, स्पष्ट व्यक्तित्व के धनी, आकर्षक, निष्कपट, सरल, छल-कपट से दूर होते हैं।

ये जातक मृदुभाषी, स्पष्टवादी, गुरु-देव-अतिथि का आदर करने वाले मुंहफट होते हैं। सज्जनता के कारण शत्रु भी मित्र वन जाते हैं। अपरिमित मित्र-हितैषी, दृढ़ निश्चयी व विपत्ति के समय सहायक होते हैं। अपने सिद्धान्तों को डिगने नहीं देते। अवसर का लाभ उठाना नहीं जानते। इनकी कोई बात या तर्क बिना प्रमाण नहीं होता।

उच्च स्तर के धनी-मानी वर्ग में इनकी पैठ होती है। तर्क में वजन, वादे व निश्चय के पक्के, तथ्य पर स्थिर, सबकी सुनकर भी वही करेंगे, जो स्वयं चाहेंगे। आर्थिक दृष्टि से सफल पर व्यवहार की दृष्टि से असफल पाये जाते हैं।

शुक्ति (सीप): अंगूठे या उंगलियों के अग्रभाग पर शंख व चक्र की आकृति से भिन्न फैला हुआ वैसा ही अन्य चिह्न 'सीप' पाया जाता है।

भेद—शंख तथा शुक्ति में भेद मात्र यही है कि शंख की रेखाएं नीचे की ओर

जहां एकत्र-सी होती हैं, वहां सीप की रेखाएं पूर्ण तथा फैली हुई-सी होती हैं। अतः शंख व सीप का निर्णय करते समय भी सावधानी रखनी चाहिए।

ऐसा देखा गया है कि मनुष्य के दोनों हाथों की ८ उंगलियों व दो अंगूठे -कुल दस पर शंख, चक्र या शुक्ति में से कोई-न-कोई चिह्न अवश्य होता है। ये चिह्न प्रथम पर्व पर ही आप पायेंगे। एक उंगली या अंगूठे पर यह एक से अधिक कभी नहीं होगा और न ही प्रथम पर्व को छोड़कर कहीं अन्यत्र यह चिह्न पाया जाता है।

यदि अंगुष्ठ के अग्रभाग पर चक्र तथा यव चिह्न पूर्ण हो, तो जातक पैतृक संपत्ति का उपभोग कर, उसमें और वृद्धि करता है।

अंगूठे के अग्रभाग पर शंख चिह्न पैतृक धन-सम्पत्ति का सुख-प्राप्ति नहीं करने देता।

तर्जनी के अग्रभाग पर शंख चिह्न होने पर जातक मित्रों से धन-मान-वैभव की हानि को प्राप्त करता है।

मध्यमा के अग्रभाग पर चक्र चिह्न हो तो देव-पूजा, कथा, साधु-संगति, जप-तप, देवार्चन, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, देवालय आदि से या ईश कृपा से धन प्राप्त करता है।

यदि मध्यमा के अग्रभाग पर शंख चिह्न हो तो देवता या देव संबंध से धन की हानि उठानी पड़ती है।

यदि अनामिका के अग्रभाग पर चक्र चिह्न हो तो जातक हर प्रकार के व्यवहार व उद्योग द्वारा धनोपार्जन करता है।

अनामिका के अग्रभाग पर शंख का चिह्न हो तो लोक-व्यवहार व उद्योग से धन की हानि उठाता है। व्यय ज्यादा व जातक कर्ज से दवा रहता है।

यदि कनिष्ठा पर चक्र चिह्न हो तो जातक को व्यवसाय व मैन्युफैक्चरर्स से धन-लाभ होता है।

पर कनिष्ठा के अग्रभाग पर शंख चिह्न हो तो जातक व्यवसाय से हानि उठाता है।

अंगूठे के अग्रभाग पर चक्र ऐश्वर्य, प्रभाव, यश, मान, बुद्धिचातुर्य, यश, सतत क्रियाशीलता, सद्‌गुण, सुख, वैभव देता है पर अधूरा चक्र पूर्ण सफलता नहीं देता।

यदि किसी स्त्री के अंगूठे पर चक्र चिह्न हो एवं अंगूठे का मध्य भाग मोटा हो तो वह दुष्टा, कुलक्षणी, व्यभिचारिणी, अपयशदायक, कुटुम्ब द्वेषी होती है।

यदि अंगूठे के दक्षिणावर्त पर शंख चिह्न हो तो जातक अत्यन्त सौभाग्यशाली, सम्पन्न सफल होता है।

अंगूठे के अग्रभाग पर वामावर्त शंख जातक के लिए हानि का परिचायक है। अंगूठा व तर्जनी दोनों पर चक्र चिह्न हो तथा इनकी पेरुओं के मध्यभाग अर्थात् संधिस्थल में यव चिह्न हो तो जातक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्वत्र जय, सम्मान, आदर मिलता है। यश-सुख, आनन्द, ऐश्वर्य पाता है।

यदि अंगूठे के अग्रभाग पर शुक्ति चिह्न हो तो जातक संपूर्ण जीवन कष्ट, दुःख,

विपत्ति और बाधाएं भुगतते हुए व्यतीत करता है। यह चिह्न असफलता का सूचक है।

यदि तर्जनी के अग्रभाग पर चक्र चिह्न हो तो जातक अपने माता-पिता, अग्रज, मित्र आदि से धन प्राप्त कर, वैभव का भोग करता है। ऐसे जातक महत्त्वाकांक्षी, कार्यसिद्ध, ईश्वर-भक्त, धन के लोभी, कृपण, सांसारिक सुखों का उपभोग करने वाले, कुशल व्यवसायी, योग्य चिकित्सक, जननायक, नेतृत्व प्रधान, वकील जन-समाज के विश्वासपात्र होते हैं।

तर्जनी के अग्रभाग पर चक्र हो तो यश-ऐश्वर्य, सुख, आनन्द प्राप्त होता है पर अधूरा चन्द्र चिह्न विपरीत फलदायक होता है।

यदि अंगूठा व तर्जनी दोनों के अग्रभाग पर चक्र हो तथा इनके मध्यभाग अर्थात् संधियों में यव का चिह्न हो तो इन चिह्नों को सर्वसिद्धि-दायक मानना चाहिए।

यदि अंगूठा तथा तर्जनी दोनों के अग्रभाग पर शंख या शुक्ति का चिह्न हो तो जातक आजीवन दुःखी, हीन, निराश, निर्धन, परेशान, अपमानित रहता है।

यदि तर्जनी के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो जातक सदैव एक जैसा जीवन व्यतीत करता है। वह प्रायः स्थिर, उद्योग रहित, अश्रमशील, निराश, अपवादी, खूब व्यय करने वाला होता है, पर वामावर्त शंख हो तो जातक अपने मित्रों, परिचितों से ठगा जाता है। वह हानि उठाता है।

मध्यमा उंगली के अग्रभाग पर चक्र हो तो जातक देव या देव-सम्बन्धित किसी कार्य द्वारा धन अर्जित करता है साथ ही बल-बुद्धि योजना से संपत्तिवान बनता है। अपूर्ण चक्र काम नहीं देता।

मध्यमा के अग्रभाग पर शुक्ति चिह्न हो तो दैवकोप या बुद्धिहीनता से प्राप्त धन नष्ट कर विपत्ति में फंसता है।

यदि मध्यमा के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो व्यक्ति धनी, विद्वान, न्यायप्रिय, यशस्वी, शास्त्र प्रेमी, धार्मिक होता है। परन्तु वामावर्त शंख चिह्न हो तो जातक का दान नहीं लेना चाहिए अन्यथा उसका संचित धन और पुण्य नष्ट हो जाता है।

अनामिका के अग्रभाग पर चक्र हो तो मित्र से या भिन्न-भिन्न उपायों से अर्थोपार्जन करता है। समाज में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, यश, ऐश्वर्य, आनन्द, सुख पाता है। अपूर्ण चक्र लाभ नहीं देता।

यदि अनामिका के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो जातक का धन अनेक प्रकार से खर्च व नष्ट हो जाता है। लाभ-हानि बराबर रहती है। परन्तु यदि वामावर्त शंख चिह्न हो तो अत्यन्त हानिकारक व दुर्भाग्य का सूचक होता है

यदि कनिष्ठा के अग्रभाग पर चक्र हो तो जातक व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। ऐसा व्यक्ति शास्त्रज्ञ व ग्रन्थ लेखन करता है।

यदि कनिष्ठा के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो जातक को व्यवसायिक लाभ होता है। पर यदि वामावर्त शंख हो तो अत्यन्त भारी हानि प्राप्त करता है।

यदि सभी उंगलियों तथा अंगूठे पर दक्षिणावर्त चक्र चिह्न हो तो जातक के लिए अत्यन्त शुभ फलदायक व सौभाग्यकर होता है।

यदि चारों उंगलियों के मूल में यव हो, तो जातक आजीवन सुख-ऐश्वर्य भोगने वाला व अकस्मात लाभ पाने वाला होता है।

सभी उंगलियों के अग्रभाग पर चक्र का होना अत्यन्त सौभग्य का लक्षण माना जाना चाहिए। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति अत्यन्त बलवान, यशस्वी, धनी, सर्वगुण सम्पन्न और ऐश्वर्यशाली पूर्ण होगा। सभी उंगलियों से अर्थ आठ उंगलियां व दो अंगूठे से है।

यदि सभी उंगलियों के अग्रभाग पर शंख चिह्न हो तो ऐसा जातक राजा या योगी होगा।

यदि किसी स्त्री के हाथ में अंगूठे की जड़ के मध्य भाग तक स्थूल तथा चक्र हो तो वह दुष्ट प्रकृति वाली, व्यभिचारिणी, कुलटा, दुष्टा, निर्लज्ज, दया-रहित, स्वतन्त्र तथा रति कर्म में प्रचण्ड वेग वाली होती है।

यदि अनामिका व तर्जनी दोनों पर चक्र हो, तो ऐसा व्यक्ति मेल-मिलाप चतुर, सामाजिक कार्यों में भाग लेने वाला, स्वकार्य दक्ष, वकील, डॉक्टर, ट्रेवलिंग एजेंट होगा।

यदि अंगूठा व अनामिका दोनों पर चक्र हों तो वह पैतृक व्यवसाय व सम्पत्ति की रक्षा करने वाला होगा। व्यवसाय में कुशल होगा।

यदि अंगूठे का चक्र रेखाओं द्वारा कट गया हो तो वह दूसरों की सम्पत्ति की रक्षा करने में कुशल होता है।

यदि अनामिका व मध्यमा के अग्रभाग पर चक्र चिह्न हो तो जातक दान, धर्म-यज्ञ-साधु संगति, देवार्चन करने वाला होगा।

यदि अनामिका व कनिष्ठा पर चक्र हो तो जातक सफलतम व्यवसायी होगा।

यदि एक उंगली पर चक्र हो तो जातक चतुर, वाचाल, सुखी होगा।

यदि दो उंगलियों पर चक्र हो तो जातक सुन्दर, गुणी, प्रशासन-कार्य, दक्ष होगा।

यदि तीन उंगली पर चक्र हो तो जातक धनी, व्यवसायी, विलासी होगा ।

यदि चार उंगली पर चक्र हो तो जातक दरिद्री।

यदि पांच उंगली पर चक्र हो जो जातक ज्ञानी व विलासी।

यदि छः उंगली पर चक्र हो तो जातक व्यर्थ भटकने वाला।

यदि सात उंगली पर चक्र हो तो जातक पुण्यात्मा, सुखी, संतुष्ट।

यदि आठ उंगली पर चक्र हो तो जातक रोगी, विद्वान, चतुर।

यदि नौ उंगली पर चक्र हो तो जातक राजा तुल्य सुख पाने वाला।

यदि दस उंगली पर चक्र हो तो जातक योगी, धनी, अल्पायु, सिद्ध।

यदि एक उंगली पर शंख हो तो जातक अध्ययनशील, वीर, सम्मानित।

यदि दो उंगली पर शंख हो तो जातक दरिद्री या संन्यासी।

यदि तीन उंगली पर शंख हो तो जातक स्त्री नाशक, भ्रमणशील।

यदि चार उंगली पर शंख हो तो जातक प्रतापी, सुखी।

यदि पांच अंगुली पर शंख हो तो जातक विदेशवासी, यश-मान व प्रतिष्ठा प्राप्त।

यदि छः उंगली पर शंख हो तो जातक गुणवान, धनी, विद्वान, सुखी।

यदि सात उंगली पर शंख हो तो जातक दरिद्री, यशस्वी।

यदि आठ उंगली पर शंख हो तो जातक सुखी, गुणी।

यदि नौ उंगली पर शंख हो तो जातक दुःखी, रोगी, दरिद्री।

यदि दस उंगली पर शंख हो तो जातक राजपूजित, गुणी, धनी, यशस्वी।

एक उंगली पर सीप हो तो जातक गुणवान व धनी।

यदि दो उंगली पर सीप हो तो जातक वक्ता, धनी, सम्मानित, सामाजिक।

यदि तीन उंगली पर सीप हो तो जातक धनी, योगी।

यदि चार उंगली पर सीप हो तो जातक दरिद्री पर सद्गुणी।

यदि पाँच उंगली पर सीप हो तो जातक धनी, पंडित, सफल, सम्मानित।

यदि छः उंगली पर सीप हो तो जातक योगी, शुभ।

यदि सात उंगली पर सीप हो तो जातक दरिद्री पर गुणी।

यदि आठ उंगली पर सीप हो तो जातक धनी।

यदि नौ उंगली पर सीप हो तो जातक गुणी, धनी, सुखी।

यदि दसों उंगली पर सीप हो तो जातक योगी, धनी, राजपूजित, धर्मात्मा।

स्वास्तिक—स्वास्तिक चिह्न गणेश व लक्ष्मी का माना गया है। इस चिन्ह से युक्त व्यक्ति, खूब धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न, दयालु, व्यवसाय कुशल, वैभव सम्पन्न, उच्च पदाधिकारी होता है। राजनीति कुशल, मन्त्री, जन-नायक, संस्था-संचालक, धार्मिक, धर्म ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र का ज्ञाता, पुस्तक कीट विद्वानों का आदर करने वाला, यशस्वी होता है। स्त्रियां वैभव सम्पन्न होती हैं।

रथ—इस चिह्न से सम्बन्धित व्यक्ति उच्च स्तरीय वाहन रखने वाला, धन-धान्यसम्पन्न, ऐश्वर्यशाली, भूमि-भवन, नौकर-चाकर युक्त, शैया सुख युक्त, सुपुत्रवान, ज्ञानी, सज्जन, जन हितैषी, सद्मित्र युक्त, शत्रु बल नाशक होगा। स्त्री के हाथ में ऐसा चिह्न यश-वैभव प्रतिष्ठा का प्रतीक है।

तलवार—यह चिह्न प्रभुत्व, प्रभुत्ववान शक्ति का प्रतीक है, किंवा परिचायक है। उसका दबदबा यहां-वहां सर्वत्र रहता है। अनुशासन प्रिय, अधिकार प्रिय, साहसी, नीति-निपुण, कानून का रक्षक व जानकार होता है। सर्वत्र सम्मान मिलता

है। आदरणीय, प्राशकीय कार्यों में खूब सफल होता है।

कमण्डलु—धन-धान्य-सम्पन्नता का यह प्रतीक है। प्रभुता, आत्मनिर्भरता, धन व साधु-सेवा का प्रतीक चिह्न कमण्डलु है। ऐसा जातक संन्यासी, यति, परोपकारी, महात्मा, धर्म-प्रचारक होता है। धर्म-संस्थाओं के संचालकों के हाथों में यह चिह्न प्रायः देखा गया है। ऐसा व्यक्ति जरूर यात्रा करता है या जलयान संचालकों के हाथों में भी ऐसा चिह्न देखा गया है। स्त्री के हाथ में यह चिह्न सौभाग्य सूचक होता है।

छत्र—साम्राज्य या राज्याधिकत्व का प्रतीक चिह्न है। यह शासनाधिकार, स्वाधीनता देता है। इससे युक्त व्यक्ति राष्ट्राध्यक्ष, प्रदेशाध्यक्ष, अन्य उच्च पदासीन होता है। न्यायाधीशों के हाथों में मैंने यह चिह्न देखा है। ऐसे व्यक्ति के हृदय में धर्म के प्रति आस्था होती है।

महिलाओं के हाथ में यह चिह्न न्याय व सम्मान का सूचक है।

देवयान—यह चिह्न धार्मिक आस्था, धार्मिक विचार का परिचायक है। ऐसा व्यक्ति परलोक सुधारने के लिए सभी प्रयास करता है। यज्ञ, हवन-पूजा, पाठ, कीर्तन, तन्त्र-मन्त्र, दानादि करता रहता है। आये दिन धार्मिक अनुष्ठान करता है। बार-बार दूर-दूर, तीर्थाटन करता है। पुण्य कार्यों में रुचि लेता है। ऐसा जातक देव-मंदिर, जलाशय निर्माण करवाता है सामाजिक दैविक कार्यों में खूब भाग लेता है।

त्रिकोण—यह चिह्न वर्तुल में छोटा-सा त्रिकोणात्मक होता है, यह चिह्न हाथ में शुभ माना जाता है।

तर्जनी—आपकी तर्जनी का सिरा यदि गोल हो एवं उस पर त्रिकोण या त्रिभुज हो तो ऐसा जातक भ्रमण, शान-शौकत व मनोरजंन पर बढ़-चढ़कर व्यय करता है अपने जीवन में पूर्ण शैय्या सुख पाता है। यदि लम्बा सिरा हो तो पुस्तकों के पठन-पाठन, यात्रा पर आवश्यकता से ज्यादा व्यय करता है। यदि उंगली का सिरा चपटा हो और उस पर यह चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति आखेट, शस्त्रास्त्र युद्ध व प्राचीन वस्तुओं के संग्रह पर जरूरत से ज्यादा खर्च करता है। यदि सिरा गोल, भरा-भरा-सा हो व उस पर यह चिह्न हो तो जातक यारी-दोस्ती, शराब व नशा पार्टियों, क्लबों, खाने-पीने पर जरूरत से ज्यादा व्यय करता है।

यदि उंगली गौरवर्ण, हलकी गुलाबी हो तो उसे प्रशंसा, वाहवाही मिलती है तथा पीला रंग हो तो अपयश प्राप्त होता है।

ऊर्ध्व—यह उच्चाशयता का प्रतीक है।

अधः— निम्नस्तरीय लोगों से सम्पर्क का प्रतीक ।

वाम—अपयश।

दक्षिण—परिश्रम की अधिकता से सम्मान प्राप्त।

मध्यमा—मध्यमा उंगली का सिरा गोल होकर उस पर त्रिकोण का चिह्न हो

तो व्यक्ति अनायास, आकस्मिक लाभ प्राप्त करता है। सिरा यदि लम्बा हो तो विदेश में घूम-फिर कर धनोपार्जन करता है। चपटा सिरा व बैठा-बैठा हो तो जुए से भाग्योदय होता है। गोल व भरा-भरा सिरा ३२ वर्ष की आयु के बाद ही भाग्योदय का परिचायक है।

यदि उंगली का वर्ण गुलाबी हो तो जातक दानवीर, यदि लाल हो तो यात्रा व भ्रमण में धन व्यय करता है। यदि नीला रंग हो तो दवाइयों में, रोग निदान व चिकित्सा में व्यय करता है।

यदि ऊर्ध्व त्रिकोण है तो भाग्योदय प्रारम्भ में ही हो जाता है। यदि अधः त्रिकोण है तो भाग्योदय ३६ वर्ष की आयु के बाद बाधा भुगत कर होता है। यदि वाम पक्षीय त्रिकोण हो तो वृद्धावस्था में भाग्योदय होता है।

यदि दक्षिण पक्षीय त्रिकोण हो तो युवावस्था में भाग्योदय होता है।

अनामिका—यदि अनामिका उंगली का सिरा गोल हो एवं उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो भरपूर वाहन सुख जातक को प्राप्त होता है।

यदि लम्बा सिरा हो तो सामान्य वाहन की प्राप्ति होती है। चपटा एवं बैठा हुआ सिरा हो व उस पर त्रिकोण हो तो उच्च स्तरीय वाहन अवश्य प्राप्त होता है। गोल व भरा-भरा सिरा व त्रिकोण हो तो व्यक्ति पराए-वाहन का ही ऐश्वर्य भोगता है।

उंगली का वर्ण यदि गुलाबी हो व उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो लाभ, लाल रंग हो तो वाहन चोर व पीला रंग वाहन सुख में न्यूनता प्रदान करता है।

यदि ऊर्ध्व त्रिकोण अनामिका पर है तो मातृ-पक्ष से धन व सर्व सुख प्राप्त होता है।

यदि अधः चिह्न हो तो माता से लाभ होता है।

यदि वाम पक्षीय त्रिकोण हो तो पत्नी पक्ष से लाभ एवं दक्षिण पक्षीय त्रिकोण होने से पिता द्वारा प्रचुर मात्रा में धन मिलता है।

कनिष्ठिका—यदि कनिष्ठिका उंगली का सिरा गोल हो व उस पर त्रिभुज हो तो जातक चाह कर भी भाइयों से व मातृपक्ष से कोई लाभ नहीं ले सकता। यदि सिरा लम्बा हो तो उन्नति व धनोपार्जन में परिवार व कुटुम्ब के लोग सहायक नहीं होते हैं। यदि सिरा चपटा एवं बैठा हुआ हो तो उसका लालन-पालन माता के अतिरिक्त कोई अन्य ही करता है। यदि सिरा गोल व भरा-भरा हो और उस पर त्रिकोण का चिह्न हो तो बहन लाभार्जन में सहायक होती है।

ऊर्ध्व मुख त्रिभुज होने पर इज्जत व सम्मान के साथ जातक जीवन व्यतीत करता है। यदि अधःमुख त्रिभुज हो तो जीवन में बार-बार अपमान सहन करना पड़ता है। वाम त्रिभुज होने पर जीवन में यश की मात्रा अत्यल्प तथा दक्षिण त्रिभुज होने पर जीवन पूर्ण सुख व यशमय व्यतीत होता है।

यदि उंगली का रंग गुलाबी हो तो श्रेष्ठ लाभ, लाल हो तो मध्यम व पीला हो

तो सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

अगूंठा—यदि अंगूठे का सिरा गोल हो और उस पर त्रिभुज का चिह्न हो तो जातक को श्रेष्ठ व उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त होती है। यदि लम्बा अंगूठा हो तो वह ज्योतिष या वैद्यक से धन कमाता है एवं प्रसिद्धि प्राप्त करता है। यदि चपटा व बैठा हुआ अंगूठा हो तो विद्या से लाभ नहीं होता। यदि गोल व भरा-भरा अंगूठा हो तो बार-बार शिक्षा में असफलता मिलती है।

यदि अंगूठे का रंग लाल हो तो सामान्य विद्या पाता है और यदि अंगूठे का रंग पीला हो तो अल्प विद्या एवं गुलाबी रंग होने पर उच्च शिक्षा प्राप्त करता है।

यदि अंगूठे पर ऊर्ध्व त्रिकोण हो तो विदेश में, देश में, अक्षय यश व कीर्ति प्राप्त होती है।

अध: त्रिकोण होने पर व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत करता है। वाम पक्षीय त्रिभुज आनन्द देता है तथा दक्षिणावर्त त्रिभुज होने पर धन-यश, सम्मान, कीर्ति सब कुछ प्राप्त करता है।

जलयान—यह निशान समुद्र यात्रा का परिचायक है। ऐसा व्यक्ति जीवन में एकाधिक बार समुद्र यात्रा करता है। विदेश से भी व्यापार कर अर्थोपार्जन करता है। यदि इस चिह्न के साथ यात्रा सबल व शुभ हो तो धनोपार्जन के साथ ऐश्वर्य लाभ भी करता है। देश-विदेश में उसके अनेक मित्र व अपने चाहने वाले होते हैं।

वज्र—वज्र का चिह्न प्रभुत्व व प्रमुखता का प्रतीक है। ऐसा चिह्न होने पर उस व्यक्ति का प्रभुत्व, दबदबा व अधिकार सर्वत्र रहता है।

इनका सामना कोई नहीं कर सकता। सर्वत्र यश व आदर मिलता है, प्रशासनिक योगयता का धनी वीरत्व का बाहुल्य व यश का प्रभुत्व रहता है। वे व्यक्ति अनुशासन की पूर्ति के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

मछली—यदि हाथ में मछली के समान दो चिह्न हों तो जातक दानवीर होकर प्रतिदिन अन्नदान करता है या अन्न क्षेत्र का प्रबन्ध अथवा याज्ञिक कार्य करने वाला अवश्य होता है।

यदि हाथ में मछली की पूंछ जैसा चिह्न हो तो पुरुष विद्वान व विद्वानों द्वारा सराहा जाता है। बुद्धिमान व ज्ञानी होता है।

मुकुट—शक्ति, सामर्थ्य-अधिकार-अनुशासन-प्रबन्ध-धन व ऐश्वर्य का यह चिह्न प्रतीक है। जातक खूब वैभव सम्पन्न, धन-धान्य, वस्त्राभूपण, भूमि, भवन, वाहन भृत्य-पशु आदि से सम्पन्न होता है। यह चिह्न प्राय: अत्यन्त उच्च शासनाधिकारियों के हाथों में पाया जाता है। ऐसे लोग धार्मिक, परोपकारी, वीर, न्यायप्रिय, निष्ठावान, जन-हितैषी होते हैं। इस चिह्न युक्त स्त्री भी सम्पन्न होती है।

वेदी—यज्ञ करते समय जैसी हवनार्थ वेदी बनाते हैं, ऐसा चिह्न यदि हाथ में हो तो व्यक्ति अग्निहोत्री होता है।

दण्ड—इस चिह्न से सम्पन्न पुरुष खूब बलवान होते हैं। दण्ड न्याय व अनुशासन

का प्रतीक है। व्यक्ति की स्वाभाविक रुचि व्यक्ति की अध्यात्मवाद की ओर झुकाव लिये रहती है। अनैतिकता से, अनुशासनहीनता से, छल-कपट से परे ये व्यक्ति निश्छल जीवन जीते हैं। ऐसा व्यक्ति घर-गृहस्थी के झंझट में पड़ना अधिक पसन्द नहीं करता, उसकी प्रवृत्ति वैराग्य की ओर निरन्तर बलवती होती रहती है। न्यायाधीशों के हाथों में भी इस चिह्न को देखा गया है।

ध्वज—यश-कीर्ति की पताका को फहराने वाला ध्वज चिह्न व्यक्ति को खूब ऊंचा उठाता है। उत्कृष्टता का प्रतीक, धार्मिक भावनाओं से परिवेष्ठित, विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाला,बुद्धि का सागर, नैतिकता की खान व्यक्ति पारिवारिक कुल की यश व कीर्ति को अक्षुण बनाए रखता है। जीवन में खूब ऊंचा पद प्राप्त करता है।

दांतें— उंगली पर दांते का चिह्न खूब स्पष्टता से देखा जा सकता है। एक वर्तुल में आरी के सदृश दांते रहते हैं। यही दांते के रूप में पहचाने जा सकते हैं।

दांते भी ऊर्ध्व, अधः तथा वाम व दक्षिणावर्त होते हैं। मैं अंगुष्ठ सहित भिन्न-भिन्न उंगलियों पर दांते का फल चयन स्पष्ट करूंगा।

तर्जनी—तर्जनी उंगली का सिरा यदि गोल रहे तथा उस पर दांते का चिह्न तो जातक के कई आलोचक होते हैं परन्तु सामने आकर नहीं अपितु पीठ पीछे ही आलोचना-निन्दा करते रहते हैं जातक को उनसे सावधान रहना चाहिए।

तर्जनी उंगली का सिरा लम्बा हो एवं उस पर दांते के चिह्न हों तो समाज की चली आई प्रथा से सहज विरोध रहता है तथा बौद्धिक कार्य करने वालों से स्वाभाविक वैर-विरोध व शत्रुता होती है।

यदि तर्जनी उंगली का सिरा चपटा व बैठा हुआ हो, और उस पर दांते के चिह्न हों तो निम्न स्तरीय लोगों से स्वाभाविक वैर-विरोध व शत्रुता होती है।

यदि उंगली का सिरा गोल एवं भरा-भरा हो तो उस पर दांते के चिह्न हों तो व्यक्ति का उच्चाधिकारियों से विरोध रहता है। तथा प्रायः अनजानी विपत्तियों से घिरा रहता है।

यदि निशान ऊर्ध्व हो तो जातक साहसी व निर्भीक होता है।

यदि दांते अधः मुख हों तो विरोध के रूप में जीवनयापन करता है। दांते यदि वाम मुख हों तो व्यर्थ शत्रुता पालता है और दक्षिणावर्त होने पर सामान्य से जातक का विरोध होता है।

यदि गुलाबी वर्ण हो तो शत्रु होंगे, पर हानि नहीं, लाल रंग होने पर शत्रु सन्मुख आने से घबराता है तथा पीला रंग हानि का परिचायक है।

मध्यमा— यदि मध्यमा का सिरा मोटा हो और उस पर दांते का चिह्न हो तो व्यक्ति को कुटुम्ब जन, परिवार के लोग, भाई-सन्तान तक धोखा देते हैं।

यदि मध्यमा का सिरा लम्बा हो व उस पर दांते के चिह्न हों तो जातक अपराध के कारण जेल जाता है। राज्य पक्ष से संघर्ष एवं जीवन कटुतापूर्ण रहता है।

यदि मध्यमा का सिरा चपटा हो, उस पर दांते के चिह्न हों तथा वह सिरा बैठा हो तो जातक-अत्यन्त निम्न कार्य व अपराधी वृत्ति का होता है।

मध्यमा का सिरा गोल व भरा-भरा हो व उस पर दांते के चिह्न हों तो उसके जीवन का अधिकांश समय मित्रों में खर्च होता है व मित्रों पर खूब धन खर्च करता है।

उंगली गुलाबी वर्ण की शत्रुहन्ता, लाल संघर्ष, पीला रंग पराजय का प्रतीक है।

ऊर्ध्व मुख दांते शत्रुओं पर विजय प्रदान करवाता है। अधःमुख दांते भय से ग्रसित रखते हैं। वामवर्ती अपराध करवाता है, एवं दक्षिणवर्ती शत्रुओं को हराता है।

अनामिका—यदि अनामिका उंगली का सिरा गोल हो और उस पर दांते हों तो इसका यह अर्थ है—व्यक्ति देव-अकृपा से पीड़ित रहेगा। पर अनामिका का सिरा लम्बा हो तो क्रूर-दुष्ट-व्यभिचारी व खलजन से उत्पीड़ित रहेगा।

अनामिका का सिरा चपटा व बैठा-बैठा हो और उस पर दांते के चिह्न के होने का अर्थ है जीवन में भूत-प्रेत-पिशाच बाधा से परेशान रहेगा।

अनामिका का सिरा गोल एवं भरा-भरा और दांते के चिह्न हों तो पिता से अनबन, कष्ट, दुख व परेशानियाँ भोगनी पड़ती हैं।

उंगली का वर्ण गुलाबी होने का तात्पर्य है कष्ट, लाल रंग विशेष तकलीफ एवं पीला रंग दुष्टता-दारुण दुःख का कारक है।

यदि अनामिका उंगली पर ऊर्ध्व दांते हों तो व्यक्ति को मां दुर्गा की उपासना करनी चाहिए।

अधः दांते टोने-टोटके के कारक शुभत्व देता है। वाम तांत्रिक प्रयोगों में अनुकूलता व दक्षिण वैदिक मन्त्रों में सफलता देती है।

कनिष्ठिका—यदि कनिष्ठिका सिरा गोल हो तथा उस पर दांते का चिह्न हो तो जातक पितृ विरोधी एवं कुटुम्ब द्वेषी होता है।

यदि कनिष्ठिका का सिरा लम्बा हो व उस पर दांतें के चिह्न हों तो पत्नी से सदैव अनबन रहती है व भोग सुख में न्यूनता रहती है।

यदि कनिष्ठिका का सिरा चपटा व बैठा हुआ हो तो परस्पर मित्र-द्वेष, विरोध, जेल, मार-पीट कुछ भी हो सकता है।

यदि यह सिरा गोल व भरा-भरा हो व उस पर दांते के चिह्न हों तो जातक का विरोध सास-ससुर से रहता है।

उंगली के पर्व का गुलाबी होने का अर्थ है लाभ, लालरंग शत्रुता व पीला हानि का द्योतक है।

ऊर्ध्व मुख दांते होने का अर्थ है विरोधी प्रबल है व अधोमुख होने का अर्थ है, शत्रु चालाक, दुष्ट, धूर्त है। वाम मुख दांते व्यर्थ शत्रुता व दक्षिणावर्त बुद्धिजीवियों

से भारी शत्रुता उत्पन्न करता है।

अंगूठा—अंगूठे का सिरा गोल हो व उस पर दांते के चिह्न हों तो वह व्यक्ति स्वयं में ही दो विरोधी परिस्थितियों में जीवित रहता है, पर सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति व्यर्थ मानसिक तनाव में कुण्ठाग्रस्त रहता है।

अंगूठे का सिरा चपटा व बैठा हुआ हो तो जातक क्रूर, समाज विरोधी कार्यों में लिप्त रहता है। यदि सिरा गोल व भरा-भरा हो तो व्यक्ति की शत्रुता दूर-दूर तक रहती है।

अंगूठा गुलाबी प्रसन्नता, लाल कठोर स्वभाव व पीला दुर्बलता व अस्थिर मनोवृत्ति का परिचायक है।

ऊर्ध्व दांते परोपकार, अधनीयता, दुष्टता, धोखा का प्रतीक, वामावर्त असवरवादिता व दक्षिणावर्त ईमानदारी का परिचायक है।

त्रिशूल—यह न्याय, शक्ति, शत्रुनाशक, शक्ति का प्रतीक चिह्न है। शक्ति है जहां, वैभव है वहां—जातक धन-धान्य से सम्पन्नता युक्त, वाहन व भवन-सुख से सम्पन्न होता है। व्यक्ति बलवान, शक्ति का उपासक, धर्मनिष्ठ व आचरण से शुद्ध होता है। सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित व माननीय होता है।

सिंहासन—सिंहासन नाम ही उच्चपद, सम्मान, प्रतिष्ठा, उच्चाशयता का प्रतीक है। यह शासक, सेनापति, न्यायाधीशों के हाथ में प्रायः पाया जाता है। किसी उद्योगपति के हाथ में इस निशान के होने का अर्थ है, अपार वैभव, सम्पन्नता एवं समाज में उनका प्रभुत्व है। किसी स्त्री के हाथ में इसके होने का अर्थ है, मान-प्रतिष्ठा, सम्मान, यश-वैभव व सम्पन्नता।

अंकुश—अंकुश का अर्थ है—न्याय, और जहां न्याय है वहां अनुशासन है। जहां अनुशासन है, वहां शान्ति है। जहां शान्ति है वहां ऐश्वर्य है और जहां ऐश्वर्य है वहां सुख, आनन्द, प्रसन्नता है। ऐश्वर्यशाली व्यक्ति धन-धान्य, वैभव से सम्पन्न, जन-समाज पर प्रभुत्व रखने वाला, किसी राज्य विभाग में उच्च पदासीन, न्यायी व व्यापारी है तो उच्च स्तरीय अधिकारी व व्यापारी होगा।

पालकी—धन-ऐश्वर्य, सम्पन्नता, प्रसन्नता, वाहन सुख का प्रतीक चिह्न है। स्त्रियों के हाथ में यह चिह्न विशेष शुभ माना गया है। वह दूर-दूर की धार्मिक यात्राएं व तीर्थाटन करती है। कन्या के हाथ में इस चिह्न होने का अर्थ है, सम्पन्न घर में विवाह होना। गृहस्थ जीवन सुन्दर व्यतीत होता है।

चंवर—यह प्रभुता उच्च व्यक्तित्व का प्रतीक चिह्न है। ऐसे व्यक्ति के घर में नौकर-चाकरों की भरमार बनी रहती है। दूर-दूर तक व्यापार फैलाकर धन-यश-मान प्राप्त करता है। दैविक-धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर व्यय करता है प्रभुता में सम्पूर्ण भौतिक ऐश्वर्य भोगता है।

कल्पवृक्ष—इच्छापूर्ति, कामना पूर्ति का परिचायक चिह्न व्यक्ति को पूर्ण प्रभुता, सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करता है। भूमि, भवन, वाहन सुख, मृत्यु, भोग-सुख, वस्त्राभूषण

से सम्पन्न, पशु-सुख युक्त, श्रेष्ठ नारी-सुख, शैय्या सुख, सदैव प्रसन्नचित्त, दानवीर, न्यायप्रिय, परोपकारी, गरीब प्रतिपालक, यशस्वी होगा।

हाथ में शंख-छत्र-पालकी, हाथी, घोड़ा, कमल दल सभी चिह्न वैभव सम्पन्नता व राजा तुल्य सुख भोगने के प्रतीक हैं।

हाथ में कलश—कमल-नाल, ध्वज, अंकुश धन-धान्य, न्याय के प्रति आस्थावान व उच्चाशयता के प्रतीक हैं।

तलवार, बरछी, त्रिशूल, फरसा, तोमर, धनुष, माला आदि अनुशासन, न्याय, बल, नियन्त्रण, शक्ति के प्रतिपादक हैं।

ऊखल—ऐसे चिह्न से युक्त व्यक्ति जीवन में अनेक याज्ञिक कार्य करता है।

हाथ में मगर, ध्वजा, पताका, कोठार आदि चिह्न, धन्य-धान्य सुख के प्रतीक हैं।

हाथ में कुआं, बावड़ी, तालाब, सिंहासन, त्रिकोण धर्मिकता की ओर संकेत करते हैं।

हाथ में पर्वत, पर्वत श्रृंखला, कंकण, योनि, नरमुण्ड, घर जैसे चिह्न मंत्रीत्व पद प्रदान करते हैं।

हाथ में सूर्य, चन्द्र लता, नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोणादि सम्पन्नता व सुख के प्रतीक हैं।

दर्पण—जैसा है वैसा हम दर्पण में देखा करते हैं। दर्पण चिह्न युक्त व्यक्ति संसार के यथार्थ को मात्र स्वीकार करता है। वह कल्पना की ऊंची उड़ानें नहीं भरता, बीते हुए पर विचारता है, वर्तमान में जीना कोई इनसे सीखे। परिपक्व बुद्धि, दृढ़ निश्चय के साथ वय के साथ-साथ आध्यात्म की ओर बढ़ता चला जाता है। जीवन में लम्बे समय तक श्रेष्ठ व्यापारी या उच्च प्रशासनिक अधिकारी बना रहता है। समयानुसार धर्म प्रचारक, मन्दिर, धर्मशाला, गोशाला, दैविक कार्य में लग जाता है। वृद्धावस्था में वह संन्यासी या योगी होगा।

हल—जिस व्यक्ति के हाथ में यह चिह्न हो, वह कृषि कर्म करने वाला अर्थात् हलधर, किसान होगा। परन्तु वह साधन सम्पन्न भी होगा। जीवन में कोई अभाव या कष्ट नहीं होगा। बड़ा खेत या फार्म या फलों के बगीचे होंगे। यदि व्यापारी भी है, तो वह अनाज का ही व्यापारी या किराने का व्यापार करने वाला होगा। स्त्री के हाथ में इस चिह्न के होने का अर्थ है वह कृषक पत्नी या अनाज के व्यापारी की पत्नी होगी।

पुष्पमास—यह चिह्न शुभ संकेतक है। मनुष्य का श्रृंगार प्रिय होना सिद्ध करता है। वह कोमलकान्त, सरल हृदय, दयावान व ईश्वर भक्त अवश्य होगा। ऐसे व्यक्ति रसिक शिरोमणि, सुगन्ध प्रिय, मिष्टभाषी, सुन्दर रमणियों के प्रति आकर्षित होगा, सौंदर्य प्रेमी होगा तथा ऐसी नारियां खूब सज-धज कर रहना पसन्द करती हैं और वे अपने जीवन में विलासी होती हैं।

कुण्डल—यह भी शुभ संकेतक है। सम्पन्नता का परिचायक व ऐसा व्यक्ति श्रृंगार प्रिय होगा।

कवच—शूरवीरों के हाथों में प्रायः यह चिह्न पाया जाता है। ऐसा व्यक्ति स्वस्थ, मजबूत, दृढ़, मतावलम्बी, निडर, निर्भीक व शत्रुनाशक युद्ध में विजय प्राप्त करने वाला सेनापति होगा। आर्थिक मामलों में भी ये कमजोर नहीं होते।

श्रीवत्स—कवच के समान गुण वाला यह व्यक्ति होगा। इसके होने से धन-संपत्ति, सुख, ऐश्वर्य सभी कुछ होगा। उच्च स्तरीय वाहन सुख, धर्म कार्यों में रुचि रखने वाला, न्यायप्रिय विवेकी होगा। अपने जीवन में इन्हें कोई अभाव नहीं रहता।

यव—सामुद्रिक शास्त्र में यव का बहुत ज्यादा महत्त्व है, इसे नकारा नहीं जा सकता।

यह दो प्रकार के होते हैं—

पूर्ण यव, अर्द्ध यव।

पूर्ण यव में यव का चिह्न पूर्ण होता है, जबकि अपूर्ण या अर्द्ध यव में यवाकृति पूर्ण मिली हुई नहीं होती है।

प्रायः भ्रम के कारण अपूर्ण यव को यव मान, फल, कथन देने पर गलत हो जाता है।

सामुद्रिक शास्त्र में इन दोनों का निजी महत्त्व है। यव का चिह्न मूलतः आंख के समान होता है। यह आंख या यव उंगली के जिस ओर झुका होगा, उसी प्रकार वह चिह्न माना जाएगा। दक्षिणावर्त या वामावर्त। यह भी ऊर्ध्व व अधः होता है।

इस प्रकार इसके चार भाग हैं—

उर्ध्वमुख, अधःमुख।

वामावर्त, दक्षिणावर्त।

तर्जनी—तर्जनी उँगली का सिरा यदि गोल है तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति वृद्धावस्था सानन्द व्यतीत करता है।

तर्जनी का सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो जातक दुबला, पतला, कमजोर व अशक्त रोगी होगा। यदि पूर्ण यव हो तो रक्त न्यूनता से वह दुःखी होगा।

यदि तर्जनी का सिरा चपटा, बैठा हुआ हो तथा उस पर अपूर्ण यव चिह्न हो तो व्यक्ति में सदैव ही हीन भावना भरी रहती है, उसके व्यक्तित्व में निखार नहीं आ सकता।

यदि उस पर पूर्ण यव हो तो व्यक्ति चालाक, धूर्त, अवसरवादी, अपना काम निकालने में सिद्धहस्त होता है।

यदि तर्जनी का सिरा भरा हुआ व गोल हो तथा उस पर अपूर्ण यव चिह्न हो तो व्यक्ति ऐश्याशी, विलासी तथा शानशौकत पर जरूरत से ज्यादा व्यय करता है।

यदि उस पर पूर्ण यव का चिह्न हो तो व्यक्ति गुप्तांग रोग से पीड़ित रहता है।

ऊर्ध्व—ऊर्ध्व अपूर्ण यव कष्टसहिष्णुता, संघर्षशीलता, धैर्य, कर्मण्य, आत्मानुभूति से संचालित होता है।

पूर्ण यव हो तो आयु के साथ-साथ सांसारिकता से मोह छूटता चला जाता है।

अधः—अधः अपूर्ण यव तर्जनी पर होने का अर्थ है—जातक दुर्गुणी, शरावी, कवावी, मांसाहारी, जुआरी, व्यसनी है।

पूर्ण होने पर कामी, काम पिपासु, भोगलिप्त, मर्यादाहीन, वहुस्त्री-भोगी होता है।

वाम—वाम अपूर्ण यव होने से तात्पर्य है, जातक गुढारोग, गुल्म व उदर रोग से सदैव पीड़ित रहेगा।

पूर्ण यव पेट का ऑपरेशन होने या कराने, मृत्यु तुल्य कष्ट भोगने का परिचायक है।

दक्षिण—यदि तर्जनी पर दक्षिणावर्त अपूर्ण यव हो तो जातक के सिर भाग में चोट लगती है। पर पूर्ण होने का अर्थ है कि जातक की मानसिक शक्ति अस्त-व्यस्त, विशृंखलित व जातक निम्न विचार वाला है।

उंगली का रंग गुलाव हो व उस पर अपूर्ण यव हो तो प्रभुसत्ता-सम्पन्न, पूर्ण योग कारक, रोगनाशक है।

लाल वर्ण व अपूर्ण यव का अर्थ है, रोग-पीड़ित होना एवं पूर्ण यव गुप्त रोगकारक है।

पीत वर्ण, अपूर्ण एवं चिररोगी व पूर्ण यव क्षय रोग, जलोदर रोग का कारक है।

मध्यमा—मध्यमा उंगली के सिरे पर यव चिह्न होना एवं महत्त्वपूर्ण स्थिति का परिचायक है।

यदि मध्यमा का अगला सिरा गोल व उसपर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति का भाग्योदय २८ वर्ष में ही हो जाता है। यदि मध्यमा उंगली का सिरा लम्बा हो और उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति का भाग्योदय दूर देश, परदेश या विदेश तक में होता है। पर पूर्ण यव होने पर उसका भाग्योदय जन्म स्थान के इर्द-गिर्द होता है।

यदि मध्यमा का सिरा चपटा, बैठा हुआ हो ओर अपूर्ण यव हो तो उसका भाग्य सदैव उससे वाम रहता है तथा पूर्ण यव का अर्थ है बार-बार की असफलता के बाद अन्ततः सफलता प्राप्त कर लेता है।

यदि मध्यमा का सिरा गोल व भरा-भरा हो तो बहुत अधिक कष्ट उठाने व विपत्ति सहन करने पर भाग्योदय होता है, पर पूर्ण यव प्रवल भाग्य समर्थक है। वह अकस्मात धन प्राप्त करता है।

उर्ध्व—यदि मध्यमा पर अपूर्ण ऊर्ध्व यव हो तो व्यक्ति व्यापार में ईमानदारी रखते हुए खूब उन्नति करता है।

अधः—यदि मध्यमा पर अपूर्ण अधः यव हो तो व्यापार में जातक हारता है। तथा मूल धन तक खो बैठता है, पर पूर्ण होने पर हार कर भी पुनः संभल जाता है।

वाम—अपूर्ण वाम यव बदनामी, कष्ट, पराजय, लांछन देता है, पर पूर्ण यव भोग व इतर रोगात्मक सम्बन्ध बनाकर इज्जत खोता है।

दक्षिण—दक्षिणावर्त अपूर्ण यव सन्तान से सुख व पूर्ण यवस्व कार्य से ख्याति देता है।

यदि उंगली का रंग गुलाबी हो तो जातक के जीवन-यापन में पूर्णतः अनुकूलता बनी रहती है। हर कार्य-व्यवहार में सफलता मिलती है। लाल वर्ण है होने पर आवश्यकता ये ज्यादा बाधाएं विपत्तियां आती है। यदि पीला वर्ण तो जीवन में भाग्योदय होने पर भी जातक उसका लाभ नहीं उठा सकता।

अनामिका—यदि अनामिका उंगली का सिरा गोल हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो जातक शुभ कार्यों से यशोपार्जन करता है, पर यदि यही यव पूर्ण हो तो जातक अविलम्ब उन्नति कर समाज में यशः-मान-ऐश्वर्य सुख प्राप्त करता है।

यदि अनामिका का सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो जातक कला के क्षेत्र में उन्नति करता है। परन्तु पूर्ण यव हो तो उसकी ख्याति देश-विदेश में सर्वत्र होती है।

यदि सिरा चपटा हो एवं उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो जातक निराश, निठल्ला, कायर, दुःखी होता है। यव के पूर्ण होने पर जातक कठिनतम संघर्ष कर जीविकोपार्जन को प्राप्त होता है।

यदि सिरा भरा हुआ व गोल हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को परिचित मित्रों द्वारा भरपूर सहयोग लगभग नहीं मिलता।

यदि अंगुली का वर्ण गुलाबी हो तो जातक १६ वर्ष तक ही भाग्योदय को प्राप्त हो जाता है। यदि अंगुली का वर्ण लाल हो तो शत्रु-पक्ष प्रबल होता है तथा पीला रंग होने पर सफलता कोसों दूर भागती है।

ऊर्ध्व—यदि अनामिका उंगली पर ऊर्ध्व परन्तु अपूर्ण यव हो तो वृद्धावस्था में सांसारिकता से परे संन्यासी का-सा जीवन व्यतीत करता है पर पूर्ण यव होने से काम से परे पूर्ण संन्यासी बन यश पाता है।

अधः—यदि अनामिका पर अपूर्ण यव हो तो जातक जीवन में अपयश व निन्दा का सामना करता है। पूर्ण यव होने पर घर-कुटुम्ब, परिवार, जाति हर संभव-असंभव सहायता करने पर भी उसे यश व मान नहीं मिलता।

वामावर्त—अनामिका पर वामावर्त अपूर्ण यव हो तो जातक की संगति समाज के निम्न स्तर के लोगों से होती है, पर पूर्ण यव होने पर परिस्थिति संभल जाती है, अपमान से बचता है।

दक्षिणावर्त—यदि अनामिका पर दक्षिणावर्त अपूर्ण यव हो तो समाज के

गण्यमान्य उच्च स्तरीय लोगों से सम्पर्क कर उन्नति करता है, पर पूर्ण यव होने पर उच्च पद को प्राप्त कर धन-धान्य-ऐश्वर्य पाता है।

कनिष्ठिका—यदि कनिष्ठिका का सिरा गोल हो व उस पर अपूर्ण यव का चिह्न हो तो जातक जीवकोपार्जन में कम रुचि लिया करता है, परन्तु यदि पूर्ण यव हो तो व्यापार की ओर झुकाव रहता है, नौकरी की ओर नहीं।

यदि कनिष्ठिका का सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति सामान्य कलाकार रहता है व उदर पोषण मात्र कर पाता है, परन्तु पूर्ण यव होने पर चित्रकारी व संगीत-पेंटिंग्स आदि से अर्थोपार्जन करता है।

यदि कनिष्ठिका का सिरा चपटा, बैठा हुआ हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति अर्थ की कमी अनुभव करता है। परन्तु पूर्ण यव अनेक आय के स्रोत प्रदान करता है।

यदि छोटी अंगुली का सिरा भरा हुआ व गोल-मोल हो तो जातक पूर्ण समृद्धिशाली व पूर्ण यव होने पर हर दृष्टि से जातक समृद्धिशाली रहता है।

यदि कनिष्ठिका का रंग गुलाबी हो तो अपने प्रयासों से पूर्ण संघर्ष के बाद उसे सफलता मिलती है। रंग पीला होने पर हर सम्भव-असम्भव प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिलती।

ऊर्ध्व—यदि कनिष्ठिका के सिरे पर ऊर्ध्व अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को जीवन में अकस्मात् सहायता मिलती है। पूर्ण यव होने पर जीवन में बाधाएं नहीं के बराबर होती हैं।

अधः—यदि कनिष्ठिका पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति को जीवन में हर क्षेत्र में विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। पर पूर्ण यव होने पर वृद्धावस्था सुखमय व्यतीत होती है।

दक्षिणावर्त—यदि कनिष्ठिका अंगली अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति पैतृक संपत्ति का भोग नहीं करता व पूर्ण यव होने पर वह पैतृक संपत्ति प्राप्त करने में सफल होता है।

वामावर्त—वामावर्त यव हो तथा अपूर्ण होने पर व्यवसाय में सहयोगी, पार्टनर, धोखा देता है तथा पूर्ण यव होने पर दोनों में परस्पर कोर्ट-कचहरी की बात आती है व अन्ततः हारता है।

अंगुष्ठ—यदि अंगुष्ठ गोल हो तो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो जातक व्यर्थ बकवासी, अहंवादी, घमंडी, कठोर हृदय, दुष्टात्मा होता है, पर पूर्ण यव होने पर जातक हत्यारा होता है। आजीवन कोर्ट-कचहरियों के चक्कर काटता है।

यदि अंगूठे का सिरा लम्बा हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो जातक सामान्य कलाकार होता है, पर पूर्ण यव होने पर व्यक्ति श्रेष्ठ कलाकार होता है। पूर्ण यव पितृ पक्ष का नाम रोशन करने में समर्थ होता है।

यदि अंगूठा का सिरा चपटा बैठा हुआ हो तथा उस पर अपूर्ण यव हो तो

व्यक्ति हीनभावना से ग्रस्त रह कर असफलता को प्राप्त करता है। पूर्ण यव मित्र से सहायता प्रदान करवाता है।

यदि अंगूठे का सिरा गोल व भरा-भरा हो तो व्यक्ति सफल व्यवसायी या कूटनीतिज्ञ होता है, पर पूर्ण यव राजनीति में सफलता देता है।

गुलाबी रंग हो अंगूठे का व उसपर अपूर्ण यव हो तो प्रभाव में न्यूनता व पूर्ण यव प्रभाव बढ़ाता है। लाल रंग हो व अंगूठे पर अपूर्ण यव होने का अर्थ मानहानि, पर पूर्ण यव खूब सम्मान देता है। पीत वर्ण व अपूर्ण पाण्डु रोग पर पूर्ण यव गुप्त रोग देता है।

ऊर्ध्व—यदि अंगूठे पर ऊर्ध्व यव हो तो व्यक्ति जरूरत से अधिक ईमानदार रहता है, पर वास्तविकता सर्वथा भिन्न-भिन्न होती है।

पूर्ण यव होने पर व्यक्ति देशकाल परिस्थिति को देखकर चलना सीखता है।

अधः—यदि अंगूठे पर अधः अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति निम्न स्तरीय कार्यों से धन कमाता है।

पूर्ण यव पददलित व पथभ्रष्ट करता है।

वाम—यदि अंगूठे पर वाम पर अपूर्ण यव हो तो व्यक्ति परस्त्री गामी हो वदनाम होता है।

पूर्ण यव भी परस्त्रीगामी बनाता है पर वह उससे बदनाम नहीं होता है।

दक्षिण:—अंगूठे पर दक्षिणावर्त अपूर्ण यव असफल प्रेमी बनाता है पर पूर्ण यव प्रेम में असफलता देते हुए भी उसके प्रति सच्चा, संतुष्ट व निष्ठावान बनाता है।

तोरण— यह शुभता के साथ-साथ सद्‌गृहस्थ होने एवं शुभ आनन्दमय जीवन व समृद्धि का प्रतीक चिह्न है। इनके पास भूमि, भवन व समस्त सांसारिक वैभव पाये जाते हैं। संसार में यश-मान-सम्मान-प्राप्त करता है। न्यूनता, अभाव, रोग, और कष्ट इनसे दूर भागते नजर आते हैं। उच्च स्तरीय वाहन सुख हर क्षण भोगता है।

अश्व—ऐसा व्यक्ति घुड़सवारी का शौकीन होता है, यह निश्चित है। शासनाधिकारी या उच्च स्तरीय व्यवसायी, सम्पन्न प्रतिष्ठित और इज्जतदार नेता होता है। दैहिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ रहता है।

सिंह—हिम्मत, बल, साहस और अनुशासन का प्रतीक यह चिह्न सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करता है। अत्यन्त शूरवीर, युद्धप्रिय, शत्रुहन्ता, प्रभुता सम्पन्न, वैभवशाली, उत्तम राज-पुरुष होता है।

हाथी—यह लक्षण उत्तमोत्तम राज-पुरुष, श्रेष्ठतम, वैभव, यश व कीर्ति का प्रतीक है। हाथी के हौदे पर बैठने वाला, महा भाग्यशाली, राजपूजित, उच्च पदाधिकारी, उच्च स्तरीय व्यवसायी होगा।

सूर्य—यह अनुशासन, तेजस्विता का प्रतिक है। ऐसा व्यक्ति नैतिक, आदर्शों के लिए मरमिटने वाला,सात्त्विक, सत्यान्वेपी, भूमिपति, सेवावृत्ति वाला, दयालु,

धार्मिक, परोपकारी, विद्वान, प्रभावशाली, देव-गुरु-अतिथि पूजक, सदगुण ग्राहक, माननीय, यशस्वी, प्रतापी होगा।

चन्द्रमा—यह अज्ञानान्धकार को मिटाने वाला, तेजस्विता का प्रतीक चिह्न है। इनमें उपर्युक्त सूर्य वाले गुणों से भी अधिक शुभ गुण होते हैं? शान्त-गम्भीर व क्षमाशील होगा।

यदि स्त्री के हाथ में यह चिह्न है, तो वह परम सुन्दरी, गौरवपूर्ण, मोहिनी, प्रभावी व आकर्षक होगी।

मोर— मोर का चिह्न जिस पुरुष के हाथ में होगा वह व्यक्ति कलाकार, उच्चाभिलाषी, संगीत व बाद्य प्रेमी होगा। ऐसा व्यक्ति अन्तर्मुखी, उसका बाह्य व्यक्तित्व लुप्त प्राय रहेगा व वह लापरवाह होगा। धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न, प्रौढ़ावस्था में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

यदि वह स्त्री है तो उसका स्वर कोयल सम सुन्दर एवं आकर्षक होगा। रसिक प्रिय व भोगप्रिय होगी।

हंस—जिसके हाथ में हंस का चिह्न हो, उस पर लक्ष्मी व सरस्वती दोनों की समान कृपा होगी। वह गायत्री का उपासक, विद्वान, खूब धार्मिक, अभिजित, देवप्रिय, वेद-पुराण का जानकार, याज्ञिक कार्य भी करने वाला होगा। आयु के साथ आध्यात्मिक भाव बढ़ता चला जाएगा। यंत्र-मंत्र-तंत्र का जानकार, सिद्ध पुरुष होगा। धर्म का अधिष्ठाता, धर्म संस्था का संचालक या धर्म प्रचारक होगा।

कच्छप—यह चिह्न जल यात्रा व विदेशाटन का प्रतीक है। ऐसा व्यक्ति समुद्र पार की यात्रा जीवन में अवश्य करता है। अतः सावधान रहना चाहिए। धन-धान्य-वैभव आदि से सम्पन्न ऐसा व्यक्ति होता है। व्यक्ति समाज का नेतृत्व करता है।

मछली—स्त्री के हाथ में मछली का आकार पूर्ण सौभाग्य प्रदान करता है।

स्त्री के हाथ में स्वास्तिक का चिह्न सौभाग्य, यज्ञ, धन, ऐश्वर्य व गृहस्थ सुख का द्योतक है।

स्त्री के हाथ में कमल चिह्न राजरानी होने, श्रेष्ठ सन्तान व पूर्ण सुख देने का परिचायक है।

स्त्री के हाथ में राजमहल जैसा चिह्न राजा तुल्य सुख एवं ऐश्वर्य भोगने का प्रतीक है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में शंख, छत्र या कच्छप का चिह्न है तो वह राजमाता होगी।

तराजू का निशान स्त्री के हाथ में न्याय व व्यवसायी की पत्नी होने का प्रतीक है।

स्त्री के हाथ में यदि हाथी, घोड़ा-बैल-देवमन्दिर-वज्रादि का चिह्न है तो वह शास्त्रों को जानने वाली श्रेष्ठ पुत्र पैदा करने वाली, तीर्थाटन- व्रत-उपवास करने

वाली होगी।

यदि किसी स्त्री के हाथ में बैलगाड़ी के समान चिह्न है तो वह कृषक की पत्नी होगी।

स्त्री के हाथ में चंवर, अंकुश, या धनुष-जैसा चिह्न राजपत्नी होने का संकेत है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति या नगाड़े का चिह्न हो तो वह दानवीर, कीर्तिमयी होगी।

यदि किसी स्त्री के हाथ में कंकपक्षी, मेंढक, सियार, बिच्छू, सूर्य या बिल्ली के समान चिह्न हो तो वह दुर्भाग्यशाली, परजन को कष्टदायक, स्वयं अभागी होगी।

यदि किसी स्त्री के हाथ में ऊंट, गर्दभ आदि जैसे चिह्न हों, तो वह दुर्भाग्यशाली, अभागी, कर्कशा, कष्टकारी, दुष्टा, झगड़ालू होगी।

पर्वत—इस चिन्ह से युक्त व्यक्ति निडर, अडिग, धैर्यवान, अचलायमान, स्थिर, दृढ़निश्चयी, स्थिर बुद्धि, सुलझे हुए मन-मस्तिष्क का स्वामी, उन्नत जीवन व्यतीत करने वाला, धनवान, वैभवशाली, उच्चाभिलाषी, भूमि-भवन, मृत्यु-वाहनादि से सम्पन्न, उच्च व्यवसायी होगा। ठेकेदारों के हाथों में ऐसे चिह्न प्रायः देखे जाते हैं।

कलश—इस चिह्न का धार्मिक महत्त्व है। ऐसा व्यक्ति साधन सम्पन्न, व्यवसायी, समर्पित सेवक सत्कर्मों में व्यय करने वाला, मंदिर, बाग, घाट, गोशाला बनाने वाला, आध्यात्मिक कार्यों में खर्च करने वाला होगा। कथा वार्ता व सार्वजनिक कार्य तथा साधु-संगति में समय व्यतीत करता है।

लक्ष्मी—हाथ में लक्ष्मी का चिह्न महान् ऐश्वर्य, सौभाग्य व सुख देने वाला है। जिसके हाथ में यह चिह्न होगा, वह परम ऐश्वर्य सम्पन्न, सर्व प्रकारेण सुखी होगा। दुःख, संकट, रोग या कष्ट जीवन में कभी नहीं आता। दान-पुण्य, परोपकार में, सार्वजनिक हित में खूब व्यय करता है। समाज का भली प्रकार नेतृत्व करता है। पत्नी लक्ष्मी के समान सुन्दर, सौभाग्यशाली होगी। अभाव नाम की कोई चीज पास ही नहीं आती।

बावड़ी—इसका प्रभाव परोपकार, उदारता, दान-पुण्य, धार्मिक कार्यों में होता है। पैसा अधिक न होने पर भी दानमय वृत्ति बनी रहती है। सेवा कार्य में मन खूब लगता है।

कुण्ड—इसका फल भी उपर्युक्त समान ही होता है। इस चिह्न वाले जातक गर्मियों में प्याऊ लगाना, पेड़ लगाना, भूखों को भोजन देना आदि कार्य सम्पन्न करते हैं।

सरोवर—यह भी आवश्यकता से अधिक परोपकार में व्यस्त रहने का चिन्ह है। ऐसा व्यक्ति कार्यकुशल गम्भीर, धर्मात्मा होता है। अपने जीवन में धर्म-स्थान का अवश्य निर्माण करता है। कृषि-कर्म में ये खूब सफल होते हैं। स्त्री के हाथ में यदि यह चिह्न है तो वह अत्यन्त दयावान, पतिप्रिय व ईश्वर के प्रति निष्ठावान होगी।

वज्र—यह शिखर वृत का चिह्न होता है। हाथ में इसक उपस्थिति, शक्ति, साहस, सामर्थ्य, धैर्य, हिम्मत व आत्मविश्वास का प्रतीक है।

तर्जनी—तर्जनी का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति प्रबल साहसी व नेतृत्व प्रधान राजकीय सेवा में सफलतम् प्रशासक सिद्ध होता है।

यदि सिरा लम्बा हो तथा उस पर वज्र का निशान हो तो जातक हर कार्य का प्रारम्भ तो जोर-शोर से करती है, परन्तु थोड़ी-सी भी विपत्ति या अड़चन आने पर उस कार्य को छोड़, दूसरे कार्य की ओर लग जाता है।

यदि सिरा चपटा व बैठा हुआ हो तो व्यक्ति सर्वथा कायर, बुजदिल व मरा हुआ व बुझे अंगारे-सा जीवन व्यतीत करता है।

यदि नाखून के आगे का भाग गोल व भरा-भरा-सा हो तथा उस पर वज्र चिह्न हो तो व्यक्ति लापरवाह पर हिम्मती होता है।

तर्जनी का वर्ण गुलाबी, क्षमा धैर्य जैसा गुण देता है। पर लाल वर्ण क्रोध, चंचलता, उतावलापन, व पीलावर्ण दब्बूपन भी प्रदान करता है।

ऊर्ध्ववज्र—तर्जनी उंगली पर ऊर्ध्व वज्र प्रबल साहस, हिम्मत, निर्भीकता, उत्सुकता, प्रदान करता है।

अधः वज्र—यानि तर्जनी उंगली पर अधोवज्र हो तो व्यक्ति धोखे से, छल-कपट से शत्रु को परास्त करने में विश्वास रखता है।

वाम-पक्षीय—वामावर्त का गुण प्रदान करता है। नेता बनता है। समाज में उन्नति व यश पाता है।

दक्षिण पक्षीय—यदि तर्जनी में दक्षिण पक्षीय वज्र हो तो व्यक्ति सम्माननीय जीवन जीता है, प्रशासनिक सेवा में उच्च पद प्राप्त करता है।

मध्यमा—यदि मध्यमा उंगली का अग्रभाग गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति क्रूर व क्रोधी स्वभाव का होता है। अपने इस स्वभाव के कारण ही इसके कई कार्य बनते-बनते रह जाते हैं।

यदि मध्यमा उंगली का सिरा लम्बा हो व उस पर वज्र का चिन्ह हो तो जातक खलनायक बनता है। रंग मंचीय कार्य करता है। प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

मध्यमा उंगली का सिरा यदि चपटा व बैठा हुआ हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति अवश्य हत्यारा होता है, उसे शासकीय दण्ड या यातना भोगनी पड़ती है।

यदि मध्यमा उंगली का सिरा गोल व भरा-भरा हो तो उसे नेतृत्व करना पड़ता है। समाज का भली प्रकार वह नियन्त्रण भी करता है, संचालन भी करता है।

यदि मध्यमा का वर्ण गुलाबी हो तो जातक निष्क्रिय जीवन व्यतीत करता है। यदि लाल वर्ण हो तो असंभव को संभव बनाने वाला, प्रतिकूल को अनुकूल बनाना

जानता है। पीला रंग हो तो अपनी ही गलतियों से बना-बनाया कार्य बिगाड़ देता है व व्यर्थ जीवन व्यतीत करता है।

ऊर्ध्ववज्र—यदि मध्यमा उंगली पर ऊर्ध्व वज्र हो तो व्यक्ति प्रबल साहसी व निडर, कठिनाइयों का सामना करने में कुशल होता है।

अधः वज्र—यदि मध्यमा उंगली पर अधोवज्र हो तो व्यक्ति पाप कार्य करने वाला, मन का कुटिल, दुष्ट, बनावटी जीवन जीने वाला, मन, द्वेष, भाव रखने वाला होता है।

वाम वज्र—मध्यमा उंगली पर वाम वज्र व्यक्ति की जिद्द व हठधर्मिता व्यक्त करते हैं। ये टूटना तो मंजूर करते हैं, परन्तु झुकना नहीं। आत्माभिमान की ये चरम सीमा लांघ जाते हैं। एक बार जो निर्णय कर लिया, कर लिया। उसे बार-बार बदलना पसन्द नहीं करते।

दक्षिण वज्र—मध्यमा पर दक्षिण वज्र हो तो वह व्यक्ति होशियार, ऊँच-नीच, जय-पराजय, यश-अपयश, हानि-लाभ को समझने वाला होता है। दृढ़ निश्चयी व कार्य कुशल होता है।

अनामिका—अनामिका उंगली का सिरा यदि गोल हो एवं उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति अपने कार्यों से बदनामी मोल लेता है।

यदि अग्रभाग लम्बा हो व उस पर वज्र का निशान हो तो व्यक्ति पर-स्त्रीगामी होकर बदनाम होता है एवं यह प्रेम विफल रहता है। यदि अग्रभाग चपटा बैठा हुआ हो तो व्यक्ति दुष्ट, हत्यारा व निर्दयी होता है। उसके हृदय में दया, ममता, मोह का स्थान ही नहीं होता। किसी के प्रति उसके मधुर संबंध नहीं हो सकते।

यदि अनामिका का अग्रभाग गोल एवं भरा हुआ हो और उस पर वज्र का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति अनैतिक उपायों से धन कमाता है एवं गलत कार्यों में ही जोर-शोर से खर्च करता है।

यदि अनामिका का वर्ण गुलाबी हो व उस पर वज्र का चिन्ह हो तो व्यक्ति अपेक्षाकृत शान्त, सरल, कष्ट-सहिष्णु होता है। लाल वर्ण होने पर व्यक्ति आत्मसहायवान, विश्वासपात्र व भावुक होता है। यदि पीला हो तो जातक पथभ्रष्ट होता है।

ऊर्ध्व—यदि अनामिका उंगली पर ऊर्ध्व वज्र का चिह्न हो तो वह व्यक्ति हिम्मती, निर्भीक, निडर, रूआब वाला तथा अपना कार्य निकालने में सिद्धहस्त होता है।

अधः—अनामिका पर अधोमुखी वज्र के होने के अर्थ हैं-व्यक्ति दुष्ट, निर्दयी व साहसी तथा घोर स्वार्थी होता है।

वाम—अनामिका पर वाम वज्र होने का अर्थ है व्यक्ति अनैतिक कार्यों से धन एकत्र करता है। गलत कार्य करने वालों का वह सरदार बना रहता है।

दक्षिण—दक्षिण वज्र वाला व्यक्ति मिलिट्री आदि में ठेके लेने वाला, शस्त्रास्त्र

का व्यापारी होगा।

कनिष्ठिका—कनिष्ठिका उंगली का अग्रभाग गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो जातक पुलिस सेवा में ख्याति प्राप्त करता है तथा अगला भाग लंबा हो तथा उस पर वज्र का चिह्न अंकित होने का अर्थ है व्यक्ति गुप्तचर विभाग से धनोपार्जन करेगा।

यदि अगला भाग चपटा एवं बैठा हुआ जैसा हो व उस पर वज्रांकित हो तो कुख्यात चोर, जेब काटने वाला होगा। कई बार जेल जायेगा। यदि अगला भाग गोल व भरा हो तो व्यक्ति साहसपूर्ण कार्य करते मारा जाता है या अदालती दण्ड देने से मरता है।

उंगली का वर्ण गुलाबी, कायरता, लालवर्ण साहस व झगड़ालू प्रवृत्ति, पीला रंग सुस्ती व आलस्य का कारण है।

ऊर्ध्व—यदि कनिष्ठिका उंगली पर ऊर्ध्व वज्र हो तो वह व्यक्ति अदम्य साहसी व संघर्षशील होकर मन का भेद किसी को नहीं देता।.

अधः—यदि कनिष्ठिका पर अधोमुखी वज्र हो तो सफल गुप्तचर, अधिकारी होगा।

वाम—यदि कनिष्ठिका पर मुख वज्र चिन्ह हो तो जातक की अकारण मृत्यु होगी या पुराना शत्रु समाप्त करेगा, परन्तु वह अन्त तक संघर्ष करना नहीं छोड़ता।

दक्षिण—यदि वज्र दक्षिण मुख हो तो सफल पुलिस अधिकारी या मिलिट्रीमैन होगा। समाज उसका सम्मान करेगा।

अंगूठा—अंगूठे का सिरा यदि गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न अंकित हो तो व्यक्ति अवश्य ही मिलिट्री का उच्चाधिकारी होगा तथा ख्याति प्राप्त करेगा।

यदि सिरा लम्बा हो तो व्यक्ति सी. आई. डी. अधिकारी होगा। अन्दर से सरल हृदय होकर ऊपर से वज्रादपि कठोर बने रहते हैं।

अंगूठा चपटा, बैठा हुआ हो तो व्यक्ति डाकू होता हैं तथा अपने कार्यों से प्रजा में आतंक-सा फैला देता है।

यदि अंगूठे का गला भाग भरा-भरा-सा हो व गोल हो तथा उस पर वज्र का चिह्न हो तो व्यक्ति पुलिस या मिलिट्री में साधारण स्तर तक ही पहुंच पाता है।

अंगूठे का वर्ण यदि गुलाबी हो तो उस व्यक्ति की उन्नति में बार-बार बाधाएं उत्पन्न होती हैं। भयंकर संघर्ष करना होता है, पर अन्त में सफलता पाता है।

यदि वर्ण लाल हो तो उच्चाधिकारी बनता है। जीवन आरम्भ अति साधारण स्तर से करता है।

यदि अंगूठे का वर्ण पीला हो तो जीवन-निर्माण में आवश्यकता से अधिक बाधाएं आती हैं और अन्ततः लक्ष्य पा ही नहीं सकता।

ऊर्ध्व—यदि अंगूठे पर ऊर्ध्व वज्र हो तो स्वकार्य से यश, मान, सफलता व

ख्याति उपार्जित करता है।

अधः–अंगूठे पर यदि अधोमुख वज्र हो तो व्यक्ति के सारे प्रयास विफल हो जाते हैं तथा उनके मन में निराशा छा जाती है।

वाम–अंगूठे पर वामुखी वज्र हो तो व्यक्ति जबरदस्त ठग, चोर या डाकू होगा व समाज उससे उत्पीड़ित रहेगा।

दक्षिण–दक्षिण मुखी वज्र के कारण व्यक्ति शान्त, सरल, चतुर, मृदुभाषी अधिकारी होगा।

धनुष–यदि हथेली पर धनुष का चिह्न हो तो जातक, वीर, साहसी, शत्रुदल नाशक, युद्ध में विजयी, कभी न हारने वाला होगा।

पतंग–यदि हथेली पर पतंगा जैसा चिह्न हो तो जातक लोक प्रसिद्ध प्रतापी, सुखी, उच्च पद पाने वाला होगा।

षट्कोण–धनलाभ, ऐश्वर्य, आनन्द व भाग्योदय का यह सूचक है। चल-अचल संपति का ऐसे व्यक्ति के पास अतुल भंडार होगा। सामाजिक दृष्टि से मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। भूमि का स्वामी पृथ्वी द्वारा लाभ प्रताप करता है।

चतुष्कोण–हथेली पर यह चिह्न अन्न-धन-लक्ष्मी की प्राप्ति व इनसे संतुष्टि का प्रतीक है। ऐसा व्यक्ति हर प्रकार से आत्मनिर्भर होता है। अन्नोपार्जित धन व ऐश्वर्य मिलता है। किसी स्त्री के हाथ में इस चिह्न के होने का अर्थ है पूर्ण सम्पन्नता।

त्रिकोण–यह पशु-धन की सम्पन्नता व्यक्त करता है। ऐसे चिह्न युक्त व्यक्ति के पास उच्च स्तरीय वाहन अवश्य होता है। धन की बहुलता इससे व्यक्त होती है। पशु व्यापार, डेरी चलाने, व्यापार लाभ, सद्गृहस्थ का यह चिह्न परिचायक है।

नन्द्यावर्त स्वास्तिक–ऐसा जातक धर्मात्मा, धार्मिक कार्य-कलाप करने वाला, तीर्थाटन-प्रेमी, ऐश्वर्य संपन्न व यशस्वी होगा।

क्रॉस–चद्र क्षेत्र पर क्रास का चिह्न बाधाकारक व विपक्षी मूलक है। इस चिह्न का अर्थ है, गुणों को काटना। अतः व्यक्ति जिसके हाथ में यह चिह्न हो, वह जीवन भर सुखी नहीं रह सकता। शीर्ष रेखा के नीचे क्रॉस अव्यवहारिक, निरंकुश, हठी, बनाता है। घोर, अविश्वासी निरंकुश बनाता है।

छोटा क्रॉस कम व बड़ा क्रॉस विशेष अवगुणों का होना प्रकट करता है। बड़े क्रॉस होने से व्यक्ति छिद्रान्वेषी, छल-प्रपंच वाला, युक्त व अनैतिक बनाता है?

चद्र-रेखा या चद्र-क्षेत्र पर क्रॉस कफ, वात व मूत्र-रोग, अण्डकोष-वृद्धि रोग, आन्त्र शोथ, उदर रोग देता है।

मंगल क्षेत्री क्रॉस सबल विरोधीदल उत्पन्न करता है, पर प्रथम क्षेत्र पर शत्रु और ज्यादा बढ़ जाता है। जातक दवा रहता है। द्वितीय क्षेत्र होने का अर्थ है भयंकर नाश, उच्च मंगल क्षेत्र के साथ यह खूब झगड़े करवाता है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से रक्त में न्यूनता देता है। बृहस्पति के क्षेत्र पर क्रॉस कम बुरा प्रभाव देता है। यदि वह स्वतन्त्र रेखाओं से बना हो तो प्रेम-विवाह होता है, या प्रेममय गृहस्थ जीवन व्यतीत होता है। सुख व सम्मान मिलता है। इसके साथ ही यदि भाग्य-रेखा का आरम्भ चद्र से हुआ तो जातक और अधिक आनन्द पाता है।

जीवन रेखा की कोई शाखा इस क्षेत्र पर पहुंची हो व अन्य रेखा से कट कर क्रास बनाती हो तो शुभ लक्षण न समझें। इसमें प्रेम संबंधों में बाधा आती है।

हृदय रेखा की कोई शाखा वहां पहुंचकर किसी अन्य रेखा से कट कर क्रास बनाती हो तो अर्थ प्राप्त करने में निराशा ही प्राप्त होती है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से गुरु-क्षेत्र का क्रॉस उदर रोग प्रदान करता है। बड़ा निशान रोग के लम्बे खींचने का द्योतक है। पर गुरु क्षेत्र बड़ा हो तो अवगुण कम हो जाते हैं।

शुक्र क्षेत्र पर क्रॉस प्रेम मामलों में सफलता देता है। गहरा क्रॉस वृद्ध पुरुष के स्नेह के कारण कष्ट उठाने का परिचायक है।

स्वाथ्य की दृष्टि से शुक्र क्षेत्र पर यह चिह्न सिर पीड़ा या शूल रोग का परिचायक है। पुरुष-स्त्री गुप्तांग रोग से पीड़ित रहते हैं।

शनि क्षेत्र पर क्रॉस की स्थिति शुभ नहीं है। यह दुर्घटना या किसी रोग का कारक है। स्वास्थ्य कमजोर होता है। पौरुषहीनता देता है। सन्तान रेखाएं सफल न हों तो सन्तानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न करने का लक्षण है।

यह चिह्न सूर्य-क्षेत्र पर हो तो अधिक अशुभ होगा। इससे जातक को किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती। धन की हानि में निराशा मिलती है। सूर्य क्षेत्र दबा होने पर और अशुभ होना मानना चाहिए।

द्वीप—द्वीप चिह्न जिस ग्रह क्षेत्र पर हो उसकी शक्ति का ह्रास कर जाता है।

यह चिह्न सूर्य-क्षेत्र पर हो तो मानसिक शक्ति क्षीण-कमजोर हो जाती है। इस द्वीप के कारण सूर्य के श्रेष्ठ गुण मनुष्य के लिए अहित होने लगते हैं। जातक के ईर्ष्याभाव के साथ-ही-साथ अपराधी वृत्ति हो जाती है। और तब उसे अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का भाव नहीं रहता।

यह चिह्न यदि चंद्र क्षेत्र पर हो तो मनुष्य खूब संवेदनशील रहता है। क्षेत्र के प्रभाव से कल्पना का आधिक्य होना चाहिए। परन्तु द्वीप के होने के कारण उसकी कल्पना की उड़ान रुक जाती है। उनमें कायरता, भीरुता, आलस्य, अव्यवहारिकता का समावेश हो जाता है।

मंगल पर इस चिह्न के होने का अर्थ है व्यक्ति अपनी शक्ति खोकर निर्बल हो जाता है। वह कायर, भीरु, डरपोक व अस्थिर हो जाता है। मनुष्य अपने में कई एक दुर्गुण व दुर्व्यसन पैदा कर लेता है। अपराध-भावना जोर-जोर से उमड़ पड़ती है। उसका साहस उसे गलत मार्ग पर डाल देता है। अपराध-पर-अपराध कर हिंसक

बन पशुपूर्ण व्यवहार करने लगता है। शरीर-दोष व चारित्रिक दोष उत्पन्न हो जाते हैं।

बुध के क्षेत्र पर इस चिह्न के होने का अर्थ है, हर दिन बुद्धिहीनता बुद्धिनाश, अस्थिर, गलत कार्यों की ओर प्रवृत्ति होना, हर दिन बुरे कार्य करते रहना तथा बृहस्पति के स्थान पर क्रॉस के होने से जातक व्यर्थ बलवादी, अभिमानी, भंठा व बड़े बनने की गलत भावना प्रबल हो जाती है। छल, कपट से अपना कार्य निकालने पर उतारू हो जाता है। राजनीतिक क्षेत्र में एकदम ऊंची छलांग लगाकर आगे आने का असफल प्रयास करता है।

शुक्र के क्षेत्र पर क्रॉस द्वीप का चिह्न मनुष्य की उन्नति को रोक देता है। रक्त-संस्थान दूषित हो जाने के कारण उत्साह, स्फूर्ति व उल्लास नष्ट हो जाता है। गुप्तांग रोग पीड़ा देते हैं। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण भाव बढ़ जाता है। वासना की प्रबलता के कारण वह गलत मार्ग को अपनाकर उलटे-सीधे कार्य करता है जिससे उसे नीचा देखना पड़ता है।

शनि के क्षेत्र पर द्वीप शनि दोषों को प्रभावित करने वाले स्थान में पड़ा हो तो अशुभ मानने का प्रश्न ही नहीं उठता, पर कुछ लोग इसे शुभ नहीं समझते। मनुष्य अस्वाभाविक चेष्टा से युक्त एवं अपने तक ही केन्द्रित रहने वाले हो जाते हैं।

जाल का चिह्न—अनेक सूक्ष्म रेखाएं सीधी व आड़ी खींचकर जाल जैसा चिह्न बनाती हैं। यह चिह्न ग्रह क्षेत्रों पर प्रायः दिखाई देता है। कुछ विद्वान उस चिह्न को व्यूह रेखा कहते हैं। इसका अशुभ प्रभाव प्रमुखतः दुर्घटना या अकस्मात आने वाले कष्ट के रूप में प्रकट होता है।

चन्द्र क्षेत्र पर जाल के होने का अर्थ है-मानसिक अस्थिरता व चंचलता के कारण हर कार्य में असफलता, विफलता। वासना का ऐसा चक्कर चलता है कि अपने-पराए तक का भेद नहीं रहता। यश-अपयश का भान नहीं होता। यदि किसी स्त्री के हाथ में हो तो उसे मृगी या हिस्टीरिया जैसा रोग बराबर कष्ट देता है।

मंगल के क्षेत्र पर जाल चिह्न अर्थ है, रक्तचाप, रक्त-न्यूनता, किसी कारण से रक्तस्राव। स्त्री है तो उसे रक्त-प्रदर रोग या अन्य इससे सम्बन्धित कोई बीमारी होती है। मंगल क्षेत्र के अधिक होने की अवस्था में उसके द्वारा किसी अन्य की हिंसा का अनुमान हो सकता है। कुछेक विद्वानों के मतानुसार यह चिह्न दुर्घटना या आत्महत्या का परिचायक है।

बुध क्षेत्र पर इसका होना पराये धन पर नीयत खराब कर जाता है। मन का उद्वेग और मन की चंचलता इतनी बढ़ जाती है कि जातक उचित-अनुचित का ध्यान ही नहीं रहता, येन-केन-प्रकारेण वह अपना कार्य पूरा करना चाहता है। उनकी बदनियती के परिणामस्वरुप न्यायालय आदि द्वारा दण्ड का दिया जाना या जिसका उपकार किया जाए, उसके द्वारा उसका प्रतिशोध लिया जाता है।

गुरु क्षेत्र पर इसकी उपस्थिति प्रेम या परिणय के विषय में रुकावट अथवा उसके

धर्म आदि को कुछ भी न समझता हुआ ओछे हथकंडों से काम ले सकता है। इस लक्षण वाले अधिकांश व्यक्ति जीवन में सौभाग्य से वंचित रहते हैं।

शुक्र क्षेत्र पर इनका दृष्टिगोचर होना वासना की अधिकता प्रकट करता है। ऐसा व्यक्ति नैसर्गिक प्रेम को महत्त्व न देकर व्यभिचार की ओर अधिक प्रवृत्त होता है। यदि यह चिह्न अधिक बड़ा है तो बलात्कार जैसे कर्म में क्रूर प्रवृत्ति प्रदर्शित करता है।

शनि क्षेत्र पर जाल बना हो तो वह अभाग्य का सूचक है। ऐसे जातक में बुद्धि का अभाव तो रहता ही है, साथ ही अपराधी प्रवृत्ति बना लेने के कारण अपकीर्ति भी प्राप्त करता है। स्त्री हो या पुरुष, जिसके भी हाथ में हो, वही अपने जीवन-साथी पर शंका करेगा। इस कारण घर में कलह होने लगेगी।

सूर्य क्षेत्र पर यह चिह्न मिथ्याभिमान की सृष्टि करता है यह चाहता है, सभी मेरा सम्मान करें और मुझे सर्वश्रेष्ठ मानकर आज्ञा का पालन करते रहें। सभी उसका दबदबा स्वीकार कर लें, परन्तु यह आकांक्षा फलीभूत नहीं हो पाती। क्योंकि उसमें विश्वास का भाव नहीं होता और कृतघ्नता तो उसे उसकी नस-नस में व्याप्त हो गयी हाती है।

त्रिशूल—यह चिह्न किसी भी क्षेत्र पर होना-उस क्षेत्र की शक्ति को तीव्र करता है। यदि यह चन्द-क्षेत्र पर हो तो चन्द्रमा के शुभ गुणों में वृद्धि करेगा। उस व्यक्ति की कल्पना का प्रयोग सही कार्यों में लगेगा और उसे पूर्ण सफलता मिलेगी। भौम के क्षेत्र पर त्रिशूल साहस का परिचय देता है। जातक बुद्धिबल के भरोसे सभी कार्यों में सफल हो सकता है।

बुद्ध क्षेत्र पर त्रिशूल विद्वता को व्यक्त करेगा। वैसा मनुष्य अपनी स्थिर बुद्धि के कारण जीविकोपार्जन के कार्यों या अन्य मामलों में भी सफलता प्राप्त करेगा। गुरु क्षेत्र पर त्रिशूल गिरते हुए संतुलन को सही मानकर स्थापित करने में प्रभावोत्पादक होता है। शनि क्षेत्र पर इसकी उपस्थिति तंत्र आदि विद्याओं का ज्ञान कराती है। यदि यह समर्थ क्षेत्र पर है तो मनुष्य मिथ्याभिमान से दूर रहता है।

विशेष—प्राच्य मतानुसार पूर्वोक्त हस्त चिह्नों के विषय में भारतीय विद्वानों के मत का सारांश यों है—

हथेली पर शुभ चिह्न बताए गए हैं, उनमें से जिस व्यक्ति के हाथ पर एक या दो चिह्न होते हैं—वह अन्यन्त विद्वान, धर्मात्मा, उदार, धैर्यवान सद्‌गुणी, परोपकारी, शास्त्रज्ञ, यज्ञ आदि धार्मिक कार्य करनेवाला, स्त्री सन्तति, वाहन, धन आदि के सुख से पूर्ण होता है।

मत्स्य, शंख, धनुष, खड्‌ग, कमल, कमण्डल, पालनी, वृक्ष, चक्र, मन्दिर या शब्दकोश जैसे एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति राजा, महाराजा या अत्यन्त धनी और भाग्यशाली होते हैं।

मन्दिर, पर्वत, कुण्ड, चतुष्कोण, पर्वत, माला, स्वास्तिक, विमान, गदा या पताका, जैसे एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति महात्मा, उदार, ज्ञानी, ध्यानी, वैरागी, धर्मात्मा, विद्वान, सद्‌गुणी तीर्थ-यात्री, योगाभ्यासी तथा भाग्यशाली होते हैं।

वैराग्यवान मनुष्यों के हाथ में माला, पर्वत, ध्वजा, अथवा त्रिकोण में से कौई एक चिह्न पाया अवश्य जाता है।

खड्‌ग, तोमर, छत्र, रथ, मुद्रा, कलम, पंख, हाथी अथवा चक्रादि में से एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति राजा के समान धनी और सुखी होते हैं।

तराजू अथवा चतुष्कोण चिन्ह वाले व्यक्ति कुशल व्यवसायी, धनी व यशस्वी होते हैं।

अष्टकोण, चतुष्कोण अथवा कटार जैसे चिह्न वाले व्यक्ति, धनी व सुखी होते हैं।

यदि अष्टकोण चिह्न के ऊपर ध्वजा, पर्वत, खड्‌ग, चक्रादि में से कोई एक चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति भूमिपति सम्पत्तिवान तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

तलवार, धनुष, तथा चक्र चिह्न वाले व्यक्ति साहसी, निडर, बलवान तथा पराक्रमी होते हैं।

रथ, चक्र, मत्स्य, अथवा शंख जैसे चिह्न वाले व्यक्ति विद्वान, यशस्वी तथा पराक्रमी होते हैं।

सूर्य, चंद्र, हाथी, घोड़ा, नेत्र इनमें से एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति राजा के समान धनी, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होते हैं।

वज्र तथा क्रास चिह्न वाला व्यक्ति प्रत्येक व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है।

मकड़ी-चक्र-शंख अथवा ध्वजा, जैसे चिन्ह वाला व्यक्ति शास्त्रों का विद्वान तथा ज्ञानी होता है।

जिस स्त्री के हाथ में पद्‌म जैसा चिह्न होता है, वह महारानी, रानी या किसी अत्यन्त धनी और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होती है।

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में अकुंश, कुण्डल तथा छत्र तीनों चिह्न एक साथ हों तो वह निश्चित रूप से चक्रवर्ती या वैसे ही ऐश्वर्यवान, संपन्न होता है।

हथेली में मत्स्य चिह्न हो तो जातक शतपति, वज्र चिह्न हो तो सहस्रपति, पद्‌म चिह्न हो तो लक्षपति, शंख चिह्न हो तो करोड़पति, मत्स्य चिह्न हो तो सहस्रपति होता है।

हथेली में मत्स्य-पुच्छ चिह्न हो तो विद्वान और धनवान होता है तथा अपने पितामह द्वारा संचित धन प्राप्त करता है।

हथेली पर छत्र या पद्‌म चिह्न हो तो जातक कोटिपति, ताल पत्र हो तो लखपति, अश्व चिह्न हो तो राजा होता है।

हथेली में मृणाल अंकुश का चिह्न हो तो याज्ञिक, प्रकोष्ठ, ध्वज, मकर चिह्न होने से अत्यन्त धनी, जाल चिह्न होने से याज्ञिक, सूत्र चिन्ह होने से गऊपति, दन्त चिह्न होने से भूपति, देवता, नदी अथवा त्रिकोण चिह्न होने से धर्मात्मा होता है।

तिल-विचार

तिल दो रंग के होते हैं—

शहद के समान लाल रंग वाले और काले रंग वाले।

शहद के समान लाल रंग वाले तिल प्रायः शुभ तथा काले रंग के तिल (अंगानुसार) अशुभ माने जाते हैं।

पर तिल विभिन्न ग्रहों के प्रभाव के कारण ही प्रकट होते हैं।

रंग के अतिरिक्त तिल के दो मुख्य प्रकार और भी बताए गए हैं—

उत्तर वाले तिल, बिना उत्तर वाले तिल।

उत्तर वाले तिल मुख के जिस स्थान पर होते हैं, वैसा ही तिल चिह्न शरीर के किसी अन्य अंग विशेष पर भी दैवी नियमानुसार निश्चित रूप से पाया जाता है। अंग्रेजी में ऐसे उत्तर वाले तिल चिह्न को 'सिस्टर-मार्क' कहा जाता है।

बिना उत्तर वाले तिल शरीर के किसी भी भाग पर हो सकते हैं। और उनका कोई उत्तर वाला दूसरा तिल चिह्न नहीं होता।

तिलों के फलाफल के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अलग-अलग खोजें की हैं। यहां पर उक्त दोनों की मतों को उद्धृत किया गया है।

बायीं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव—बायीं कनपटी (बायें कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर चिह्न बायीं ऊरु अथवा कमर पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के जीवन पर बुरा प्रभाव डालने वाला होता है। ऐसे तिल वाले जातकों को अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बहुत ही कष्ट में अपने दिन बिताने पड़ते हैं।

बायीं भौंह पर स्थित तिलों का प्रभाव—बायीं भौंह पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिह्न क्रमशः पेट के वामभाग, कमर तथा जंघा पर पाए जाते हैं।

इन तिलों का रंग काला हो तो पुरुष अहंकारी स्वभाव का होता है तथा स्त्री भी अभिमानी एवं रोगिणी होती है।

यदि तिलों का रंग लाल हो तो पुरुष अच्छे कुल में जन्म लेकर शुभ कर्म करने वाला, एकान्तप्रिय तथा अल्प सम्पत्ति वाला होता है तथा स्त्री सुन्दर, परन्तु तुच्छ विचारों वाली होती है।

बायीं बरौनी पर स्थित तिलों के प्रभाव—बायीं आंख की बरौनी पर स्थित इन

तिलों के उत्तर चिह्न क्रमशः बायीं ऊरु, बायें पुट्ठे तथा बायें नितम्ब पर पाये जाते हैं।

ये किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री पुरुष पर अपना एक जैसा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक किसी एक स्थान पर स्थित नहीं रह पाता और उसे प्रत्येक क्षेत्र में प्रायः असफलता और कष्टों का सामना करना पड़ता है।

बायीं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित तिलों का प्रभाव—बायीं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित इन तिलों के उत्तर चिह्न क्रमशः गुदा के बायीं भाग में ऊपर, नीचें, मध्य में तथा दायें किनारे की ओर पाये जाते हैं।

दायीं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव—दायीं कनपटी (कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर चिह्न दायीं बाहु पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से फलदायक होता है। इसके प्रभाव से स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

दायीं भौंह तथा बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव—दायीं भौंह तथा बरौनी के मध्यस्थित तिलों के उत्तर चिह्न शरीर के दायें भाग में कमर तथा कमर के निचले हिस्से में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के अच्छे-बुरे परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं तथा उसकी नेत्र-ज्योति क्षीण होती है।

नासिका के ऊपरी दायें भाग में स्थित तिलों का प्रभाव—नासिका के ऊपरी दायें भाग में स्थित तिलों के उत्तर चिह्न नाभि के मध्य में अथवा वक्षःस्थल के नीचे पाये जाते हैं।

इन तिलों का रंग यदि लाल हो तो वे शुभ फलदायक होते हैं। ऐसे पुरुष सम्पत्तिशाली होते हैं तथा स्त्रियां अपने किसी सम्बन्धी से धन प्राप्त कर सुखी जीवन व्यतीत करने वाली होती हैं। यदि तिलों का रंग काला हो तो जातक की आयु के ३५ से ४५ वे वर्ष के बीच में कोई दुर्घटना होती है अथवा उसे किसी कष्टप्रद बीमारी का शिकार होना पड़ता है।

दायीं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव—दायीं आंख की बरौनी के नीचे स्थित तिलों के उत्तर चिह्न दायीं ओर के स्तन पर पाये जाते हैं।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से फलदायक होता है। इसके प्रभाव से स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

दायीं भौंह तथा बरौनी के मध्यस्थित तिलों का प्रभाव—दायीं भौंह तथा बरौनी के मध्य स्थित तिलों के उत्तर चिह्न शरीर के दायीं भाग में कमर तथा कमर

के चले हिस्से में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के अच्छे-बुरे परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। उसे कष्ट भी उठाने पड़ते हैं तथा उसकी नेत्र ज्योति क्षीण होती है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर अपना एक-सा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक धनवान तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

कण्ठ (गर्दन) पर स्थित तिलों का प्रभाव—कण्ठ गर्दन पर स्थित तिलों के उत्तर चिन्ह उरुसंधि पर पाये जाते हैं।

तिल का रंग काला हो तो जातक के पानी में डूबने अथवा किसी ऊंचे स्थान से गिरने का भय रहता है। तिल का रंग लाल हो तो जातक को सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इन तिलों के प्रभाव स्वरूप जातक बुद्धिमान तथा धार्मिक विचारों वाला अवश्य होता है।

ऊपरी ओठ पर स्थित तिलों का प्रभाव—ऊपरी होंठ पर स्थित तिलों के उत्तर चिह्न दाएं घुटने पर पाये जाते हैं। ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक अत्यधिक विलासी तथा शौकीन तबीयत का होता है तथा अपनी सम्पत्ति को विलासिता में ही नष्ट कर देता है।

निचले होठ पर तिलों का प्रभाव—निचले होंठ (अधर) पर स्थित तिलों के उत्तर चिह्न जांघ पर पाये जाते हैं। ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरुप जातक निर्धन तथा लोभी होते हैं और वे दरिद्रता में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

चिबुक (ठोड़ी) पर स्थित तिल का प्रभाव—चिबुक (ठोड़ी) के मध्य भाग में तिल हो तो उसका चिह्न जांघ पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का क्यों न हो, स्त्री-पुरुष के ऊपर समान रूप से प्रभाव डालता है। इसके फलस्वरूप जातक अशुभ फल प्राप्त करता है।

ये तिल लाल रंग के हों तो जातक की आयु में वृद्धि करते हैं और यदि काले रंग के हों तो उसकी आयु में परिवर्तन के सूचक होते हैं। इन तिलों के प्रभावस्वरूप स्त्री के प्रथम गर्भ से पुत्र का जन्म होता है।

बाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव- बाएं गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलों के उत्तर चिह्न बायीं उरु अथवा कूल्हे पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के जीवन को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इनके फलस्वरूप जातक के जीवन में धन की कमी बनीं रहती है, फिर भी वह शान्तिपूर्वक अपनी गृहस्थी को चलाता है।

दाएं कान पर स्थित तिलों का प्रभाव—दाएं कान के ऊपरी, मध्य तथा निम्न भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर चिह्न पेट के दाएं भाग पर पाए जाते हैं।

ये तिल स्त्री-पुरूष के जीवन पर एक जैसा प्रभाव डालते हैं।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक का स्वभाव सरल होता है, विवाह के पश्चात् वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। तथा युवावस्था से ही उसकी भाग्योन्नति आरम्भ हो जाती है। ऐसे जातक धार्मिक विचारों वाले, शान्त सुखी तथा सन्तोषी होते हैं।

दाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव—दायें गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलों के उत्तर चिह्न दाएं कूल्हे पर पाऐ जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, इनके प्रभाव से पुरुष बुद्धिमान, प्रसन्नचित्त तथा बहुत से मित्रों वाला होता है, परन्तु स्त्री पति के रहते हुए भी पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त करने वाली तथा रोग-ग्रस्त होती है।

आवश्यक टिप्पणी—

ऊपर जिन तिलों का फलादेश कहा गया है, उनके सम्बन्ध में यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि ये सभी फलादेश पुरुष के अंगों पर पाए जाने वाले तिलों के प्रभाव के हैं। पुरुष के दाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का जो प्रभाव होता है वही स्त्री के बाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का होता है। पुरुष के दाएं अंग पर पाये जाने वाले तिल शुभ प्रभाव देने वाले होंगे। इसी प्रकार पुरुष के बाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल अशुभ प्रभाव देने वाले सिद्ध होते हैं।

तिलों के सम्बन्ध में सामान्य नियम ये हैं—

पुरुष के दाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल शुभफल देने वाले होते हैं।

पुरुष के बाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ फल देने वाले होते हैं।

स्त्री के दायें अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ फल देने वाले होते हैं।

स्त्री के बाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः शुभ फल देने वाले होते हैं।

पुरुष के दायें अंग तथा स्त्री के बाएं अंग में पाए जाने वाले लाल रंग के तिल शुभ फल देने वाले होते हैं।

पुरुष के बाएं तथा स्त्री के दायें अंग में पाये जाने वाले लाल रंग के तिलों का अशुभ फल भी न्यून मात्रा में होता है।

तिलों का उत्तर चिह्नों के विषय में यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि उत्तर चिह्न के रूप में दूसरे स्थान पर तिल ही हो, यह आवश्यक नहीं है। उत्तर वाले तिल के स्थान पर मस्सा अथवा लहसुन का चिह्न भी हो सकता है।

सिर तथा ललाट पर पाए जाने वाले तिलों का प्रयोग—यदि पुरुष के मस्तक के मध्य भाग में तिल हो तो वह सुखी, धनवान तथा प्रतिष्ठित होता है।

यदि पुरुष ललाट के दायीं ओर तिल हो तो उसे धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, परन्तु यदि बायीं ओर तिल हो तो उसका शुभ फल न्यून हो जाता है, फिर भी एक दम निष्फल नहीं होता।

यदि पुरुष के सिर के दायें भाग में तिल हो तो वह हंसमुख तथा उच्चपदाधिकारी होता है और उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहती है।

यदि पुरुष के सिर के बाएं भाग में तिल हो तो उसे जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। वह झगड़ालू प्रवृत्ति का, गुणहीन तथा संकुचित मनोवृत्ति का होता है। फलस्वरूप सब लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

भौंह तथा आंखों के स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव—यदि पुरुष की दोनों भौंहों के किसी स्थान पर तिल हो तो वह यात्रा-प्रेमी होता है और यात्रा द्वारा ही लाभ उठाता है।

यदि पुरुष की तीनों भौहों के किसी स्थान पर लाल रंग का तिल हो तो वह व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेने वाला, साहित्य-प्रेमी, राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता, दीर्घायु तथा शुभाशुभ घटनाओं का अनुभव करने वाला होता है। यही तिल काले रंग का हो तो जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाए जाते हैं, परन्तु वह फिजूल खर्च सम्पत्ति को नष्ट करने वाला तथा निरर्थक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

यदि किसी पुरुष की आंख के बीच या आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से में तिल हो तो वह धनवान, बुद्धिमान, तन्त्र-शास्त्र का अभ्यासी, एकान्त सेवी तथा स्त्री से घनिष्ठ-प्रेम करने वाला होता है, परन्तु अपनी आयु के पूर्व भाग में किसी स्त्री द्वारा धोखा खाने के कारण वह उसे घृणा भी करता है।

वक्ष स्थल पर तिलों का प्रभाव—यदि किसी पुरुष की छाती पर दायीं ओर को तिल हो तो उसे अच्छी पत्नी प्राप्त होती है।

यदि किसी पुरुष की छाती पर बायीं ओर को तिल हो तो उसे लाभ कम होता है, परन्तु होता अवश्य है।

हाथों पर स्थित तिल चिह्नों का प्रभाव—यदि किसी पुरुष के दायें हाथ पर तिल हो तो वह अपने बाहुबल से द्रव्योपार्जन करता है और उसका सुख भोगता है।

यदि किसी पुरुष के बायें हाथ पर तिल हो तो धनोपार्जन के संवंध में उसका प्रभाव कम होता है, परन्तु उसके प्रयत्न एकदम व्यर्थ नहीं जाते।

यदि किसी पुरुष के दायें कन्धे पर तिल हो तो वह अधिक विद्वान श्रेष्ठ कलाकार (दस्तकार) होता है।

यदि किसी पुरुष के बायें कन्धे पर तिल हो तो वह कम विद्वान अथवा निम्न श्रेणी का कलाकार (दस्तकार) होता है।

यदि किसी पुरुष के हाथ के पंजे पर तिल हो तो वह बहुत दिलेर तबीयत का तथा धनवान होता है।

यदि किसी पुरुष के दायें हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह कोषाध्यक्ष होता है।

यदि किसी पुरुष के बायें हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह अपव्ययी होता है।

यदि किसी पुरुष के दायें हाथ के पिछले भाग (कर-पृष्ठ) पर तिल हो तो वह मितव्ययी होता है और बायें हाथ के पृष्ठ भाग पर तिल हो तो वह धनवान होता है।

यदि किसी पुरुष के हाथ की रेखाओं पर काले रंग का तिल हो तो वह उन रेखाओं के बुरे प्रभाव को और अधिक बढ़ा देता है। यदि लाल रंग का तिल हो तो वह रेखाओं के अच्छे प्रभाव में कमी लाता है अथवा उनके कुप्रभाव को नष्ट कर देता है।

यदि किसी पुरुष की दायीं भुजा अथवा कुहनी पर लाल रंग का तिल हो तो वह सैनिक अथवा पुलिस विभाग में विशेष उन्नति तथा सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग घुड़दौड़, लाटरी, धातु, अथवा पशुओं के व्यवसाय में भी पर्याप्त लाभ उठाते हैं।

यदि किसी पुरुष की बायीं भुजा पर काले रंग का तिल हो तो उसे धन, सम्पत्ति, जायदाद आदि की हानि उठानी पड़ती है। घुड़सवारी करने से भी उसे गिरने और चोट पहुंचने की आशंका रहती है तथा निरर्थक-यात्रायें करने से भी घाटा पड़ता है।

पांवों के किसी भाग में स्थित तिलों का प्रभाव—यदि किसी पुरुष की दायीं जांघ पर तिल हो तो उसे सवार का सुख मिलता है और सेना में भी सफलता प्राप्त करता है।

यदि किसी पुरुष के दायें पांव पर तिल हो तो वह अनेक स्थानों पर एवं देश की यात्रा करता है तथा लाभ उठाता है। ऐसे लोग विशेष बुद्धिमान होते हैं।

यदि किसी पुरुष के बायें पांव पर तिल हो तो वह अधिक खर्चीला होता है।

स्त्रियों के विभिन्न अंगों पर तिलों का प्रभाव—पुरुष के दायें अंग पर स्थित तिलों का जो प्रभाव होता है, वही फल स्त्रियों को भी प्राप्त होता है, यदि तिल उनके बायें अंग में हो।

स्त्रियों के विभिन्न अंगों पर पाए जाने वालें तिलों का विशेष प्रभाव भारतीय मत से नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां पर जिन स्थानों पर दायें-बायें अंग का उल्लेख किया गया है, वहां पर स्त्रियों का बाया अंग ही समझना चाहिए। दायें अंग पर होने से वह तिल अशुभ अथवा न्यून प्रभावकारी सिद्ध होगा।

यदि किसी स्त्री के सिर के मध्य भाग में तिल हो तो वह पति का पूर्ण सुख

प्राप्त करने वाली, शुद्ध हृदय तथा विपुल ऐश्वर्य सम्पन्न रानी के समान होती है।

यदि किसी स्त्री के सिर के दायीं ओर तिल हो तो वह समाज में प्रतिष्ठित तथा सुयोग्य होते हुए भी उदासीन-स्वभाव की बनी रहती है। ऐसी स्त्रियां विवाहोपरान्त अधिक समय तक विदेश अथवा परदेश में रहती हैं और उन्हें सन्तान का अल्प-सुख प्राप्त होता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर तिल हो तो उसे धनवान पति मिलता है।

यदि किसी स्त्री के सिर के बायीं ओर तिल हो तो उसे दुर्भाग्य का सूचक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री की दोनों भौंहों में से किसी स्थान पर काले रंग का तिल हो तो उसका स्वभाव अच्छा होता है। उसे सिर-दर्द का रोग रहता है तथा उसका विवाह भी किसी बेमेल पुरुष से होता है।

यदि किसी स्त्री के आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से में तिल हो तो अनुचित प्रकार से धन का संचय करने वाली तथा सन्तानविहीना होती है। उसके शरीर में ज्वर जैसी उष्मा हर समय बनी रहती है तथा उचित प्रकार से स्वास्थ्य की देखभाल न कर पाने के कारण अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की आंख में तिल हो तो उसके ऊपर पति की शुभदृष्टि बनी रहती है।

यदि किसी स्त्री के बायें गाल पर तिल हो तो ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करती है।

यदि किसी स्त्री के दायें गाल पर काला तिल हो तो वह असाध्य रोगों का शिकार बनती है। उसका चाल-चलन अच्छा नहीं होता तथा उसकी प्रकृति भी झगड़ालू होती है।

यदि किसी स्त्री के कान पर तिल हो तो वह बहुत से आभूषणों को धारण करती है।

यदि किसी स्त्री के कण्ठ (गले) पर तिल हो तो वह अपने घर में हुकूमत करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के बायें गाल पर अथवा ओंठ पर लाल रंग का तिल हो तो वह धन-धान्य, पुत्र सौभाग्य आदि से सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत करती है।

यदि किसी स्त्री की छाती पर तिल हो तो वह पुत्रवती होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय पर तिल हो तो वह अत्यन्त सुन्दर, बुद्धिमान, गुणवती, काव्य, साहित्य , संगीत व अभिन्य आदि कलाओं में निपुण होती है और इन कलाओं के द्वारा धन तथा यश अर्जित करती है।

यदि किसी स्त्री की जांघ पर तिल हो तो उसके घर में नौकर-चाकर बने रहते हैं।

यदि किसी स्त्री के पांव में तिल हो तो वह यात्राएं बहुत करती है।

यदि किसी स्त्री के गुप्तांग पर तिल हो तो वह अत्यधिक कामुक एवं विलासिनी होती है।

टिप्पणी—स्त्री के बायें अंग का तिल विशेष प्रभावशली होता है, परन्तु दायें अंग का तिल, जिसके फल के विषय में अलग से वर्णन नहीं किया जा रहा है, वह भी न्यून फलदायक अवश्य होता है।

ललाट प्रदेश के तिल—सिर के नीचे के भाग को माथा अथवा ललाट कहा जाता है। इस प्रदेश में कुल ९१ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों का फल दिया जा रहा है।

इस तिल का उत्तर चिह्न तिल बायीं ओर रीढ़ के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग की लालिमा लिये हुए हो तो ऐसे पुरुष को किसी के उत्तराधिकार के रूप में सम्पत्ति प्राप्त होती है तथा जमीन-जायदाद से लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति प्रतिष्ठित होते हुए भी झगड़ालू स्वभाव के होते हैं।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो पुरुष के जातक के जीवन के अन्तिम २० वर्षों में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर इस जगह तिल हो तो वह अच्छे स्वभाव की होती है। परन्तु उसे बहुत अधिक समय तक अपने जन्म-स्थान से दूर रहना पड़ता है। ऐसी स्त्री को सन्तान कष्ट होने की सम्भावना रहती है। ऐसा कष्ट, 'हीरा' अथवा नीलम नामक शुभ रत्न के धारण करने से दूर हो सकता है।

इस तिल का उत्तर-चिन्ह तिल दायें हाथ की कुहनी के ठीक नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष, सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं अथवा जानवरों के व्यवसाय अथवा ठेकेदारी के काम में लाभ उठाता है। सेना की नौकरी में भी उसे सफलता प्राप्त होती है। यह हाथ की रेखाओं द्वारा पुष्ट होती हो तो ऐसे तिल वाले जातक को आकस्मिक धन लाभ भी होता है।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह कला-कुशल कठोर वचन कहने वाली होती है। इस दोष को कम करने के लिए 'पन्ना' नामक रत्न धारण करना चाहिए।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं भुजा पर कुहनी के ऊपर तथा कन्धे के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को किसी मित्र द्वारा किए विश्वासघात के कारण कष्ट प्राप्त होता है और वह धनवान नहीं हो पाता।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक फलदायक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल (चाहे जिस रंग का हो) हो तो वह पति-सुख में कमी करने का सूचक होता है। ऐसी स्त्री स्वयं भी अच्छे स्वभाव की

नहीं होती।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) पेट के दाएं भाग के नीचे कमर तथा जांघ के बीच में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक की रुचि पठन-पाठन एवं ज्ञानोपार्जन की दिशा में अधिक होती है, वह धनी नहीं हो पाता। ऐसा पुरुष किसी स्त्री के द्वारा धोखा खाता है। जिसके कारण वह सर्म्पूण स्त्री जाति के प्रति ही विरक्त हो जाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अपना कोई विशेष प्रभाव प्रकट नहीं करता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह उचित तथा अनुचित सभी उपायों से धन-संग्रह की इच्छुक बनी रहती है। उसके विचार तथा स्वभाव भी अच्छे नहीं होते। ऐसी स्त्री के हाथ में यदि जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा बलवान न हो तो उसकी अल्पायु होने की सम्भावना भी रहती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं ओर सीने के निचले भाग में पाया जाता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक धनोपार्जन में दक्ष एवं बुद्धिमान होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अच्छा नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह दीर्घायु एवं धन-सम्पत्तिवान होती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) छाती पर बायीं ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को ३४-३५ वर्ष की आयु में किसी कठिन रोग का शिकार होना पड़ता है। इस लक्षण की पुष्टि के लिए जीवन रेखा की स्थिति को भी देखना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो जीवन का प्रारम्भिक तथा मध्य भाग अच्छा व्यतीत नहीं होता, परन्तु वृद्धावस्था में परिश्रम द्वारा आर्थिक स्थिति ठीक हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर तिल हो तो वह धानवान होती है और उसे अपने किसी सम्बन्धी द्वारा भी विशेष सम्पत्ति प्राप्त करने का योग होता है, परन्तु ३० वर्ष की आयु में उसे उदर विकार अथवा किसी अन्य दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है। दीर्घायु के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए जीवन-रेखा की स्थिति पर ध्यान रखना चाहिए।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बायीं ओर की पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक स्वेच्छाचारी, अपव्ययी, ऐयाश, कामी, दुराग्रही तथा व्यभिचारी होता है। वह अनुचित कार्य करने में भी

नहीं झिझकता, परन्तु अपनी मिलनसारी तथा शिष्ट स्वभाव से अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव बनाए रखता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को चालीस वर्ष की आयु में कोई शिरोरोग होने की सम्भावना रहती है। इसकी पुष्टि के लिए जीवन-रेखा तथा मस्तक रेखा की स्थिति को देखना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह स्वेच्छाचारिणी तथा अपव्ययी होती है। ऐसी स्त्री की दुष्ट वृत्तियां तीस वर्ष की आयु के बाद और अधिक बढ़ जाती हैं, तथा अपने पति से द्वेष रखकर पर पुरुष-गामिनी होती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बाएं हाथ की कलाई के ऊपर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो ऐसा पुरुष धनी तथा ऐयाश होता है, परन्तु उसका स्वभाव अच्छा नहीं होता।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह पति-विद्वेषिणी, कुलटा तथा दुष्टा होती है। उसे छूत की कोई भयंकर बीमारी भी हो सकती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं पसली के निचले भाग में होता है और ३५ वर्ष की आयु में उसे यात्रा द्वारा विशेष आर्थिक सफलता प्राप्त होती है। इसकी पुष्टि के लिए हथेली में यात्रा-रेखाओं की स्थिति को भी देखना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो यात्रा का परिणाम अनिष्टकर होता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसकी कल्पना शक्ति तीव्र होती है। पति का सुख सामान्य रहता है तथा उसकी एक सन्तान को कोई कठिन रोग होता है। शेष सभी सन्तानें स्वस्थ रहती हैं।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) वक्षस्थल के दाएं भाग में होता है।

यदि तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक कुलीन, धनी, परोपकारी यशस्वी तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त होता है। यह अत्यन्त फलदायक कहा गया है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपव्ययी होता है, जिसके कारण उसे वृद्धावस्था में आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है तथा लम्बी बीमारियां भी भोगनी पड़ती हैं।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसे स्नायुओं की पीड़ा होती है। वह कर्कश स्वभाव की होती है तथा उसे पति का पूर्ण सुख भी प्राप्त नहीं होता।

नासिका प्रदेश के तिल—नाक के ऊपर तथा उसके समीपवर्ती प्रदेश में कुल ८ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को विभिन्न क्रम संस्थाओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संस्थाओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के बारे में नीचे विवरण दिया जा रहा है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं ओर के पुट्ठे पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक वाक्-चतुर तथा कला-कुशल होता है, परन्तु ऐसी स्त्रियों से प्रेम-जाल में फंसा रहता है, जो उसके द्वारा अपने स्वार्थों की सिद्धि करती रहती हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसी स्त्रियां परम सौभाग्यशालिनी, सम्पत्तिशालिनी, यशस्विनी तथा दीर्घायु प्राप्त करने वाली होती हैं।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बायीं बगल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को जीवन के प्रथम भाग तथा मध्य भाग में सुख तथा वृद्धावस्था में कष्ट प्राप्त होता है। ३०-३५ वर्ष की आयु के बीच उसे शारीरिक कष्ट भी होता है। यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो अच्छे स्वभाव की होती है, परन्तु उसी के कारण उसके पति को कष्ट अवश्य भोगना पड़ता है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बायीं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल कुछ शहद के रंग का, चमकदार न हो तो जातक भाग्यहीन तथा जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को बिजली अथवा किसी अन्य दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाने की आशंका रहती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका प्रदेश में ऐसा तिल हो तो वह बुद्धिमती होती है, परन्तु अपने ही किसी सम्बन्धी अथवा सुपरिचित व्यक्ति के विश्वासघात के कारण उसके आर्थिक अथवा जमीन-जायदाद सम्बन्धी हानि उठानी पड़ती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक संग्रहशील तथा बुद्धिमान होता है और उत्तराधिकार में किसी की सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को उदर एवं यकृत-सम्बन्धी विकार बने रहते हैं।

यदि किसी नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका शरीर दुर्बल होता है। प्रसव के समय उसे अत्यधिक कष्ट एवं भय का सामना करना पड़ता है। ऐसे तिल वाली स्त्री के नाक का अग्रभाग यदि कटा हुआ-सा अथवा हड्डी से अलग जैसा प्रतीत होता हो तो वह अच्छे चरित्र की नहीं है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दाएं घुटने के ऊपर दायीं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को कृषि-जमीन, जायदाद अथवा अपने बूढ़े-बूढ़ों द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को ४०-५० वर्ष की आयु के बीच

दुर्घटना का शिकार बनना पड़ता है। यदि हाथ की रेखाएं विशेषकर जीवन-रेखा अच्छी हो तो उसकी प्राण-रक्षा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश में ऐसा तिल हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए। ऐसी स्त्री सदैव दुःखी बनी रहती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बाएं सीने के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक अपव्ययी, अनेक प्रकार के दोषों तथा दुर्गुणों से युक्त होता है। उस पर फौजदारी के मुकद्दमे चलते हैं तथा न्यायालय द्वारा दण्ड-प्राप्ति की सम्भावना रहती है। ऐसे व्यक्तियों को घृणित तथा अपराधपूर्ण कार्यों से बचे रहने का प्रयत्न करना चाहिए। इस तिल का प्रभाव बहुत अशुभ फलकारक होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे बहुत ही अशुभ समझना चाहिए। ऐसी स्त्री चरित्र-भ्रष्टा होती है। वह स्वयं ही अपनी स्थिति का सर्वनाश कर लेती है। इसकी पुष्टि के लिए हाथ की रेखाओं की स्थिति पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) पेट के बायें भाग पर पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को सरकारी अधिकारियों द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। यदि ऐसे पुरुष की पत्नी अथवा कन्या स्वरूपवान हो तो उच्च स्थिति के लोग उसके द्वारा अपनी वासना पूर्ति की इच्छा से जातक को कष्ट पहुंचाते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अनिष्टकर प्रभाव वाला समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के नासिका प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य दुर्बल होता है तथा चित्त दुःखी बना रहता है। मूंगा धारण करने से इस दोप का कुछ परिहार हो जाता है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) पीठ पर बायीं बगल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक ऊपर से दिखने में बहादुर और साहसी, परन्तु भीतर से कमजोर हिम्मतवाला होता है। उसे स्त्रियों के कारण, मुकद्दमेबाजी के कारण अथवा अन्य प्रकार के झगड़ों के कारण कष्ट उठाने पड़ते हैं।

यदि तिल का रंग काला हो तथा हाथ की रेखाओं से भी पुष्टि होती हो तो जातक के पानी में डूबने का भय रहता है।

यदि किसी स्त्री के नासिका प्रदेश पर ऐसा तिल हो तथा हस्त रेखा एवं अन्य लक्षणों से भी पुष्टि होती हो तो वह चरित्र-भ्रष्ट होती है।

हनु प्रदेश के तिल— गालों के नीचे वाले हिस्से को 'हनु प्रदेश' कहते हैं। यह भाग ठोड़ी के ऊपर होता है। इस प्रदेश के कुल ९ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों

का वर्णन किया जा रहा है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) पेट के दक्षिण भाग में नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक इन्द्रिय लोलुप, धोखेबाज, मिथ्यावादी तथा विश्वास न करने योग्य (विश्वासघाती) होता है। उस पर फौजदारी में मुकद्दमे चलते हैं। तथा उसके यश को दाग लगता है। यदि तिल का रंग काला हो तो जातक निर्धन होता है तथा अनियमित जीवन बिताने के कारण रोगी भी बना रहता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे सन्तान का सुख कम प्राप्त होता है तथा उसका चरित्र भी अच्छा नहीं होता। स्त्रियों के सम्बन्ध में इस तिल का प्रभाव घोर अशुभ समझना चाहिए।

चरित्रहीनता आदि लक्षणों की पुष्टि हस्त रेखाओं को देखकर भी कर लेनी चाहिए।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) बायीं पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को किसी पशु से भय अथवा अन्य दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह कलहप्रिय तथा चरित्रहीन होती है। चरित्रहीनता के लक्षण की पुष्टि पावों की उंगलियों की बनावट तथा हाथ की रेखाओं को देखकर कर लेनी चाहिए।

यदि तिल का उत्तर चिन्ह (तिल) पेट के समीप होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष जातक एकान्तप्रेमी, अध्ययनशील, विद्वान तथा भाग्यशली होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।

यदि किसी स्त्री के हनु प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह पतिव्रता एवं सौभाग्यशालिनी होती है। स्त्री के लिए काले अथवा लाल रंग के तिल से प्रभाव में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। यदि ऐसे तिल वाली स्त्री के अन्य शारीरिक लक्षण भी शुभ हों तथा हाथ की रेखाएं भी श्रेष्ठ गुण वाली हों तो वह अत्यन्त यशस्विनी एवं ऐश्वर्यशालिनी होती है।

यदि तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दाएं घुटने पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक दुर्बल चित्त वाला तथा विषय-भोग में लीन रहने वाला होता है। वह किसी भी कार्य को करने में कुशल नहीं होता, अतः उसे जीवन के सभी क्षेत्रों में असफलताओं, निराशाओं, संकटों, अपयशों एवं दरिद्रता का शिकार बनना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका फल अत्यन्त अशुभ होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक कामासक्त बना रहता है। उसकी विवेकबुद्धि नष्ट हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के हनु प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अस्वास्थ्य का सूचक

समझना चाहिए।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायें घुटने के भीतरी भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे उसे हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति में बाधा पहुंचती रहती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपने अनुचित आचार-विचार एवं व्यवहारों के कारण हानि उठाता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह कामासक्त होने के साथ ही भाग्याशालिनी भी होती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं जांघ पर भीतरी हिस्से में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक भाग्यवान होता है, परन्तु उसे अपनी अट्ठाईस से बत्तीस वर्ष की आयु के बीच के समय में किसी भी विशेष कठिनाई अथवा मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक का वैवाहिक जीवन दुःख-पूर्ण होता है। यदि किसी स्त्री के हनुप्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनी एवं सुखी जीवन व्यतीत करने वाली होती है। परन्तु उसे अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग में पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। बाद में वह सुख भी उसे पर्याप्त मिलने लगता है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं जांघ के हिस्से में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक के पानी में डूबने, ऊपर से गिरने अथवा किसी अन्य प्रकार की दुर्घटना में फंस जाने की सम्भावना रहती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह अपना कोई विशेष प्रभाव प्रदर्शित नहीं करता।

यदि किसी स्त्री के हनुप्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और वह भाग्यहीन भी होती है। तीस अथवा इकत्तीस वर्ष की आयु में उसे किसी भयानक शारीरिक-रोग अथवा मानसिक कष्ट होने की आशंका भी रहती है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) पीठ के नीचे की ओर होता है। यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो जातक अपनी ही दुर्बुद्धि के कारण अपने भाग्य को नष्ट कर लेता है।

यदि किसी स्त्री के हनुप्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और उसका चरित्र भी प्रायः अच्छा नहीं होता। चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं की स्थिति पर भी भली-भाँति विचार कर लेना चाहिए।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायी जांघ के नीचे होता है। यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक लोभी, क्षुद्र हृदय का होता है। उसकी

वृद्धावस्था सुखपूर्वक नहीं बीतती। इस तिल को अशुभ फल कारक ही समझना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक किसी ऊंचे स्थान से गिरता है अथवा किसी अन्य प्रकार की दुर्घटना का शिकार होता है।

यदि किसी स्त्री के हनु प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो युवावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में उसकी स्थिति में परिवर्तन हो जाता है। अर्थात् यदि युवावस्था में धनाढ्य हो तो वृद्धावस्था में दरिद्र हो जाती है। और युवावस्था में दरिद्र हो तो वृद्धावस्था में धनाढ्य हो जाती है।

चिबुक प्रदेश के तिल—हनुप्रदेश के नीचे चिबुक प्रदेश (ठोड़ी) पर पाये जाने वाले कुछ तिलों का यहां वर्णन किया जा रहा है।

इस तिल का उत्तर चिह्न (तिल) दायीं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक गुणवान तथा विद्वान होता है। बड़े लोगों की सहायता एवं सम्पर्क के द्वारा उसकी भाग्योन्नति होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक धनवान एवं दीर्घायु होता है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनवान होती है तथा बाहर से सच्चरित्र भी दिखाई देती है। परन्तु यथार्थ में उसका चरित्र शुद्ध नहीं होता । उसकी चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए हस्त-रेखाओं तथा शरीर के अन्य लक्षणों पर भी विचार किया जाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के चिबुक प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो जीवन के मध्य भाग में उसके किसी निकट सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है। किसी समय किसी अनुचित औषधि का प्रयोग कर लेने के कारण वह अपने स्वयं के स्वास्थ्य को भी हानि पहुंचा बैठती है।

मस्सा, लहसन और भौंरी विचार

मस्सा

मस्से के तीन भेद कहे गए हैं—

शरीर की त्वचा पर काले रंग का बाहर की ओर निकला (उठा) हुआ मांस विन्दु।

त्वचा के भीतर दबा हुआ, परन्तु कुछ उभरा हुआ रोमयुक्त मांस विन्दु।

गेहुंएं रंग का मांस-विन्दु जो त्वचा के ऊपर रक्त विकार के कारण उभर आता है और कुछ समय बाद स्वयं ही अथवा औषधोपचार से कटकर गिर जाता है।

आकार के अनुसार मस्सा यदि राई तथा बाजरे के दाने के बराबर हो तो वह अच्छा होता है। इससे बड़ा आकार का हो तो वह शुभ नहीं होता।

'वाराह मिहिर' के मतानुसार मस्सा यदि शरीर की त्वचा के वर्ण का हो तो वह अच्छा होता है। इससे वड़े आकार का हो तो वह शुभ नहीं समझना चाहिए।

क्षत्रिय के शरीर पर यदि कुछ लालिमा लिये हुए श्वेत (उज्ज्वल कान्ति) का मस्सा हो, तो वह शुभ होता है।

वैश्य के लिए कुछ लालिमा अथवा पीलापन लिए हुए उज्ज्वल कान्ति वाला मस्सा शुभ नहीं होता है।

शूद्र के लिए उपयुक्त तीनों रंगों में से किसी रंग का अथवा काले रंग का मस्सा हो तो शुभ होता है।

एक बात यह भी स्मरण रखने योग्य है कि जब कभी मस्से का जन्म होता है अर्थात् मस्से का उद्गम प्रारम्भ हो जाता है, उस समय जातक के मन में चिन्ताएं उत्पन्न होना आदि उसके प्रभाव आरम्भ हो जाते हैं। तदुपरान्त जब मस्सा पूर्ण हो जाता है, तब वह अपना प्रभाव प्रदर्शित करना आरम्भ कर देता है।

पश्चिमी विद्वानों ने मस्सा तथा लहसन आदि का प्रभाव भी तिल के समान ही माना है, परन्तु भारतीय विद्वानों ने इन सबके प्रभावों के विषय में अलग-अलग वर्णन किया है। यहां पर भारतीय मत को ही महत्त्व दिया जा रहा है।

यदि सिर के ऊपरी भाग पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

यदि सिर के पिछले भाग पर मस्सा हो तो उसे सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

यदि ललाट पर मस्सा हो तो धन का आगम अधिक होता है।

यदि मस्तक पर मस्सा हो तो जातक को हर जगह लाभ, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

यदि भौंह के ऊपर मस्सा हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

यदि दोनों भौहों के बीच में मस्सा हो तो जातक स्वयं दुष्ट प्रकृति का होता है, परन्तु उसे प्रियजनों का साथ स्वयं सहयोग विशेष रूप से प्राप्त होता है।

यदि आंख की पलकों के ऊपर मस्सा हो तो जातक को दुःख देने वाला होता है।

यदि नेत्र पर मस्सा हो तो जातक को अपने प्रियजनों के दर्शन का सुख प्राप्त होता है।

यदि कनपटी अथवा भौंह के ऊपर ललाट एवं आंख की हड्डी के संगम स्थल पर मस्सा हो तो जातक सर्वस्व त्याग कर संन्यास ग्रहण करता है।

जिस स्थान से आंख के आंसू गिरते हैं, उस स्थान पर मस्सा हो तो जातक के हृदय में चिन्ता उत्पन्न होती है।

यदि नाक पर मस्सा हो तो नवीन वस्त्र प्राप्त होता है।

यदि गाल पर मस्सा हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

यदि होंठ पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है।

यदि चिबुक पर मस्सा हो तो भी श्रेष्ठ भोजन प्राप्त होता है।

यदि हनुप्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

यदि कान पर मस्सा हो तो जातक को आध्यात्मिक ज्ञान अथवा आभूषणों की प्राप्ति होती है।

यदि कण्ठ पर मस्सा हो तो जातक को खाने-पीने के अच्छे पदार्थ प्राप्त होते हैं।

यदि हंसली (सिर और गर्दन के जोड़ वाला भाग) पर मस्सा हो तो लोहे के शस्त्र अथवा औजार द्वारा ग्रीवा पर चोट लगती है।

यदि हृदय अथवा वक्षस्थल पर मस्सा हो तो जातक को पुत्र की प्राप्ति होती है।

यदि पसली अथवा उसके नीचे मस्सा हो तो जातक को दुःख प्राप्त होता है।

यदि कन्धे पर मस्सा हो तो जातक के धन का अनेक प्रकार से नाश होता है।

यदि पीठ पर मस्सा हो तो दुःख एवं चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।

यदि बाहु पर मस्सा हो तो शत्रुओं का नाश होता है तथा वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

यदि कलाई पर मस्सा हो तो जातक स्वयं बन्धन को प्राप्त होता है।

यदि उंगलियों पर मस्सा हो तो उसे धनागम तथा सुख-सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

यदि पेट पर मस्सा हो, वह दुःख-क्लेश कारक होता है।

यदि नाभि पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन एवं पेय पदार्थों की प्राप्ति होती है।

यदि नाभि के नीचे मस्सा हो तो चोरी के कारण जातक के धन की हानि होती है।

यदि वस्ति प्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

यदि पेडू पर मस्सा हो तो सुन्दर स्त्री तथा पुत्र की प्राप्ति होती है।

यदि अण्डकोष पर मस्सा हो तो सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

यदि अण्डकोष के निचले भाग पर मस्सा हो तो धन की प्राप्ति होती है।

यदि जांघ पर मस्सा हो तो जातक को शत्रुओं के कारण हानि उठानी पड़ती है। यह अशुभ होता है।

यदि पिंडलियों पर मस्सा हो तो शस्त्राघात से पीड़ा होती है।

यदि टखनों पर मस्सा हो तो जातक को बन्धन का दुःख अथवा यात्रा में कष्ट उठाना पड़ता है। यदि नितम्ब पर मस्सा हो तो धन का नाश होता है।

यदि ऐड़ी में मस्सा हो तो किसी से अनुचित सम्बन्ध स्थापित होता है। तथा यात्रा करनी पड़ती है।

यदि पांव की उंगलियों पर मस्सा हो तो बन्धन का दुःख भोगना पड़ता है।

यदि पांव के अंगूठे पर मस्सा हो तो जातक को अन्य लोगों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है।

लहसन

शरीर की त्वचा पर कुसुम के रंग के समान लाल अथवा काले दाग को लहसन कहा जाता है। लहसन छोटे-बड़े आकार-प्रकार के होते हैं। लहसन का आकार जितना बड़ा होता है, उसका प्रभाव भी उतना ही अधिक होता है।

स्थान-भेद से लहसन का फल भी वही होता है, जो तिलों का बताया जाता है। केवल एक बात यहां विशेष रूप से कहनी है कि जिस पुरुष के दायीं भुजा पर लहसन होता है, यह अत्यन्त धनवान होता है।

भौंरी

बालों में जो एक चक्कर-सा बन जाता है, उसे भौंरी कहते हैं।

भौंरी दो प्रकार की होती है।

दक्षिणावर्त, वामावर्त।

दक्षिणावर्त भौरी में बालों का चक्कर दायीं ओर मुंह किए होता है। और वामावर्त में बालों के चक्कर का मुंह बायीं ओर होता है।

भौरीं शरीर के उसी स्थान पर पायी जाती है, जहां बाल अधिक होते हैं।

भौंरी का पुरुष पर क्या प्रभाव होता है, यह संक्षेप में बताता हूँ। स्त्री के विभिन्न अंगों पर पाई जाने वाली भौंरी फल का प्राचीन आचार्यों ने कुछ विस्तारपूर्वक

वर्णन किया है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

स्त्री की पीठ के बाएं भाग में स्थित दक्षिणावर्त भौंरी सुख देने वाली होती है।

यदि स्त्री की योनि के मस्तक पर (ऊपर) दक्षिणावर्त भौंरी हो तो वह राजपत्नी अथवा किसी ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती है। ऐसी भौंरी यदि सघन हो तो वह बहुत से पुत्रों का सुख देने वाली होती है।

स्त्री के पेट अथवा पीठ पर भौंरी का होना शुभ नहीं होता। यदि इन स्थानों में से कहीं एक भौंरी हो तो वह अपने पति को मारने वाली होती है, और यदि दो भौंरी हो तो वह व्यभिचारणी भी होती है।

यदि स्त्री के कण्ठ में दक्षिणावर्त भौंरी हो तो उसे दुःख तथा वैधव्य को देने वाली समझना चाहिए।

यदि स्त्री की कमर के बीच में भौंरी हो तो उसे त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह अपने पति के लिए अशुभकारक होती है। ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि में भौंरी हो तो वह पतिव्रता होती है।

यदि स्त्री की पीठ में भौंरी हो तो वह पति का नाश करने वाली अथवा व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री के कन्धे पर भौंरी हो, वह धनवती होती है।

स्त्रियों के मस्तक में भौंरी चाहे दक्षिणावर्त में हो, चाहे वामावर्त में, वह अशुभ फलकारक होती है।

यदि स्त्री सुलक्षणी हो, परन्तु भौंरी का कुलक्षण हो, तो वह स्त्री कुलक्षणी हो जाती है, ऐसा विद्वानों का मत है।

विशेष ज्ञातव्य

तिल, भौंरी, लहसन और मस्सा—ये चारों ही एक साथ जिस पुरुष के शरीर पर दायीं ओर तथा जिस स्त्री के शरीर पर बायीं ओर दिखाई दें, वह पुरुष अथवा स्त्री जंगल में जाकर रहने लगे तो भी लक्ष्मी उसके पीछे भागी-भागी फिरती है, अर्थात ऐसे स्त्री-पुरुष कहीं भी क्यों न रहें, बड़े धनवान तथा भाग्यवान बने रहते हैं, यह प्राचीन भारतीयों का कहना है।

इस सम्बन्ध में ब्रजभाषा का दोहा बहुत प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है—

पतल भौंरी लहसन मसौ, होय दाहिने अंग।
जाई बसै बनखण्ड में, तऊ लक्ष्मी संग।

स्वर सम्बन्धी शकुन

स्वर दो माने जाते हैं—चन्द्र स्वर और सूर्य स्वर।

चन्द्र स्वर बायीं नासिका में और सूर्य स्वर दायीं नासिका में रहता है। यदि बायीं नासिका का स्वर चलता है तो वह चन्द्र अर्थात् इड़ा नाड़ी से सम्बन्धित स्वर कहलाता है। किन्तु बायीं नासिका का स्वर चलने पर, उसे सूर्य स्वर अथवा पिंगला नाड़ी से सम्बन्धित स्वर कहा जायेगा।

चन्द्र स्वर के शुभाशुभ शकुन

यात्रा के आरम्भ में, अर्थात् किसी कार्य के उद्देश्य से गमन करते समय यदि चन्द्र स्वर चले तो शुभ होता है।

नगर प्रवेश, गृह प्रवेश अथवा विवाह, यात्रा आदि में चन्द्र स्वर सदा शुभ होता है।

यदि दूर देश में युद्ध चल रहा हो, तो उसमें जाते समय चलने वाला चन्द्र स्वर हितकर होता है।

यदि स्वर में आरम्भ किया गया कोई कार्य विफल हो जाए तो वह चन्द्र स्वर में करने से अवश्य सम्पन्न हो जाना कहा गया है।

सूर्योदय से पूर्व चन्द्र स्वर का महत्त्व

प्रातः काल के समय चन्द्र नाड़ी (इड़ा) का ही महत्त्व है। इस समय यह स्वर नहीं चलता तो दिन भर उदासीनता से युक्त रहता है।

यदि प्रातःकाल चन्द्र स्वर न चले तो उस समय कार्यारम्भ नहीं करना चाहिए वरन् मध्याह्न काल में चन्द्र स्वर चलने पर करना उचित है। यदि यह स्वर प्रातःकाल नहीं चलता तो मध्याह्न काल में अवश्य चलना चाहिए।

यदि चन्द्र स्वर में पृथ्वी तत्त्व अथवा जल का उदय हो तो शुभ कार्यों में सिद्धि होती है।

दूर देश की यात्रा और चन्द्र स्वर

यदि दूर देश की यात्रा करनी हो तो उसका आरम्भ चन्द्र स्वर से करना चाहिए।

चन्द्र स्वर में यात्रा करने से इष्ट वस्तु अथवा आरम्भ किए कार्य में सफलता मिलती है।

चन्द्र स्वर विष का वरण कर लेता है। इसलिए किसी दूसरे का खाद्यान्य तभी ग्रहण करें, जब समर्थ स्वर चलता हो।

विद्याध्ययन का आरम्भ चन्द्र स्वर के चलते में करना हितकर होता है।

किसी भी धर्मानुष्ठान अथवा मंगल कार्य करने में चन्द्र स्वर का ही उपयोग मान्य है।

देव-पूजन, जप-तप, यज्ञ आदि कर्मों में चन्द्र स्वर का ही महत्त्व है।

यज्ञोपवीत धारण, वेदाध्ययन, कठिन रोगों की चिकित्सा के बाद कार्यों में इड़ा नाड़ी का ही उपयोग है।

दीक्षा ग्रहण, भ्रातृ-दर्शन आदि कार्यों के लिए चन्द्र स्वर में गमन करना चाहिए।

खेत में बीज बोना, प्रस्थान, सन्धि आदि कार्यों को भी चन्द्र स्वर में करना उचित है।

गायन करने, बाजा बजाने, नाचने अभिनय करने, ग्राम या नगर में प्रवेश करने आदि कार्यों का आरम्भ, चन्द्र स्वर में करने में उचित माने जाते हैं।

योगाभ्यास, ध्यान, पाठ आदि कार्यों का आरम्भ भी चन्द्र स्वर में करें।

आभूषण धारण, तिलक धारण तथा शृंगार आदि कार्यों को चन्द्र स्वर में करना शुभ होता है।

गुरु का पूजन भी इड़ा में ही आरम्भ करें। चढ़े हुए विष को उतारने में भी यह सहयोगी है।

यदि वर्षा का आगमन इड़ा स्वर के चलते में हो तो वह अत्यन्त शुभ, धान्य की वृद्धि में सहायक सिद्ध होता है। इस प्रकार इसमें भी इड़ा का ही महत्त्व है।

दुःख, शोक, विषाद, संकट या ज्वरादि की अवस्था में चन्द्र स्वर चलने लगे तो शुभ होता है।

घर में हाथी, घोड़े आदि वाहनों के बांधने का कार्य भी इड़ा में ही करना चाहिए।

धन-सम्पत्ति का संग्रह तथा धन-धान्य का संग्रह प्रभृति कार्य भी चन्द्र स्वर में शुभ होते हैं।

देव-प्रतिमा की प्रतिष्ठा प्रवृत्ति कार्य भी चन्द्रस्वर में ही करनी चाहिए।

सूर्य स्वर का शुभाशुभ शकुन

यदि सायंकाल के समय सूर्य स्वर (दायीं नास का स्वर) चलता हो तो शुभ है। यदि सायंकाल के समय यह स्वर न चले तो आधी रात के समय अवश्य चलना चाहिए। इसलिए किसी उद्देश्य के लिए उस समय तक की प्रतीक्षा करना उचित है।

यदि कहीं समीप में ही युद्ध हो रहा हो और जातक को उसमें जाना हो तो जब सूर्य स्वर चलता हो तब गमन करें। यह लक्षण शीघ्र ही विजय प्राप्त कराने

वाला है।

यदि सूर्य स्वर में अग्नि तत्त्व का उदय हो तो यह क्रूर कार्यों में सिद्धिदायक होगा।

यदि स्वदेश में ही कहीं जाना हो अथवा निकटतम स्थान की ही यात्रा करनी हो तो सूर्य के स्वर के चलते में करनी चाहिए। गृह प्रवेश के समय यदि सूर्य स्वर चलता हो तो अधिक शुभ है।

सूर्य स्वर में विग्रह से लाभ

यदि किसी बलवान से टक्कर हो तो सूर्य स्वर चलते में विग्रह आरम्भ करना चाहिए। क्योंकि 'सूर्योबलिवश नयेत' के अनुसार सूर्य स्वर बलवान को भी वश में कर लेता है।

कठिन एवं क्रूर विद्याओं के पठन-पाठन का कार्य सूर्य स्वर में करना उचित है।

बड़ी नाव पर चढ़ने या शत्रु को विष देने आदि का कार्य भी पिंगला (सूर्य स्वरों) में करना चाहिए।

मन्त्र-सिद्धि और पिंगला नाड़ी—

अस्त्र-शस्त्रों की मन्त्र सिद्धि करने में भी पिंगला नाड़ी का चलना ही अधिक लाभकारी होता है।

पशु-विक्रय, शास्त्राध्ययन, ईंट, लकड़ी, पत्थर आदि के कार्यों में भी सूर्य स्वर का ही महत्त्व है।

दुर्गों और पर्वतों पर चढ़ना, हाथी, घोड़ा, रथ आदि पर सवार होना तथा शस्त्राभ्यास आरम्भ करना भी पिंगला स्वर के चलते में ही करना चाहिए।

शत्रुओं से लोहा लेना, किसी से झगड़ा करना, युद्ध करना, हाथ में शस्त्र ग्रहण करना, शत्रुओं का उच्चाटन-कर्म करना, कोई वस्तु खरीदना या बेचना आदि कार्य भी पिंगला में सफल होते हैं।

व्यापार कार्य, स्त्री-गमन, शयन तथा राजा या राजपुरुष के दर्शन में भी सूर्य स्वर उपयोगी है।

किसी वस्तु का उपयोग, भोजन, पान, स्नान आदि कर्म भी पिंगला में ही सफल होते हैं।

दान देना, प्रेतों को वश में करना आदि कार्यों का आरम्भ भी पिंगला में ही सफल होते हैं।

मदाग्नि आदि रोगों में औषधि-सेवन आदि के लिए सूर्य स्वर ही उपयोगी है। अन्य रोगों में भी इसी स्वर की उपयोगिता समझी जाती है।

यदि भैंस-भैंसा, ऊंट आदि कोई पशु रखा हो तो उसे अपना सूर्य स्वर चलते में ही लाकर रखें। जो लोग कुत्ता पालते हैं, उन्हें भी इसी नियम का पालन करना चाहिए।

यदि कोई नदी आदि पार करनी हो तो जब सूर्य स्वर चलता हो तभी पार करें।

श्वास से प्रवेश–निर्गम स्वर

सोलहम हं सः शि व, ता ल रा म आदि–

शरीर के नाभि में कुण्डलिनी नाम की महाशक्ति का एक केन्द्र है। शक्ति केन्द्र में २० नाड़ियां (१० ऊपर और १० नीचे), चार सीधी (दो दाहिने और दो बाएं) गयी हुई हैं। ये २४ प्रधान नाड़ियां (धमनियां) हैं। वास्तव में स्थूलता 'शतञ्चैका हृदयस्य' १०१ नाड़ियों की और भी अनेक सहायक नाड़ियां शरीर में रक्त-प्रवाह (वायु-वेग) श्वास के आदान-प्रदान के माध्यम से कर रही हैं।

१. इड़ा, २. पिंगला, ३. सुषुम्ना, ४. गान्धारी, ५. हस्तजिह्विका, ६. पूषा, ७. यशा, ८. व्यूषा, ९. कुहू, और १०. शखनिका—प्रधान दश नाड़ियों के ये नाम हैं।

इड़ा नाड़ी का नाम चन्द्र-नाड़ी और पिंगला का नाम सूर्य नाड़ी है। सुषुम्ना का नाम शम्भु नाड़ी है।

चन्द्रनाड़ी शीतप्रधान है, शक्ति इसकी अधिष्ठात्री है, इसलिए यह वाम नाड़ी वाम स्वर रूप में है। सूर्य नाड़ी उष्ण, प्रधान, शिव, अधिष्ठान दाहिनी नाड़ी या दक्षिण स्वर, श्वास की होती है। वैदिक परम्परा में इन्हें 'अग्नि सोमी' कहा जाता है। आज का विज्ञान इस प्रकृति क्रम को सम्भवतः ऑक्सीजन (O_2) कार्बनडाईऑक्साइड (CO_2) से कहता है।

जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, सोम हैं, इसी प्रकार सौर-मण्डल में, मंगल पार्थिव तत्त्व (पृथ्वी से उत्पन्न कंज), बुध, वाक् तत्त्व, बृहस्पति श्रेष्ठ प्रतीक, जीव तत्त्व, शुक्र, तामस और ज्ञान, तत्त्व, और शनि, दुःख स्वरूप, वायु तत्त्व हैं।

प्राणी (जीव) के हृदय में, हंस, चार सोऽहं की भावना –

जीव के श्वास प्रवेश नाभि में सूर्य तत्त्व दूपित वायु को दूर करता है। तथा चन्द्र तत्त्व वायु प्रवेश के लिए होता है। परमहंस योगी उक्त सोऽहं या हंस भाव से प्राण और अपान की एकरूपता की साधनिका से ब्रह्मीभूत होता है। इस प्रक्रिया से ह और ट या रा और म, या शि और व, या ता और ल की एकता से हठ, राम, शिव और ताल या अनेक प्रकार की शब्द-सृष्टि होती रहती है।

'सिद्धसिद्धान्त' पद्धति में –

हकारः कीर्तितो सूर्यः मकारश्चन्द्र उच्यते,
हकारः निर्गमे प्रोक्तः सकारोन्तः प्रवेशने हंसः,

तथा गारुमे रकारेए वहिर्याति मकारेण विशेतुनः
राम रामेति रामेति जीवः जपति सर्वदा-कहा गया है।

स्वर आत्मस्वरूप भी कहा है, जो योगगम्य है, स्वर शास्त्र में, चारों वेद, शास्त्रान्तर, संगीत के साथ सारा त्रैलोक्य स्वर में स्थित है।

स्वरे वेदाश्चव शास्त्राणि स्वरे गन्धर्वमुत्तमम्
स्वरे च सर्व त्रैलोक्यं स्वरमात्मस्वरूपकत्।

—(शिव स्वरोदय)

पंच तत्त्वात्मक (आधुनिक विज्ञान के १०९ तत्त्वात्मक) शरीर में दृढ़ योगी संजीवन तत्त्व को ही ग्रहण करता है, निर्जीवन तत्त्व को शरीर से बाहर करते हुए अमृतत्त्व को प्राप्त होता है। किस समय किस तत्त्व की प्रधानता हो रही है, यह योगगम्य या गुरुगम्य है। तथापि सिद्धिसाधक जन नासिका में दक्षिण वाम स्वरों की गतिविधि से परिचित होते रहते हैं।

कुछ लोग एक शंकु—१२ अंगुल की लम्बी चिकनी लकड़ी या पत्थर से नासिका के अग्रभाग (मुंह) से श्वास की गति को ज्ञात कर लेते हैं।

वाम या दक्षिण नासापुट के श्वास गमन से पार्थिव-तत्त्व (पृथ्वी) की प्रधानता—

नासापुट के ऊपर श्वास के आदान-प्रदान से अग्नि तत्त्व।

नासापुट से नीचे से बहते हुए वायु से जल तत्त्व।

नासिका के दोनों पार्श्व से श्वास गमनागमन से वायु तत्त्व।

नासिका के मध्य से प्रचलित वायु, जिसे स्वरज्ञ संक्रमण कालीन वायु भी कहते हैं। उसे आकाश तत्त्व की प्रधानता समझते हैं।

हृदय कमल के मुख्यतया आठ विभागों के भी प्रत्येक विभाग के दो विभागों के १६ भागों में तत्त्वों का एक पाली में आरोह दूसरी पाली में अवरोह होता है। जिसे निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा रहा है।

	२ मिनट तक पार्थिव तत्त्व	१६ मिनट तक आकाश
आरोह—	४ मिनट तक जल तत्त्व	८ मिनट तक वायु-अवरोध
	६ मिनट तक तेज तत्त्व	६ मिनट तक तेज
	८ मिनट तक वायु तत्त्व	४ मिनट तक जल
	१० मिनट तक आकाश तत्त्व	२ मिनट तक पृथ्वी
	३० मिनट में पाँचों तत्त्व	३० मिनट में पाँचों तत्त्व

हृदय के आठ विभागों के एक विभाग में आरोह-अवरोह के क्रम से एक घण्टे में एक विभाग, तो ८ घण्टे में तत्त्वों का संचालन, इस प्रकार २४ घण्टे में प्रत्येक तत्त्व की ८ X २ X ३=४८,

४८ आवृतियां हो जाती हैं।

श्वास की गति –

२ मिनट=५ पल =५ X ६=३० असु (प्राण) अतः १ मिनट में ३०÷२=१५ साधारणतया श्वास संचार का क्रम होता रहता है।

इस प्रकार २४ घण्टे में, २४ X ६० X १५=९०० X २४=२१६०० असु =प्राण, श्वास संचार होगा। इस प्रकार एक अहोरात्र में २१६०० असु या २१६००÷६=३६०० पल÷६०=३० असु में एक पल, जो मिनट का २/५ या २४ सेकण्ड़ के बराबर होता है।

अतः १ मिनट में २१६००÷२४ X ६०=१५ श्वास की गति होती है। स्वस्थ पुरुष के श्वास के तारतम्य से १ श्वास में ५ नाड़ी को १५ श्वासों में १५ X ५=७५ हृदयगति या नाड़ी गति होगी।

'एक विंशति सहस्राणि षट्शतानि तथोपरि, हंस हंसेति हंसेति जपति नित्यशः' पुराणों ने स्पष्ट कहा है।

श्वास की जगह यहां श्वास गति का अभिप्राय, नाड़ियों की हृदयगति से संबन्ध रखता है।

चान्द्र दिन (तिथियों में) में दक्षिण वाम स्वर चलन क्रम–

योगियों का अनुभव है कि शुक्लपक्ष को प्रतिपदा से तृतीया तक में एक घटी क्रम से पहले चन्द्र स्वर (वाम स्वर) चलता है, तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तिथि से तृतीया तिथि तक पहले सूर्य स्वर (दक्षिण स्वर) चलता है।

शुक्ल और कृष्ण पक्ष में चन्द्र, सूर्य स्वर–चक्र–

शुक्लपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
स्वर	चं	चं	चं	सू	सू	सू	चं	चं	चं	सू	सू	सू	चं	चं	चं

कृष्णपक्ष

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
स्वर	सू	सू	सू	चं	चं	चं	सू	सू	सू	चं	चं	चं	सू	सू	सू

१५ से पूर्णमासी, ३० से अमावस्या होती है।

फल–विचार–जिस तिथि में जो स्वर चल रहा हो, वह पांच तत्त्वों के साथ चलेगा तत्पश्चात् ५ घटी तक दूसरा स्वर चलेगा। जैसे शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को ५ घटी तक चन्द्र (बायां स्वर) पुनः ६ से १० तक सूर्य (दक्षिण स्वर) चलने के क्रम से ६० घटी २४ घटी=२४ घण्टे में $\frac{६}{५}$ =१२ या ६० X $\frac{२}{५}$ X $\frac{१}{२}$ =१२

संक्रान्तियां एक अहोरात्रि में पृथ्वी आदि तत्त्व चलन में हो जाती है।

उक्त प्राकृतिक क्रम में, व्यय, चन्द्र स्वर के (बायें स्वर के) उदय के समय यदि सूर्य स्वर, अथवा सूर्य स्वरोदय काल (दाहिने स्वर) में चन्द्र स्वरोदय जिस दिन प्रतीत होता है, उस अशुभ संकेत, हानि तथा मन में उद्वेग होगा।

रात्रि में चन्द्र स्वर तथा दिनभर सूर्य स्वर प्रचालन की साधनिका जिनसे की जाती है, निःसन्देह वे योगी हैं।

यात्रा, विवाह, वस्त्र, अलंकार, भूषण, परिधान-सन्धि, गृह-प्रवेश आदि के लिए बायां स्वर शुभ है। दक्षिण या वाम, जो भी स्वर चले, यात्रा आरम्भ के समय प्रथमतः वही पैर चलाना चाहिए । स्वर साधन कुशल महात्मा 'कबीरदास' ने भी—

'जो स्वर चले सो पग दीजै
लोक वेद का कहा न कीजै'

कहा है।

युद्ध, जुआ की प्रतिस्पर्धा, स्नान, भोजन, मैथुन, व्यवहार, भयभंग के लिए दाहिनां स्वर उत्तम कहा गया है। पृथ्वी आदि किस तत्त्व को कैसे जाना जायेगा—

पृथ्वी तत्त्व	पीत वर्ण
जल तत्त्व	श्वेत वर्ण
तेज तत्त्व	रक्त वर्ण
वायु तत्त्व	नील वर्ण

और आकाश तत्त्व को धूम्र वर्ण से समझना चाहिए ।

हृत्कमल के पूर्व आदि दल में पृथ्वी आदि तत्त्वों में, तत्त्व विशेष को समझकर स्वर शास्त्रज्ञ, योगी, दैवज्ञ, प्रश्नकर्ता के अनुसार फलादेश करता है।

पूर्व में वायु तत्त्व के चलने से संग्राम करने की इच्छा होती है।

अग्नि	भोजन
दक्षिण	क्रोध
नैऋत्य	भोग-विषय
पश्चिम	सुखानुभूति
वायु	यात्रा करने की
उत्तर	किसी पर कृपा करने के लिए
ईशान	राज्य-प्राप्ति

सन्धि स्थान (दो पत्रों की) परम आनन्द की अनुभूति होती है।

इस प्रकार ज्योतिष और योग शास्त्र का परस्पर अभेद सूचित होता है 'इति'॥

'दो नामों से आपस की मैत्री या शत्रुता का विचार'

मित्रों (दोस्तों) स्त्री, पुरुषों, प्रत्येक के साथ व्यवहार, राज्य-व्यापार धन या

किसी भी अभीष्ट कार्य के लिए निम्न क्रम से विचार किया जाता है।

ऋण और धन के साधन चक्र ('समरसार' से)

साध्यांक	त	त	त	न	ग	भृ	मा	नु	नि	नि	गा
	६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अ
	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

साधकांक रू२ रू२ म५ न० र२ य१ न० भ४ व४ गा३

यहां स्वामी=साधक, सेवक=साध्य, पति=साधक, पत्नी=साध्य, गुरु=साधक, शिष्य=साध्य इत्यादि।

जैसे राम--साधक, सीता--साध्य हैं।

अतः र+आ+ म्+अ
०+१२+५+२ } साधक अंकों से=९

स्+ई+त्+आ
०+०+३+६ } साध्य अंकों से - ९

साधक और साध्य के अंकों के प्रथम योग में ९ का भाग देने से शेष ग्रहण करना चाहिए।

राम, सीता दोनों के अंक योग ९, ९ में आठ का भाग देने से शेष १, १, बचने से दोनों में परस्पर अभेद है या साम्य है।

जहां जन्मपत्रियां उपलब्ध न हों ऐसी स्थिति-चक्र से वर-वधू का मिलापक विचार अच्छी तरह किया जा सकता है।

भूमिगत द्रव्य का ज्ञान

भूमिगत द्रव्य-ज्ञान के लिए अत्यन्त सूक्ष्म गणित की आवश्यकता होती है।

२४ घण्टे के –एक वार में सातों वारों का सात विभाग

२४ घण्टे की–एक तिथि १५ तिथियों का विभाग

२४ घण्टे के एक नक्षत्र में २७ नक्षत्रों के विभाग क्रम से सर्वप्रथम सूक्ष्म इष्टकाल में तिथिवार नक्षत्र योग करण का ज्ञान कथित गणित पद्धति से करना नितान्त आवश्यक है।

प्राचीन वस्तु निर्माण में राजमहल का विस्तार बताया है।

'वितस्ति द्वितयं हस्तो राजहस्तश्च तद्द्वयम्
दश हस्तैस्तैश्च दण्डस्यात्रिंशदण्ड निवर्तनम्'

३० दण्ड लम्बे-चौड़े (प्लाट) पिण्ड को निवर्तन कहा गया है। ३० दण्ड X १००=३०० हाथ (राजहस्त) का द्विगुणित ६०० हाथ होता है।

६००÷२=३०० गज या ९०० फीट लम्बी और ९०० फीट चौड़ी भूमि की निवर्तन संज्ञा हैं।

यदि एक मकान की इस प्रकार की स्थिति हो तो इस मकान में उक्त माप का सर्वाकार चक्र बनाकर उक्त पिण्ड में रखना चाहिए।

चन्द्रमा का स्पष्ट जहां तक हो सके, एक-एक मिनिट तक का गणित से बना लेना चाहिए।

रे.	अ.	भ	कृ	म.	पू	उ
उ.	पू.भा.	श	रो.	श्ले.	पु	ह.
अ.	श्र	ध	मृ	आ	पु	चि
उ.	पू.भा.	मू	ज्ये.	अ.	वि.	स्वा

चक्र को कैसे स्थापित करके यहां पर आचार्य ने गुरु 'सुखाद् ज्ञेयभ्'— गुरु मुख से जानना चाहिए, कहा है। किन्तु विद्वान कुशलदैवज्ञ तत्कालीन आकाश खगोल ज्ञान वश इस चक्र को वास्तु पिण्ड में स्थापित कर सकता है।

चन्द्रमा के नक्षत्र में सूर्य और चन्द्रमा दोनों हैं, तो अवश्य उस स्थान में धन स्थापित होगा।

सूर्य नक्षत्र में दोनों हों तो धन नहीं है।

अथवा धन (द्रव्य) की जगह उस स्थल में शल्य (हड्डी) समझनी चाहिए।

द्रव्य कितनी दूरी की गहराई में है।

चन्द्रमा के नवांश वश · · · ९ गुणित हाथ या १· · · ९/२· · · ३ हाथ की गहराई में द्रव्य की स्थिति की घोषणा करनी चाहिए।

अन्य ग्रहों के सम्बन्ध से सुवर्ण, रजत, ताम्र, लौह आदि धातु का ज्ञान करना चाहिए।

ऐसी स्थिति में मन्त्र-तन्त्र प्रयोग आवश्यक होगा—

विष्णु, गणेश, ग्रह, क्षेत्रपाल, मातृका, भैरव महादेव, नाग आदि की पूजा करनी चाहिए।

मदिरा तथा बलि आदि का भी संकेत है।

मन्त्र का भी उल्लेख —

"पद्मासने चन्द्रातपेन ऐं क्लीं हू वद-वद वाग्वादिनी स्वाहा" इस मन्त्र से ६ महीने तक त्रिकाल-सन्ध्या में जब हवन-पूजन से भूमिगत (पूर्वजों का स्थापित) द्रव्य प्राप्ति और उसका सदुपयोग होता है।

अपराध, सुरक्षा व मुक्ति साधन

ज्योतिष द्वारा अपराध व अपराधी का ज्ञान हो जाने के पश्चात् उससे सुरक्षा व मुक्ति का प्रश्न उठना बड़ा स्वाभाविक है। हम यहां क्रमशः सुरक्षा व मुक्ति के तन्त्र, व मन्त्र के अतिरिक्त कुछ विशेष अन्य साधनों का उल्लेख कर रहे हैं।

दुर्घटना–आघात

दुर्घटना व आघात से सुरक्षा हेतु रुद्राक्ष की १०८ दानों की माला गले में सदैव धारण करनी चाहिए।

अकाल मृत्यु से सुरक्षा, शस्त्राघात तथा दुर्घटना आदि से सुरक्षा के लिए हाथा-जोड़ी (वनस्पति रत्न) का विधिवत प्रयोग करना चाहिए। हाथा-जोड़ी के साथ गीदड़ सिंगी को यदि विधि-विधान सहित सदैव पास में रखा जाए तो विशेष प्रभाव होता है।

फिरोज रत्न धारण करने से भी चोट-चपेट, दुर्घटना आदि से शरीर की सुरक्षा होती है।

सातमुखी रुद्राक्ष का मात्र एक फल दाईं भुजा पर विधिवत धारण करने से भी दुर्घटना तथा आघात से सुरक्षा रहती है।

लक्ष्मण वनस्पति की जड़ को मन्त्राभिसिक्त तथा पूजन करके चांदी के कवच में बन्द करके धारण करने वाला व्यक्ति शस्त्र के आघात से सुरक्षित रहता है। उस पर किसी भी प्रकार का शस्त्र आघात सफल नहीं होता।

कैथा का बांदा कृत्तिका नक्षत्र में लाकर आवश्यकता पड़ने पर यदि मुंह में रखा जाए तो अस्त्राघात की आशंका समाप्त होत है।

शारीरिक सुरक्षा के लिए निम्न मन्त्र से ध्यान करें—

ॐ त्र्यम्बकम् यजामहे सुगंधि पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

तत्पश्चात —ॐ ह्रौं जूं सः मन्त्र की न्यूनतम एक माला प्रतिदिन प्रातः जप करें। शारीरिक सुरक्षा के लिए यह विशेष प्रभावी प्रयोग है।

सम्पत्ति अपराध

भरणी नक्षत्र में पान का पत्ता विधिवत लाकर सुपारी, कत्था, चूना आदि से

पूरा बीड़ा बनाकर चोरी वाले स्थान पर रखने से चोरी की वस्तु का पता चलता है।

घर में श्रीफल तथा दक्षिणावर्ती शंख का विधिवत पूजन आदि करके स्थापना करने से चोरी आदि से धन-हानि की आशंका से मुक्ति मिलती है। घर में श्री-समृद्धि की वृद्धि होती है।

निर्गुण्डी पौधे को पुष्य नक्षत्र के दिन लाकर विधिवत पूजन आदि करके यदि घर में रखा जाए तो घर में धन-हानि, चोरी आदि से सुरक्षा रहती है।

ॐ नमो अग्नि रूपाय ह्रीं नमः मन्त्र द्वारा किसी भी माह के शुक्ल पक्ष, पुष्य नक्षत्र के दिन श्वेत घुंघची की जड़ को सिद्ध करके घर में रखने से चोरी का भय नहीं रहता।

श्वेत अर्क निर्मित गणेश प्रतिमा की घर में विधि सहित स्थापना से भी धन-हानि की आशंका नहीं रहती व श्री-समृद्धि की वृद्धि होती है।

बिज्जू नख, काली घुंघचील व हाथाजोड़ी को एक साथ विधिवत् शुद्ध सिद्ध कर के घर में रखने से चोरी, धन-हानि आदि की आशंका समाप्त होती है। इसे तिजोरी अथवा कोषागार के अतिरिक्त पूजा-स्थल पर भी रखा जा सकता है।

वाद-विवाद

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में विजय के लिए हाथाजोड़ी वनस्पति को किसी भी रविवार के दिन प्राप्त करके विधिवत मन्त्रादि से अभिषेक व पूजन कर के सदैव पास रखना चमत्कारी रूप में प्रभावित होता है।

चमेली की जड़ को पुष्य नक्षत्र में लाकर विधिवत स्वर्ण, चांदी या ताम्र के ताबीज में दायीं भुजा पर धारण करने से वाद-विवाद में जय होती है।

लक्ष्मण पौधे के किसी भाग को (विशेषतया जड़) सूर्यग्रहण के दिन विधिवत प्राप्त करके पूजन आदि करने के पश्चात् ताबीज में बन्द करके धारण करने से भी वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

मूल नक्षत्र में खजूर का बांदा प्राप्त करके विधिवत भुजा पर धारण करने से भी समस्त वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

रोहितक वृक्ष का बांदा अनुराधा नक्षत्र में लाकर विधिवत धारण करना भी वाद-विवाद में जयकारक है।

गोभी तथा मोर की चोटी पगड़ी अथवा टोपी में रखकर कचहरी आदि जाने पर सम्बन्धित वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

कुण्डलीगत दशमभाव स्वामी व लग्न स्वामी से सम्बन्धित रत्न धारण करने से भी वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

९ मुखी रूद्राक्ष को रविवार के दिन प्रातः विधिवत् दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।

व्याघ्र नख प्राप्त करके (एक जोड़ी) विधिवत् स्वर्ण में मढ़ाकर गले में धारण करने से भी वाद-विवादों में विजय प्राप्त होती है।

श्वेतांक की जड़ विधिवत लाकर पूजन आदि करने के पश्चात् दायीं भुजा में ताबीज की भांति लाल कपड़े में बांधें। यह प्रयोग भी वाद-विवाद में जयकारक है।

वाद-विवाद में जय के लिए सूर्य-यंत्र धारण करना भी श्रेष्ठ फल प्रदान करने वाला होता है।

परिवार-अपराध

परिवार में पति-पत्नी कलह से विचित्र स्थिति जन्म ले लेती है।

पति-पत्नी में आपसी सामंजस्य बनाये रखने के लिए पति को शुक्र यन्त्र तथा पत्नी को गुरु यन्त्र विधिवत् तैयार कराकर धारण करना चाहिए।

पति यदि पत्नी को पीड़ित करता हो, उसकी परवाह न करता हो तो विष्णु कान्ता, भंगरा, गोखरू तथा गोरोचन को एक साथ पीस कर रख लें। यह मिश्रण प्रतिदिन प्रातः पत्नी मस्तक पर तिलक की भांति लगाने से पति का प्रेम बढ़ता है, तथा पति-पत्नी के वशीभूत होकर उससे आकर्षित रहता है।

पत्नी से पति को प्रेम प्राप्त न होने तथा पत्नी द्वारा पति को नकारने की स्थिति में पान का रस, हरताल, तथा मनशिला को मंगलवार के दिन एक साथ पीसकर रख लें। तत्पश्चात् यह मिश्रण प्रतिदिन मस्तक पर तिलक की भांति लगायें। यह प्रयोग चमत्कारी है। इस प्रयोग से पति को पत्नी-प्रेम की प्राप्ति होती है तथा पत्नी वशीभूत होकर रहती है।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में आम का बांदा विधिवत धारण करने से परिवार में प्रेम-भावना विकसित होती है। पति-पत्नी में सामंजस्य बना रहता है।

पति-पत्नी में आपसी तनाव की स्थिति में दोनों को छहमुखी रुद्राक्ष गले में धारण करने से श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होते हैं। आपसी तनाव समाप्त होकर प्रेम भाव में वृद्धि होती है।

पति-पत्नी फिरोजा रत्न धारण करें तो आपसी प्रेम बढ़ता है। यदि कलह चल रहा हो, तनाव चल रहा हो तो चमत्कारिक रूप में लाभ होता है।

विवाह के समय लड़की को पीला पुखराज तथा ओपल की एक मुद्रिका में धारण करने के लिए देने से ससुराल में सुरक्षा व पति-प्रेम की प्राप्ति होती है।

परिवार में समस्त प्रकार के उपद्रवों की शांति के लिए निम्न मन्त्र का तुलसी माला पर प्रतिदिन एक माला जप (१०८जप) नियमित करना चाहिए—

मन्त्र

हे कृष्ण द्वारिकावासिन क्वासि यादव नन्दन।
आपद्भिः परिभूतां मां त्रायष्वाशु जनार्दन॥

इस मंत्र का नियमित जप पारिवारिक उपद्रवों के अतिरिक्त अन्य उपद्रवों को भी शांत करता है।

यदि किसी स्त्री को उसकी ससुराल में दहेज आदि के कारण परेशान किया जा रहा हो, तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक क्षति की आशंका हो, उसे अगहन माह की पूर्णिमा के दिन लटजीरा की जड़ लाकर पूजन आदि कर के बायीं भुजा पर धारण करना चाहिए।

यदि किसी स्त्री का पति पर-स्त्री अथवा वेश्या के सम्पर्क में आकर पत्नी विमुख हो गया हो तथा उसे संत्रास दे रहा हो, तो गोरोचन, खस तथा कुकुंम मिश्रण को निम्न मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर लें—

मन्त्र—ॐ काम काममालिनि पतिं में वशमानय ठः ठः।

इस प्रकार के अभिमंत्रित मिश्रण से पत्नी नित्य अपने मस्तक पर तिलक लगाकर पति के सम्मुख जाये। यह प्रयोग करने से पति, पर-स्त्री अथवा वेश्या सम्पर्क से पृथक् होकर पत्नी से प्रेम करता है तथा पत्नी को संत्रस्त नहीं करता।

कभी-कभी देखा जाता है कि कोई स्त्री अपने पति की उपस्थिति या अनुपस्थिति में पर-पुरुष से सम्पर्क करती है, तथा पति को संत्रस्त करती रहती है। ऐसी स्थिति में तगर, जटामासी, नागपुष्प, प्रिय, पघम केशर को एक साथ कूट-पीसकर कूल के बराबर निम्ब पत्र का चूर्ण मिलायें। इस मिश्रण द्वारा अपने शरीर को नग्न होकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए धूपित करें।

"ॐ मूली मूली महामूली सर्व संक्षोभय संक्षोभय एभ्य उपद्रवेभ्यः स्वाहा"।

यह प्रयोग करने के पश्चात् स्त्री के पास जायें। आश्चर्य होगा कि पर-पुरुष पर आसक्त वह स्त्री अपने पति के प्रेम-पाश में बंधकर उसके साथ संतुष्ट होकर रहेगी।

दुष्टता

मलिन मन तथा बुद्धि वाले व्यक्तियों की स्थितियों में परिवर्तन के लिए यन्त्र गले में धारण करना श्रेष्ठ फलकारक है।

यदि कुण्डली से जातक की कम आयु में ही उनकी दुष्ट प्रवृत्ति की जानकारी हो जाए तो प्रारम्भ से ही एक तीनमुखी रुद्राक्ष गले में डाल देना चाहिए। इस प्रयोग·से दुष्ट प्रभावों की वृद्धि पर नियन्त्रण रहेगा।

यदि धनु, मीन, या कर्क लग्न हो, साथ ही उसमें दुष्ट, बुद्धि के लक्षण हों तो श्रेष्ठ पीला पुखराज धारण करवाना चाहिए।

शुभ्रभृंगी को गले में धारण कराने मात्र से मन की मलिनता दूर होती है।

श्रेष्ठ तुलसी माला धारण करने से भी दुष्टतापूर्ण विचारों में कमी आती है तथा व्यक्ति शनैः-शनैः शुद्ध विचारों वाला बन जाता है।

पांचमुखी रुद्राक्ष की १०८ दानों की माला धारण करने से श्रेष्ठ विचारों का उदय होता है।

चाहते हुए भी दुष्टतापूर्ण कार्यों व विचारों से मुक्ति न मिल रही हो तो उस व्यक्ति को निम्न मन्त्र का नियमित एक माला जप प्रतिदिन प्रातः करना चाहिए।

मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनि भगवती अर्हनमुखं निवासिन सरस्वती ममास्ये प्रकाशं कुरु-कुरु स्वाहा ऐं नमः।

दुष्ट व्यक्ति की दुष्टता को समाप्त करने के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष में उतराषाढ़ा नक्षत्र के दिन श्वेत गुन्जा ५ दाने, मोर पंख का चंदोवा, लटजीरा की जड़ एक भोजपत्र में रखकर निम्न मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें—

मन्त्र—ॐ महाकर्णाय विघ्महे बक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दात प्रचोदयात्।

तत्पश्चात् सम्पूर्ण सामग्री को भोजपत्र में लपेटकर लाल रेशमी धागे से बांधकर लाल कपड़े में सिलकर गले में धारण करना चाहिए।

भारतीय तन्त्र-मन्त्र में और भी अनेक प्रयोग, साधन वर्णित हैं। यहां पर केवल सरल-सहज साधनों को ही प्रस्तुत किया गया है। अपराध के साये में गतिमान विश्व को अपराध मुक्त करने के लिए सभी सतत् प्रयास करना आवश्यक है। हम जहां भी हों, मानवता को सुखी बनाने के लिए, अपराधमुक्त समाज बनाने के लिए संकल्प लें। ज्योतिष की सहायता लेकर कुछ विशेष साधनों से समाज को अपराध-मुक्त करने का प्रयास अपने आप में अभिनव प्रयोग होगा। इस पुस्तक के पृष्ठ एक में अपराध-मुक्त समाज के निर्माण में सहायक हों। इसी विधि के साथ इस पुस्तक के माध्यम से आपको प्रेरित करने का कार्य मैं कर रहा हूँ। आइये, आगे बढ़ें। कुछ और शोध, विचार, मनन और कार्य के लिए सदैव प्रयासरत रहें हैं।

□□□

डायमंड पाकेट बुक्स में

शायरी तथा हास्य व्यंग्य की पुस्तकें

हिन्दी उर्दू शायरी

निश्तर ख़ानक़ाही

मेरे लहू की आग	60.00

नूर नबी अब्बासी

दीवाने गालिब *(सम्पूर्ण)* 2 रंग में	60.00

सं. निसार व गिरिराज

आजादी के तराने	10.00
उर्दू की आधुनिक गजलें	25.00

सं. अमर देहलवी

जोश और इकबाल की शायरी	60.00
मीर और दर्द की शायरी	60.00
मजाज और जिगर की शायरी	60.00
जफर और दाग की शायरी	60.00
फेज और अदम की शायरी	60.00
शकील और कतील की शायरी	60.00
अकबर और हफीज की शायरी	60.00
गालिब और असगर की शायरी	60.00
साहिर और कैफी आजमी की शायरी	60.00
शाद और अख्तर की शायरी	60.00

लम्बे साइज में

शेरो शायरी *(शराब और शबाब)*	25.00
महफिल-ए-शेरो शायरी	25.00
रोमांटिक शेरो-शायरी	25.00
बेतहरीन शेरो-शायरी	25.00
बेहतरीन शेरो-शायरी	25.00
रंगीन शेरो-शायरी	25.00
दिलकश शेरो शायरी	25.00
पाकिस्तान की शायरी	25.00
जगजीत चित्रा की गजलें	25.00
मेहंदी हसन की गजलें	25.00
पीनाज मसानी की गजलें	25.00
पंकज उधास की गजलें	25.00
गुलाम अली की गजलें	25.00
अताउल्ला खां की बेहतरीन गजलें	25.00
अनूप जलोटा के भजन और गजलें	25.00

गिरिराज शरण अग्रवाल

हिन्दी गजल यात्रा	20.00

काका हाथरसी

काका काकी के लव लेटर्स	25.00
काका तरंग	40.00
काका की महफिल	40.00
काका की फुलझड़ियां	40.00
काका की चौपाल	40.00
काका की विशिष्ट रचनाएं	15.00
काका के कारतूस	25.00
यार सप्तक	40.00
लूट नीति मंथन करो	40.00
मेरा जीवन-ए-वन	30.00
खिलखिलाहट	50.00
हास्य वर्णमाला	10.00
काका के व्यंग्य बाण	50.00
काका के प्रहसन	25.00
काका के चुटकुले	25.00
काका काकी की नोंक-झोंक	15.00
मीठी-मीठी हंसाइयां	15.00
काका का दरबार	25.00
काका शतक	15.00
जय बोलो बेईमान की	50.00

अशोक चक्रधर

खिड़कियां *(यंत्रस्थ)*	50.00
इसलिए बोड़म जी इसलिए	50.00
ए जी सुनिए	50.00
रंग जमा लो	50.00
तमाशा	50.00
चुटपुटकुले	50.00
भोले भाले	50.00
हंसो और मर जाओ	50.00
सो तो है	50.00
जब रहा न कोई चारा	50.00
जाने क्या टपके	50.00
बोल गप्पे	50.00
संदर्भ अशोक चक्रधर	400.00

बागेश्री चक्रधर

मकरंद ही ठीक है	40.00

सं. डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल

2002 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	70.00
1993 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	20.00
1992 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	20.00
1991 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	20.00
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	15.00
1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	15.00

डायमंड पाकेट बुक्स

X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-110020

पुस्तकें V.P.P. से मंगवाएं, तीन पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाक व्यय फ्री। डाक व्यय प्रति पुस्तक 20/-

फोन : 011-51611861-65, फैक्स : 011-26386124, 51611866.



पं. राधाकृष्ण श्रीमाली

शरीर सर्वांग-लक्षण

डायमंड पाकेट बुक्स

ISBN : 81-7182-400-5
9788171824007
Rs. 60.00
A.H.W. Sameer Series